Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वृहद्—

बूटी प्रचार वैद्यक

—०—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

असली चित्रदार

बड़ा बूटी प्रचार

रचयिता-

पं० रामलग्न पाण्डेय "विशारद"

इसमें प्रामाणिक वैद्यक ग्रन्थों के आधार पर प्रचलित जड़ी बूटियों का स्वरूप (चित्र) उनके गुण दोष एवं उनका प्रयोग वर्णन किया गया है। तथा सौ सवा सौ जड़ी बूटी कंद, मूल, फल, पौधों का चित्र लेकर उनका निदान तथा कई प्रचलित भाषाओं में नाम लिखा गया है साथही अनुभूत चिकित्सा भी लिख दी गई है।

Mohit

* प्रकाशक *

फर्म-बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर,

राजादरवाजा बनारस सिटी।

(इसका सम्पूर्ण हक रक्षित है)

मूल्य १॥)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बूटी प्रचार भाषा की–

विषयानुक्रमणिका ।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
अकरकरा	१	अर्कपुष्प	२२
अखरोट	२	अरनी	२३
अगस्त	३	अरहर	२३
अजवायन	५	अलसी	२५
अडूसा	६	असगंध	२७
अतीस	७	आक	२६
अदरख	६	आम	३२
अनार	८	आँवला	३४
अपराजिता	११	आमिया (आमा) हल्दी	३५
अपामार्ग	१२	आलू	३६
अगर	१३	आलूबुखारा	३७
अतिबला	१३	अफीम	१४४
अन्धाहुली	१४	अमरूद	१४६
अनन्तमूल	१५	आम्रातक	१४७
अनन्नास	१६	आकाशबेल (अमरबेल)	१४६
अग्निदमन	१७	इन्द्र जौ	३८
अंजीर	१७	इन्द्रायन	३६
अंकोल	१८	इमली	४१
अंगूर	१६	इलायची बड़ी	४३
अश्वकर्नशाल	२०	इलायची छोटी	४३
अमलतास	२१	ईख	४५
उशीर (खस)	४६	कनेर घृत सेवन विधि	१५८
उर्ध्वनालिका यंत्र	१७५	कुष्ठ (कूठ या कूट)	६१
एरण्ड (सफेद और लाल)	४७	केला	६२
एकाहिकादि ज्वर की दवा	१७८	केशर	६३
ककड़ी	४६	केसू	६४
ककोड़ा (खेखसा)	५०	कंदरी (लहसन)	६४
कंघी (सहदेई)	५०	खूनी बवासीर की दवा	१७६
कचनार	५१	खजूर	६६

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
कटकरंजा कंजा	५२	गाजर	१६२
कटेरी (भटकटैया)	५३	गर्भयंत्र	१७४
कदम्ब	५४	गौरी यंत्र	१७४
कपास	५४	गज पीपल	६६
कत्था (खैर)	५५	गावजुवाँ	६७
कमलगट्टा	५६	गाँजा	६८
कनेर	१५१	गिलोय	६८
काला जीरा	५७	सेवतीगुलाब	७०
काला धतूरा	५८	गूलर	७१
काला सेमर	५८	गूमा	७१
कुचला	५६	गोरखमुण्डी	७२
कुटकी	६०	गेंदा	७२
कमल	१५३	गोभी	७३
करेला	१५७	गोखरू	७३
करोंदा	१५६	ग्वारपाठा (घी-कुवार)	७४
कालादाना	१६१	घुय्याँ (अरुई)	७५
कवची यंत्र	१७०	घुँघुची	७५
कनेर का घृत	१७७	चमेली	७६
चिरायता	७७	दालचीनी	१६५
चौलाई	७७	दौला यन्त्र	१७२
चन्द्रोदय सेवन का—		धतूरा	८६
नियम	१८०	धनिया	६३
छिरहिटा	७७	नागरमोथा	६४
छुई मुई	७८	नारियल	६५
जँभीरी	७८	नारङ्गी	६६
जमालगोटा	७६	नीबू	६७
ज़मीकन्द	७६	नीम	६८
जवासा	८०	नील	६६
जामुन	८०	नाशपाती	१६६
जायफज	८६	निसोथ	१६८
जेठी मधु (मुलहठी)	८२	पटोल-परवल	१००
ज्वरनाशक दवा	१८०	पान	१००
तज	८३	प्याज	१०२
तिल	८३	पित्तपापड़ा	१०४
तुलसी	८४	पीपल	६०

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय	पृष्ठ
तूत	८५
त्रिफला	८५
तालीस पत्र	१६४
तिमिरादि की दवा	१८०
थूहर	८६
दशमूल	८७
दाख	८७
दुद्धी	८८
दूब	८८
देवदारु	८९
बाँस	११०
बिजौरा	१११
ब्रह्मदंडी	११२
ब्राह्मी-ब्रह्ममंडूकी	११२
बावची=बाकुची	११४
बालछड़=जटामासी	११५
वाराहीकंद=विदारीकंद	११५
बालुका यन्त्र	११५
बाँदा	११६
बोल=बीजाबोल	११७
बेर	११८
बेल	११९
बिरोजे का तेल निकालना	१७९
भाँग	१२०
भिलावा	१२१
भिण्डी	१२२
भुइ आँवला (भद्र आँवला)	१२३
भस्मक रोग की दवा	१८०
महाराष्ट्री	१२४
मर्यादि बेल	१२५
मटर	१२६
मूसाकर्णी	१२६
मालकाँगनी	१२७
मूँगा	१२८

विषय	पृष्ठ
पुनर्नवा-गदहपुर्ना	९१
पुन्नाग	१६६
प्रदर की दवा	१७८
पीली तथा काली कनेर	१५२
फालसा	९३
बनप्सा	१०५
बरगद	१०५
बहेड़ा	१०६
बादाम	१०८
वाय विडंग	११०
मैनफल-मदन	१३०
मोरशिखा	१३१
महाशतावरी	१३२
महुआ	१३२
मृगांक का प्याला बनाना	१७६
मण्डूक पर्णी	११३
रसकपूर	१८१
रसकपूर सेवन का नियम	१८१
रस सिंदूर की क्रिया	१८२
रस सिंदूर सेवन विधि	१८२
राई	१३३
रामफल	१३३
रेंड़ खरबूजा	१३४
लाल मिरचा	१३५
लवण यन्त्र	१७१
विद्याधर यन्त्र	१७३
संखिया का फूल उड़ाना	१७६
सतावर	१३६
सम्हालू	१३७
सिंघाड़ा	१३८
हल्दी	१३९
हर्रे	१४१
हंसराज	१४३
मकोय	१२९

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

श्रीगणेशायनमः ।

आकारादि क्रमवद्ध वृहद्—

बूटीप्रचार—भाषा ।

[अ]

१—अकरकरा ।

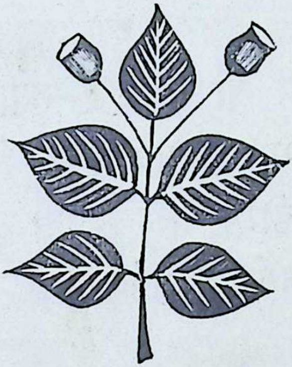

यह एक प्रकार का पौधा है जो लगभग दो बालिश्त के ऊँचा होता है। इसके पत्ते का आकार—प्रकार पान के पत्ते के समान होता है। इसकी जड़ पत्ता और डण्ठी भी औषधि के प्रयोग में आती है।

गुण में यह कटु, तीक्ष्ण, स्निग्धोष्ण, कषैला, रेचक और विषघ्न है।

(१) इसके पत्ते का रस निचोड़ कर सफेद कुष्ठ पर कुछ दिनों तक लगाने से रोग दूर हो जाता है।

(२) इसकी डण्डी सुखा कर महुवे के तेल में मिला-कर लगाने से अर्द्धाङ्गबात लकवा एवं वायुके अनेक रोग दूर होते हैं। नसों का दर्दएवं झिनझिनीभी इससेदूर होती है।

(३) इसकी जड़को पीस कर दाँतों में मलने से दाँत का दर्द दूर होता तथा जीभ में मलने से बच्चों का हकलापन दूर हो जाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(४) अकरकरा के चूर्ण को यदि शहत में मिला कर सुँघाया जाय तो मृगी रोग दूर हो जायगा।

(५) अकरकरा, माजू सिंगरफ, सुहागा और कच्चे हर्र को पाँच पाँच माशा लेकर कूटकर पानी में मिलाकर उसके चार भाग कर डाले। पुनः रात्रि में निश्चिन्त होकर बारी-बारी से उन चारों हिस्सों को तमाखू के समान चिलम पर रख कर रात-भर में पी डाले। स्मरण रहे नींद न आये। प्रातःकाल होने पर ठण्ढे जलसे स्नान करके घी और शोरुवा, गेहूँ की रोटी के साथ खावे। इस औषधि से गरमी बहुत मालूम पड़ेगी और कै भी होगी; परन्तु व्यग्र न होना चाहिये। एकही बार ऐसा करने से भयंकर बाद-फरंग (खुश्क) दूर हो जायगा।

२—अखरोट।

इसे संस्कृत में पीलू, शैलभ, अक्षोट या कर्पराल कहते हैं। हिन्दी—अखरोट। बंगला—अखरोट। मराठी—अक्रोड़। अरबी—जोज। फारसी—किरदगो और चार मग्ज। अंग्रेजी—नट।

यह काबुल में अधिकता से पैदा होने वाले एक वृक्षका फल है। जिसके ऊपर का छिल्का बादाम की तरह कड़ा होता है। इसकी मिंगी बड़ी स्वादिष्ट और पुष्टिकर तथा स्वाद में स्निग्द्ध और कुछ मीठी भी होती है।

इसका वृक्ष बड़ा और पत्ते चौड़े तथा कुछ लम्बे और मोटे होते हैं। इसके फल के ऊपर तीन तरहके छिल्के होते हैं। पहिला हरा और कड़ा होता है जिसका

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२—अखरोट।

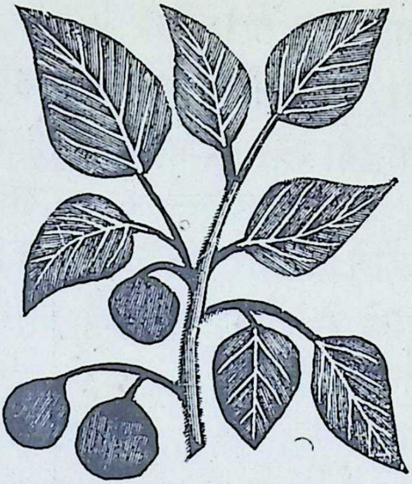

कच्चेपन में स्वाद कषैला और कड़ुवापन लिये होता है और सूखने पर बहुत कड़ा हो जाता है। दूसरा छिल्का जो पहले छिल्के के नीचे होता है, वह भी कठोर होता है परन्तु तीसरा छिल्का बहुत पतला और मिंगी के ऊपर लगा होता है। मिंगी सफेद बादाम और पिस्ते की तरह होती है।

इस फल के चार भाग होते हैं और दो दो भाग परस्पर में एक दूसरे से मिले हुये होते हैं। इनके बीच में एक पतला पर्दा होता है।

यह कफ और पित्तको बढ़ाने वाला, धातु को पुष्ट करने वाला और शरीर बलको शीघ्र बढ़ाकर मस्तिष्क को ताज़ा बनाने वाला है।

(१) अख़रोट की मिंगी भूनकर यदि खाँसी में सेवन की जाय तो खाँसी शीघ्र दूर हो जावे।

३—अगस्त।

इसे संस्कृत में अगस्त्य, बगसेन, मनिपुष्प और मुनिद्रुम भी कहते हैं। हिन्दी में अगस्त्य एवं अंग्रेज़ो में इसे ग्रांडीफ्लोरा कहा जाता है। इसका फूल सुफेद, पीला, लाल और काला—चार प्रकार को, केसूला के समान टेढ़ा होता है। फली लम्बी, पतली और चपटी होती है।

इसके छाल, पत्ते, फूल और गूदा, सभी औषधि

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

के कार्य में आते हैं । गुण इसका शीतल, सुखड़ा, बात पैदा करनेवाला और कड़ुवा होता है ।

(१) अगस्त के फूल को पानी के साथ पीसकर पीने से पित्त, कफ और चौथिया ज्वर दूर हो जाता है ।

(२) अगस्त का रस आँख में डालने से जाला रतौंधी आदि नेत्ररोग दूर होते हैं और इसके पत्तों का रस निचोड़कर नाक में छोड़ने से छींक आती है और मस्तक का भारीपन दूर होता है ।

३—अगस्त ।

(३) अगस्त के पत्तों के क्वाथ से कुल्ला करने पर कंठ और जीभ की बीमारियाँ दूर हो जाती हैं । सूखी खाँसी और कफ में भी यह लाभदायक है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(४) इसका क्वाथ पीने से पेटकी कृमि और विषका भी प्रभाव नष्ट होता है। गरम जल में भिगोकर पीने से जुलाब का काम करता है। छाल सेवन से पाचन शक्ति बढ़ती है।

४—अजवायन।

संस्कृत—यवानिका, उग्रगंधा, ब्रह्मदर्भा, अजमोदिका, दीप्यका, दीप्या। हिन्दी—अजवायन। बंगला—यमानी, योयन। मराठी—ओवा। कर्नाटी—ओंडु। गुजराती—यवान, जवाइन, वोड़ी, अजमों। तेलगू—वासु। तामिल—अमन। फ़ारसी—नान-ख्वाह—अरबी—कूमून, मुलूकी। अंग्रेजी—ओम मप्लेन। लैटिन—टाईकोटीस।

इसका पौंधा दो फीट के लगभग लम्बा होता है। नदी के किनारे और बनों में भी इसकी उपज होती है। इसे अजमोदा भी कहते हैं। इसकी पत्ती और बीज दोनों ही काम में आते हैं। अजवायन प्रायः सभी पाचक चूर्णों में डाली जाती है।

४—अजवायन।

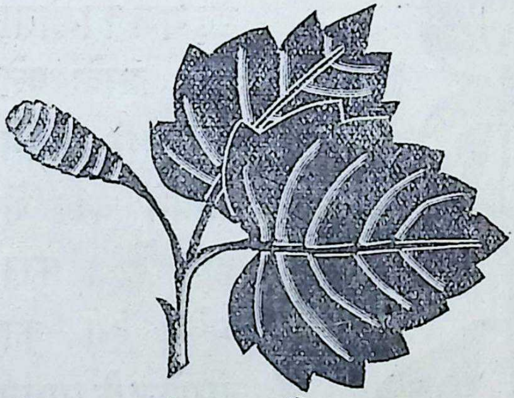

गुण में यह पाचक, रुचिकर्त्ता, तेज, गर्म पित्तकारक तथा शूल, बादी, कफ, उदररोग, अफरा गोला, प्लीहा और पेट के कृमि रोग को दूर करनेवाला है।

(१) सेंधा नमक के साथ अजवायन की फंकी पेट के दर्द को दूर कर देती है।

(२) अजवायन के तेल में पीपरमेंट और कपूर मिलाने से अर्क बन जाता है और जिसके दो या तीन बूँद सेवन से पेट दर्द, हैजा, जाड़े का ज्वर आदि दूर होता है।

 Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(३) इस अर्क को बिच्छू, बर्रें और हड्डे के काटे हुये स्थान पर लगाने से विष दूर होकर दर्द अच्छा हो जाता है।

(४) अजवायन का वही अर्क मालिश करने से शरीर का दर्द दूर हो जाता है।

(५) स्त्रियों का मासिक धर्म रुक जाने पर अजवायन की फंकी ली जाती है।

५—अड़ूसा।

संस्कृत—बासक। बासिका, बासा, मिषङ्माता, सिंहिका, सिंहास्य, बाजिरंत, आटरूष, वृषताम्र और सिंहपर्णी। हिन्दी—अड़ूसा, रूसा, बासा। बंगला—बासक। मराठी—अड़ूसा। कर्नाटकी—आडसोगे। तेलगू—आडासार। गुजराती—अरड़ूसी।

५—अड़ूसा।

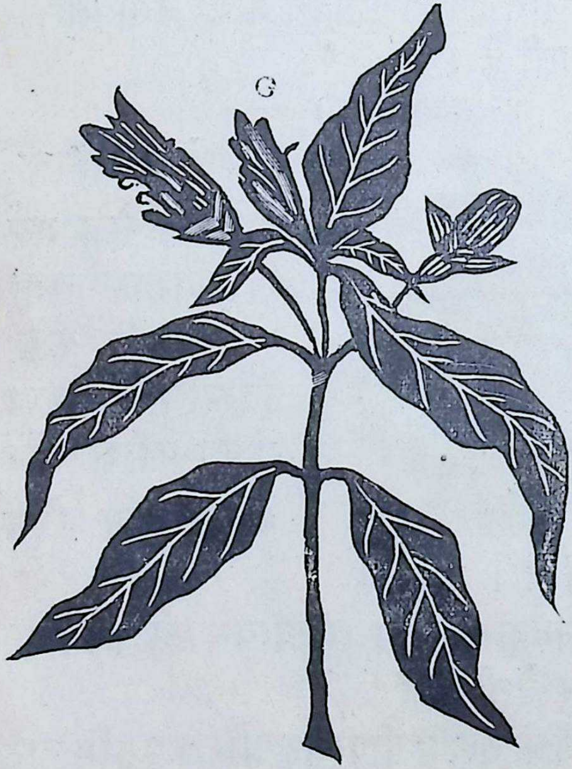

इसका वृक्ष ऊचाई में गज डेढ़ गज का होता है। इसके पत्ते अनीदार आमने सामने चक्कर में होते हैं। फूल सफेद रंग का नागफन के समान और फल मोंगरा की फली के समान होता है। इसमें से पिस्ते के समान चार बीज निकलते हैं और वे चपटे होते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

एक अड़ूसा काले रंग का भी होता है और उसके फूल काले रंग के होते हैं। पीने में बहुत कड़ुवा होता है। इस कारण दस वर्ष से कम आयु वाले को इसे न देना चाहिये।

अड़ूसे का गुण बातकारक, स्वरशोधक, कड़ुवा, कषैला, हल्का और शीतल है। यह कफ को बढ़ाने वाला, रक्त, पित्त, तृषारोग, श्वास खाँसी, ज्वर, वमन, प्रमेह, कोढ़ और क्षय रोग को भी दूर करता तथा दाँतों को दृढ़ करता है।

(१) अड़ूसे की छाल का क्वाथ दो से लेकर तीन औंस तक की मात्रा में देने से बदहज़मी दूर होती है। ज्वर तथा कमज़ोरी में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

(२) प्रसव होने के पश्चात् स्त्रियों को इस वृक्ष की छाल तथा पत्तों का क्वाथ पिलाने से बलमें वृद्धि होती है।

(३) अड़ूसे के पत्तों के क्वाथ से कुल्ला करने पर दाँतों और मुखका रोग दूर होता है।

(४) अड़ूसे के पत्तों के रस अथवा जड़ के क्वाथ में अभ्रक या कांतिसार मिलाकर ६ माशे सेवन करने से तपेदिक, खासी, समलबाई प्रमेह, मूत्राघात, कफ ज्वर आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

(५) अड़ूसे का सत मधु के साथ चाटे तो नकसीर और दमा रोग दूर हो जाते हैं।

६—अतीस।

संस्कृत—विषा, अतिविषा। हिन्दी—अतीस। बंगला—आतइच। मराठी—आतिविष। गुजराती—अतिवखनी कली। कर्नाटकी—अतिविषा। तेलगूं—अतिबासा। लैटिन (एकोनाइटमहे टरोफिलम)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

६—अतीस।

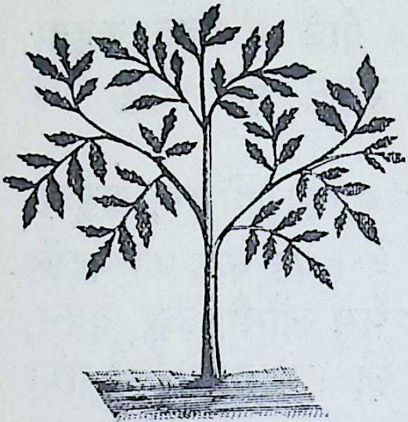

यह क्षुप जाति की औषधि है और तीन तरह की होती है। सफेद, काली और लाल। तीनों रस वीर्य और विपाक में समान ही हैं, परन्तु सफेद जाति की उत्तम होती है। यह गरम कटु, तिक्त, पाचन और दीपन कर्ता है।

जीर्ण—ज्वर, अतिसार, आमवात, विष, खाँसी, वमन और कृमिरोग को दूर करता है। धातु को पुष्ट तथा दस्तों को बन्द करता है। जलोदर और अर्श को भी दूर करता है। इसका चूर्ण ज्वर की पारी बन्द करने में कुनाइन के समान है।

अतीस—पीपलगज, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, मिर्च सम्भालू, इलायची अजमोद, सरसों, पीठ सिकी हींग, भारंगी बकायन, इन्द्रयव, जीरा, मूर्वा, कुटकी और वायविडंग, इनका दो टंक चूर्ण उष्ण जल के साथ देने से गुल्म, शूल और वात-कफ के समस्त रोग दूर हो जाते हैं।

७—अदरख।

संस्कृत—आर्द्रक, शृङ्गवेर कटुभद्रा आर्द्रिका। हिन्दी—अदरख—आदी। बंगला—आँदा। फारसी—जंजबीलनर। मराठी—आलें। अरबी—जंजबो—लरतब। कर्नाटी-अल्ला। अंग्रेजी जिंजर। गुजराती-आद्। लैटिन-जिंजीवर आफिसिनेल।

यह गुल्म जाति की बनस्पति का कन्द है। रेतीली ज़मीन में और जलके पास बहुत होता है। इसके पत्ते इलायची के पत्तों के समान होते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इसका स्वाद कटु तथा गुण तीक्ष्ण, रुक्ष, भेदक भारी, अग्नि-दीपक वीर्य उष्ण, पाक, मीठा एवं बात कफ का नाशक है। जितने गुण सोंठ में हैं उतने अदरख में भी पाये जाते हैं।

१—मन्दाग्नि की औषधि।

अदरक और सेंधानमक की चटनी बना कर नित्य भोजन के पूर्व सेवन कर लेना चाहिये। यह अग्नि को दीपन, रुचि को प्रकट—एवं जिह्वा और कंठ का शोधन करती है। इस प्रकार यह भूख लाती और कफ को शमन कर मन्दाग्नि को नष्ट कर देती है।

कफ और शीतल प्रकृतिवालों को इसका मुरब्बा बहुत लाभदायक है।

(२) अदरक के रस में मधु मिला कर चटावे तो श्वास नष्ट हो जाये।

८—अनार।

संस्कृत-दाड़िम, करक, दन्तबीज और लोहित पुष्पक। हिन्दी-अनार। मराठी-डालिम्ब। गुजराती-दाड्यम। कर्नाटी-दालिम्ब। तेलगू-मादलई चेटेड्डी। उड़िया-दालिम्ब। अरबी-रूम्मान। अंग्रेजी-पोमग्रेनेट।

इसका फल तीन प्रकार का होता है। मीठा, खटमिट्ठा और केवल खट्टा। मीठा अनार त्रिदोष, स्वास, दाहज्वर, हृदयरोग, कंठरोग तथा मुख की गंध को नष्ट करता है। यह तृप्तिकर्ता भी कहा गया है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शुक्रकर्ता, हल्का, कषाय, ग्राही, स्निग्ध, स्मरण-शक्ति वर्धक और बलकारक भी है।

खटमिट्ठा अनार—अग्निदीप्तकर, रोचक, कुछ पित्त पैदा करने वाला और लघु होता है।

केवल खट्टा-पित्तकारी और बात कफ नाशक है।

(१) पेशाब में रुधिर की औषधि।

जिसके पेशाब में रुधिर जाता हो, उसे चाहिये कि मीठे अनार की जड़ और अंजीर की जड़ दोनों को पीस कर शरबत अनार के साथ पीवे।

(२) रुधिर थूकने की औषधि।

मीठे कच्चे अनार को लेकर पानी में पीस कर उसमें थोड़ी सी शक्कर मिला कर पीना चाहिये।

(३) शीतल प्रयोग में अनार के रस में केसर मिला कर दिया जाता है।

(४) अँतड़ी के रोग में (यदि कब्जियत हो तो) अनार के फल की और फूल, लौंग, तज, धनियाँ काली मिर्च के साथ मिला कर देना चाहिये।

(५) इसके जड़ की छाल बहुत ग्राही है तथा पेट में होनेवाले चपटे लम्बे कीड़े (टेप-वर्म) के लिये बहुत उत्तम अनुभूत औषधि है! इस रोग में देने के लिये ५ तोला ताज़ी छाल, दो सेर जलमें डाल कर अग्नि पर चुरावे, जब एक सेर पानी बाकी रहे तब उतार लेवे और शीतल होने पर इसमें से एक २ प्याला आध-आध घड़ी में ज़ब तक सब समाप्त न हो जाय पीता रहे। कई

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बार इस क्वाथ के पीने से पेट से रद्द होकर निकलने की सी भ्रांति होती है। परन्तु थोड़ी देर में ही पेट के तमाम कीड़े निकल जाते हैं।

(६) दस्त की बीमारी में अनार की छाल के क्वाथ में थोड़ी सी अफीम डाल देने से बहुत उत्तम असर करता है।

(७) पेट के पुराने मरोड़ों के रोग में अनार के फल की छाल लौंग के साथ औटा कर देने से अधिक गुण करती है।

अनार वमन नाशक तथा रुचि उत्पन्न करके शरीर में उत्तेजना देने वाला है। यह बात नाशक मूत्रदोषहर और तृषानाशक है।

९-अपराजिता।

संस्कृत-अस्फोता, गिरकर्णी, विष्णुक्रांता और अपराजिता। हिन्दी-सफेद और नीली कोयल। बंगला-श्वेत और नील अपराजिता। मराठी-गोकर्णी के बीज, सुपनी। कर्नाटी-विष्णुक्राके। गुजराती-गरणी। तेलगू-भीलगंठुरा। लैटिन-कैलिटोरिया टरेन्स्या।

यह लता जाति का एक पौधा है। इसके फूल दो तरह के-सफेद और नीले होते हैं। यह कड़वी स्मरण शक्ति को बढ़ानेवाली, शीतल, कंठकी शुद्धि कर्ता, दृष्टि को प्रसन्नता कारक, त्रिदोष नाशक, कषेली, पचने में कटु, बुद्धिदाता और विष नाशक है।

यह कुष्ट, शूल, आम और सोथ तथा व्रण रोग को दूर करती है।

१-बवासीर की दो औषधें।

(१) विष्णुक्रान्ता २ टंक। काली मिर्च २ टंक और १ माशे भांग को जल में घोट कर नित्य सेवन करने से बवासीर का रोग शांत हो जायगा!

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(२) शीशे की गोली गौ के घृत में पीस कर १० दिन तक मसों पर लगाने से बवासीर के मसे कट कर गिर पड़ेंगे।

१०—अपामार्ग ओंगा।

संस्कृत—अपामार्ग, शिखरी, अधओंगा शल्य, मयूरक, मर्कटी, दुर्ग्रहा, और खरमंजरी। हिन्दी—ओंगा, चिरचिरा, लटजीरा। मारवाड़ी—सुफेद आँधी, झाड़ी। बँगला—आँपा। मराठी—भवाड़ा। कर्नाटी—गुत्तरणे। गुजराती—अघेड़ो। तेलगू—दुच्चीणिके। फारसी—ख़रकासगोता। अंगरेजी—चेल-फ्लावर। लैटिन—ऐकयीरेंथी ऐस्पी।

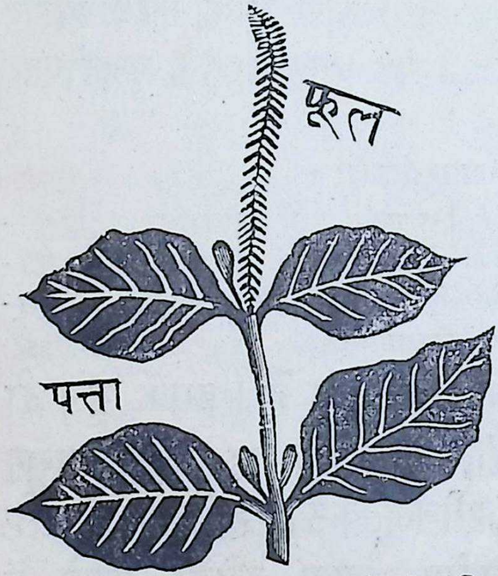

यह क्षुप जाति की बनस्पति है और जंगलों में बहुत होती है। इसके पत्ते चौलाई के शाक के समान होते हैं। फूल और फल एक लम्बी डण्डी में लगे हुये होते हैं। जो काँटे के समान अनीदार होते हैं। यह कपड़े में चिपट जाते हैं।

यह दस्तावर, तीक्ष्ण, दीपन, कड़वा, चरपरा, पाचक और रोचक है।

इसका प्रयोग बमन, कफ मेदके रोग, वायु, हृदरोग और अपची रोग में किया जाता है।

इसकी जड़ डाल पत्ते और फूल सभी काम में लाये जाते हैं। मात्रा चार माशे की है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

११—अगर ।

इसे संस्कृत, हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती, कर्नाटकी और तामिली भाषा में भी अगर तथा अंगरेज़ो में इगलवुट। लैटिन में एक्वीलोरिया, अरबी में उदगरको और फारसी में कशवबेवा कहते हैं।

अगर ।

भावप्रकाश का मत है कि यह बड़ा मंगलकारी है। इसका बुरादा और लकड़ी सुगन्धित होती है। इस कारण इसकी धूप दी जाती है। अक्सर यह लेप के भी प्रयोग में आता है। नेत्र रोग और कर्ण रोग में भी यह अत्यन्त लाभदायक है। कोढ़, खाज और सुगन्धित औषधि में भी इसका अधिक प्रयोग किया जाता है।

यह गरम, चरपरी, कड़वी, चमड़े को लाभदायक पित्तजनक, हल्की, शीत, बात और कफ नाशक है।

(१) अगर गिलोय,इन्द्रयव, नीम की छाल परोल, कुटकी—सोंठ, चन्दन, नागरमोथा और पीपल को समान भाग लेकर चूर्ण बना कर ४ मा० प्रतिदिन अष्टावशेष जल के संयोग से पिलाने से कफ, पित्त, ज्वर खाँसी, दाह, अरुचि और हृदय की पीड़ा दूर हो जाती है।

१२—अतिबला ।

अतिबला नाम संस्कृत का है। हिन्दी में—कंघी कंगही। मराठी—काँसुली। गुजराती—खवास्य। कर्नाटकी—मुल्लु दुरु वे। अंगरेजी में इन्डियनमेलो और लौटिन भाषा में एव्युटिलन इंडिकम कहते हैं।

इसका वृक्ष दो ढाई हाथ लम्बा होता है और फूल पीला तथा फल चक्र के समान और गोल होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इसके फल को तोड़कर बालक प्रायः छापा छापते और खेलते हैं। इसका बीज खिरैंटी के समान होता है।

(१) कंघी की जड़ दूध और मिश्री के साथ पीसकर सेवन करने से प्रमेह और सूजाक की बीमारी दूर हो जाती है।

१२—अतिबला कंघी।

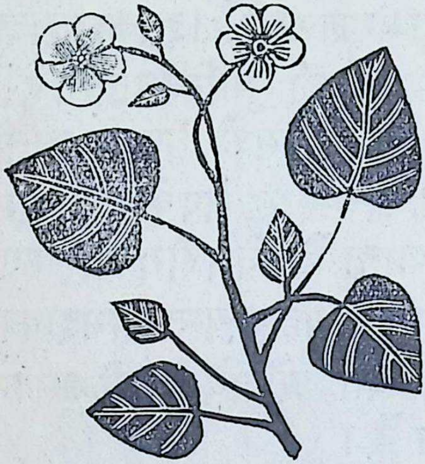

(२) इसकी पत्ती को काली मिर्च के साथ पीसकर पीने से बवासीर का रोग नष्ट हो जाता है। इसकी पत्तियों की टिकिया बना कर अलसी के तेल में छः माशा मोम और छः माशा गूगल डालकर जलावे। जब तेल का एक हिस्सा जल जाये तब उतार कर उनका मलहम बना ले। यह मलहम व्रण और नासूर रोग के लिये अत्यन्त लाभदायक है।

गुणमें यह कड़वी, चरपरी, मधुर, अम्ल, त्रिदोष नाशक, बात, कृमिदाह, तृषा विषवमन और ज्वर को दूर करने वाली है।

१३—अन्धाहुली।

इसे संस्कृत में—अन्धाहुली। हिन्दी में—अन्धाहुली। बंगला में चोरहुली। मराठी में पाचरी और गुजराती में उनको फुली कहते हैं।

यह नेत्रों को हितकारी और मूढ़गर्भ को आकर्षन करने वाली है। इसके डंठल कुछ लाल, पत्ते लम्बे, गोल और रोमयुक्त होते हैं। फल का रंग नीला और नीचे की ओर कुछ मुड़ा होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(१) अन्धाहुली की जड़, सोंठ और मिर्च, जीरे में मिलाकर सेवन करने से एक मास में स्वाँस का रोग दूर हो जाता है। नमक बिल्कुल नहीं खाना चाहिये। केवल बिना नमक की मूँग की दाल और रोटी खाना चाहिये।

१४—अनन्तमूल।

संस्कृत—सारिवा। हिन्दी—गोरीसर सालसा। बँगला—अनन्तमूल। मराठी—श्वेत उपलसरी। गुजराती—कपुरी। कर्नाटी—सारिवा। तेलगू—नीलतिग। उत्कल—गुपापानमूल। अंगरेजी—इन्डियन सार्सापरीला। लैटिन—हेमीडेसमेस इन्डिकस।

अनन्तमूल।

यह शीतल, मधुर, १ शुक्र-जनक, भारी, कड़वी और सुगन्धित होती है। इसका सेवन करने से शरीर की दुर्गन्धि, मन्दाग्नि, स्वाँस, खाँसी, अरुचि, आम, त्रिदोष, विष, रुधिरविकार, प्रदर रोग, कफ, अतिसार, तृषा, दाह, रक्त, पित्त और बात नष्ट हो जाता है।

अनन्तमूल दो प्रकार की काली और सुफेद होती है। पंजाब में कालका के समीप इसकी अधिक उपज होती है। पत्ते अनार के समान होते हैं और उनमें सफेद छींटे पड़े होते हैं। इसकी बेलि और मुख्यतः जड़ से कपूर की सी सुगन्धि आती है। इसकी जड़को सार्सापरीला भी कहते हैं। रुधिर विकार को दूर करने में इससें बढ़ कर दूसरी औषधि नहीं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१५-अनन्नास ।

संस्कृत-अनन्नास । हिन्दी-अनन्नास । मराठी—अननस । गुजराती—अननस । अंग्रेजी—पाइनएप्पल । लैटिन—अननासा सेटिवा ।

अनन्नास ।

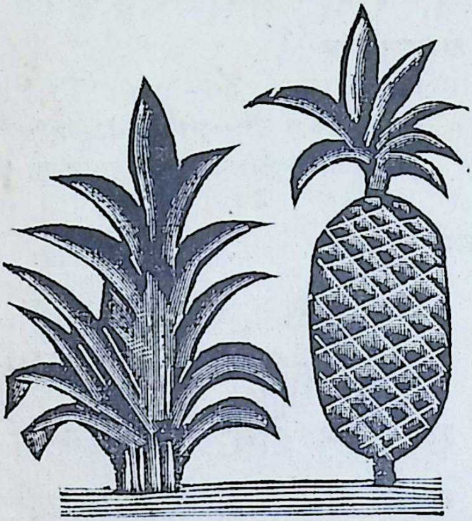

यह रुचिकारक, हृदय को हितकारी. भारी, कफ, पित्तकारक अन्नरोचक तथा श्रम और क्रिमनाशक है। पक्का अनन्नास स्वादिष्ट पित्तकारक तथा रसविकार और वात विकार को नष्ट करने वाला है ।

(१) धातु रोगी और बात रोगी को अनन्नास सेवन करना चाहिये । इसके सेवन से शरीर बलवान होगा और मस्तिष्क की क्षीणता नष्ट होकर श्रम दूर हो जायगा ।

(२) अनन्नास का रस १ छटाँक, एक तोले सोंठ के चूर्ण के साथ घी में भुनकर प्रतिदिन प्रातः और सायं सेने से बादी का रोग नष्ट हो जाता है ।

१६-अग्नि दमन ।

संस्कृत-अग्निदमन, दमनक । हिन्दी—दौना, दवना । बंगला—दोन, दना । मराठी-दवना, रानदवना । गुजराती-डमरो । कर्नाटी-दवना । अंग्रेजी-वर्मुबुड । लैटिन-आर्टिमिस्या इन्डिका ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अग्नि दमन।

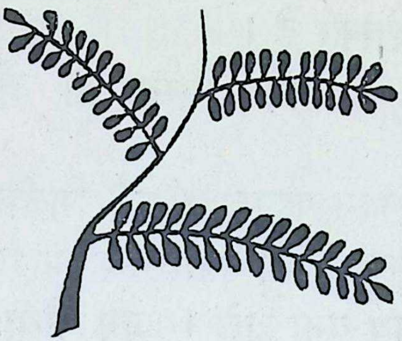

गुण में यह कषैला, कड़वा, शीतल, चरपरा, द्वन्द्वज दोष त्रिदोष, विष और विष्फोटक रोग को शांत करने वाला है। इसके अतिरिक्त और भी गुण हैं।

आचार्यों का मत है कि यह अग्नि दीपक, रुचि-कारक, हृदय से हितकारी, बात, कफ, गुल्म और प्लीहा रोग को शीघ्र नष्ट करता है। कुष्ट, कंडू और श्वेत रोगी के लिये भी यह अत्यन्त लाभप्रद है।

१७—अञ्जीर।

अंजीर नाम हिन्दी का है। संस्कृत में इसे मंजुल। बंगला में आँजीर। मराठी में अंजीर। गुजराती—अंजरि। कर्नाटकी—येडिपंड़। अंगरेजी-फिग, लैटिन में फाइक्सेरिका और फारसी में इसे तीन कहते हैं।

अंजीर।

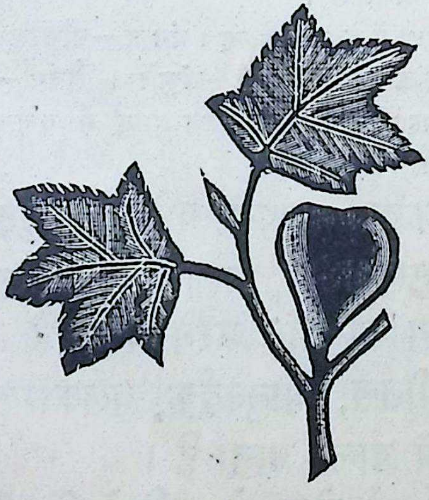

इसका वृक्ष काबुल में अधिक होता है। बल्कि यों कहा जाय कि अंजीर की उपज काबुल में ही होती है—यह बहुत उपयुक्त है।

(१) शिर दर्द करने वालें को अंजीर को नित्य सेवन करना चाहिये।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(२) जिसको रक्त पित्त का रोग हो उसे अंजीर का मुरब्बा सेवन करना हितकर है।

(३) जिसके नाक से रुधिर गिरता हो उसे अंजीर खाना चाहिये।

(४) अंजीर, लाल चंदन, पद्माख, धनियाँ, गिलोय नीम की छाल इन छः वस्तुओं को चार-चार माशा लेकर डेढ़ पाव जल में क्वाथ बना डाले। जब चौथाई जल रह जाय तब उसमें एक तोला मिश्री डाल कर प्रातःकाल पीले तो कैसा भी बात और पित्त का ज्वर हो तो शांत हो जायगा। यह अचूक औषधि है। गुण में यह भारी, शीतल, मीठी, बात रक्त और पित्त को नाश करने वाली, रुचिकर पाचक, विरेचक तथा कफ और आमवात को दूर करने वाली है। रुधिर विकार को भी यह शीघ्र नष्ट करती है।

१८-अंकोल।

संस्कृत—में इसे अंकोर। हिन्दी में ढेरा, अँकोल्ह। बंगला—आँकोड। मराठी—आंकोली। गुजराती—अंकोल्य। कर्नाटी—अंकुले। तैलंगी—उडोके और अंगरेजी में ट्रोलोक सल्पुरिटोस तथा लैटिन भाषा में एलेन-जिथम हेक्सा पटैलम कहा जाता है।

गुण में यह कषैला, कड़वा, चरपरा, पारे को शुद्ध करने वाली, दस्तावर, तीक्ष्ण, गरम, रूखा, कफ, पित्त दाह, क्षय और रुधिर रोग को शांत करने वाला है।

अंकोल का बीज शीतल, धातुवर्द्धक, बलकारक और पौष्टिक औषधियों में डाला जाता है।

(१) जिसके पेट में दर्द होता हो, कृमिरोगी हो

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अथवा जिसे कुत्ते और बिल्ली ने काट खाया हो उसके लिये अंकोल का रस पीना लाभदायक है ।

१९-अंगूर ।

भिन्न २ भाषाओं में इसका भी भिन्न-भिन्न नाम है। संस्कृत में इसे द्राक्षा। हिन्दी में अंगूर, किसमिस और दाख कहते हैं। बंगला में किसमिस मनेक्का, आंगुर। माराठी-बेदाणा, किसमिस । गुजराती-धराखु, किसमिस । कर्नाटी-चिकुद्राक्ष । तेलगू-द्राक्षा । अंगरेज़ी-ग्रेप राफिन्स । लैटिन-वाइटिन्स वेनिफेरा और फारसी में अंगूर, मुनक्का तथा अरबी भाषा में किसमिस और हुबुस जबीब कहते हैं।

पक्की दाख-दस्तावर, शीतल, नेत्रों को लाभदायक, स्वरशोधक, वीर्यवर्द्धक और मोह, दाह को हरण करने वाली है। परन्तु कच्ची दाख कटु, उष्ण, विषद और रक्त पित्त-कारक है। किन्तु मध्यम अवस्था की दाख खट्टी, रुचिकारक और अग्निवर्द्धक होती है।

अंगूर कई प्रकार का होता है। कोई लाल रंगका और कोई काला भी होता है और कोई पहाड़ी अंगूर के नामसे भी पुकारा जाता है। यह अधिकतर काबुल में उत्पन्न होता है। पर कहीं-कहीं देशमें भी इसका होना पाया जाता है। देशी अंगूर के पत्ते हाथ के पंजे के आकार के होते हैं। फल गुच्छों में लगते हैं।

सब प्रकार के मेवों में अंगूर उत्तम है। धातुवर्द्धक होते हुये भी यह प्यास और वमन को नष्ट करता तथा सरस मधुर और वीर्य-वर्द्धक है। बात, पित्त और कफ के ज्वर तथा मूर्च्छा और रुधिर रोग को नाश करने वाला है।

[१] दाख, हर्र की छाल और मिश्री को पीस कर मधुके साथ दो टंक प्रमाण की गोली बनाकर यदि

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जल के साथ नित्य एक गोली सेवन की जाय तो अजीर्ण मात्र रोग नष्ट हो जायँ।

(२) दाख अथवा महुआ, रक्त चन्दन, दूर्वा, आँवला, कमलनाल, खस, नेत्रबाला और पद्माख को ठंडे जल में पीसकर लेप करने से पित्तव्रण की सूजन उतर जाती है।

२०—अश्वकर्नशाल।

संस्कृत—शाल, अश्वकर्न। हिन्दी—सखुआ या साखू। बंगला—शालगाछ। मराठी—रालेचा वृक्ष। कर्नाटो—सज्जर दामर। तामिली—कुंगिलियम। अंगरेजी शाल ट्री। लैटिन—शोरिया रोबष्टा।

इसके वृक्ष बड़े होते हैं। पत्तियाँ लगभग छः अंगुल चौड़ी और एक बालिश्त तक लम्बी और मुलायम होती हैं। इसके अश्वकर्ण, अज-कर्ण कई भेद हैं। आँव पड़ने पर इसका सेवन बहुत लाभ दायक है। इसके बहुत बड़े बड़े जंगल होते हैं।

यह चरपरा, गरम, कषैला, कटु और तिक्त भी होता है। रक्त, पित्त, कुष्ठ और विष्फोटक आदि रोगों में बहुत लाभप्रद है। इससे बात रोग भी नष्ट होता है।

शाल का दूसरा जोड़ शीशम भी है। इसकी लकड़ियाँ बड़े कामकी होती हैं। पत्ते इसके अधिक से अधिक दो इंच चौड़े और इतने ही लम्बे गोल और कुछ नुकीले होते हैं।

(१) शीशम के फूल और पत्ते दोनों ही औषधि के काम में आते हैं। शीशम का फूल ३ तो० और पत्ते ३ तो०। काली मिर्च ११ नग, सुफेद इलायची ३

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नग और मिश्री १॥ तो० सबको एक में बट कर ७ दिन पीने से स्त्री का लाल व सुफेद प्रदर तथा धातु की क्षीणता नष्ट हो जाती है ।

२१—अमलतास ।

संस्कृत-राजवृक्ष, चतुरंगुल, कर्णिकार, दीर्घफल, स्वर्णभूषण । हिन्दी-घनबहेरा, सोनालु, अमलतास, किरबारों । बंगला-सोनालू । मराठी-बाहवा । गुजराती-बारयालो । कर्नाटी-हेग्गके । तेलगू-रेल्लाकामा । फारसी-खियम् शंबर । लैटिन-कैशीया, फिस्चुला । अंगरेजी-पडिंग पाइप ट्री ।

अमलतास ।

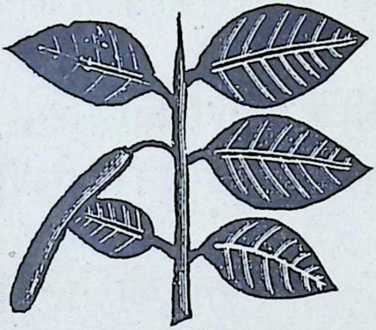

अमलतास का गूदा प्रयोग में लाया जाता है । इसके वृक्ष बड़े २ होते हैं । फूल हल्दी के समान पीला और पाँच पखड़ियों का होता है ।

यह भारी, शीतल और मिष्ट, कोष्ठस्थ मलादि को ढीला करने वाला, ज्वर, हृदयरोग, रक्त पित्त, उर्द्धगत वायु और थूल का नाशक है ।

(१) अमलतास की फली कोठे के मलादि को शिथिल करती है । यह रुचिकारी,कुष्ट, पित्त और कफ़-नाशक तथा ज्वर में सर्वस्व पथ्य है । इसके द्वारा कोठे की शुद्धि अद्भुत प्रकार से होती है ।

चर्म रोग में इसके पत्तों का मालिश करने से बहुत लाभ होता है ।

(३) अमलतास की फली से जुलाब लेना चाहिये ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फली को थोड़ा गरम कर उसका गूदा निकाल थोड़े बादाम रोगन के साथ मिलाने से छाती का दर्द दूर हो जाता है। रुधिर की कमी बहुत कम हो जाती है और इसका असर अत्यन्त नाजुक होने से बालक तथा गर्भवती स्त्रियों के लिये भी हितकारी है।

(४) एकत्र हुए पित्त को दूर करने के लिये इसको इमली के साथ पिलाना चाहिये।

(५) संधिबात की पीड़ा को दूर करने के लिये इसका रस चुपड़ना चाहिये।

(६) अमलतास की फली के ऊपर की छाल केसर, मिश्री और गुलाब जल के साथ पीसकर देने से स्त्रियों को तुरन्त प्रसव होगा।

(७) अमलतास की छाल और पत्तों को तेल में पीसकर फोड़े के ऊपर लगाने से फोड़ा अच्छा हो जाता है।

२२–अर्क पुष्प ।

संस्कृत–अर्कपुष्पी। क्रूरकर्मा। पयस्या,जलकामुका। हिन्दी–अर्कपुष्पी। बंगला–बडत्तीरुई। मराठी–सूर्य फूल वल्ली। गुजराती–सूरजमुखी।

अर्क पुष्प ।

यह कृमि, कफ, प्रमेह और पित्त रोग को नष्ट करने वाली है। इसका सर्वाङ्ग प्रयोग में लाया जाता है।

(१) अर्क पुष्प के मध्य की फूली और लौंग को पीस कर १ रत्ती प्रमाण की गोली बना कर नित्य खाने से केवल खाँसी भी दूर हो जाती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२३–अरनी।

संस्कृत–अग्निमन्थ, जयजया, श्रीपर्णी, जयंती, नादेयी। हिन्दी–अरनी, अगेयू, गणियरी। मराठी–थोर, एरङ्, राँकला, लरवेल। गुजराती–अरणी। तेलगू–नीली चट्ट। कर्नाटी—नरवल, ऐरण। ताभिल—नेलीचेट। लैटिन—क्लोरोडेन्ड्रम।

अरनी।

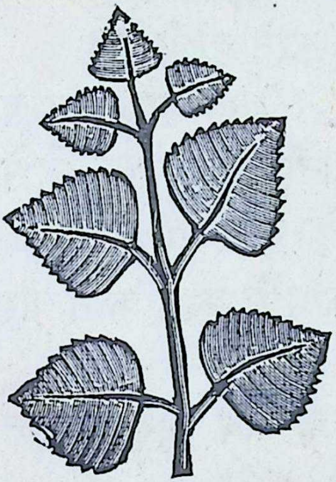

इसके पत्ते आमने सामने अनीदार होते हैं। इसका फूल सफेद पाँच पंखड़ी का बाहर के आच्छादन से ढँका हुआ जिसमें पाँच पुरुष केसर और एक स्त्री केसर होता है। इसके फल बहुत छोटे छोटे और गोल होते हैं।

अरणी उष्णवीर्य, चरपरी, कड़वी, कषैली, मधुर, अग्निवर्द्धक, कफनाशक और वातनाशक है। इसके प्रयोग से सूजन और पाण्डुरोग दूर होता है।

(१) अरनी, शालपर्णी, पृष्टपर्णी, दोनों प्रकार की कटाई, गोखरू, बेल की गिरी, आलू, कुम्मेर और पाठे की क्वाथ १० दिन पिलाने से बात और कफ का ज्वर नष्ट हो जाता है।

२४–अरहर।

संस्कृत–आढकी, तुम्बरी और शणपुष्पिका। हिन्दी–अरहर, रहर। मराठी–तुरी। गुजराती–तूर, नादाल। कर्नाटी–कठला कट्ठ, तोगरी। तेलगू–कादलु। फारसी–शाखुल। अंगरेजी–पोजिन पी।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अरहर।

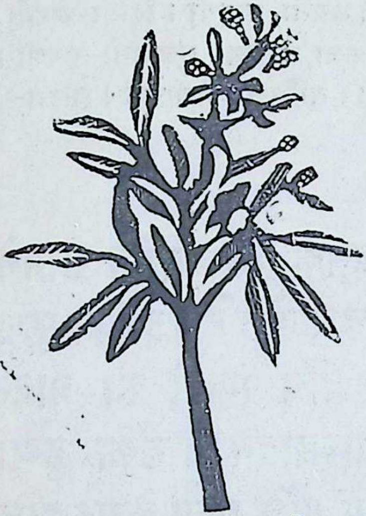

यह कषैली, रुक्ष. मधुर शीतल, हल्की, ग्राहिणी वात-कर्ता, व्रणकारक, पित्त, कफ और रुधिर के विकारों को शांत करने वाली है।

(१) अरहर की दाल का पानी धोकर पिला देने से भाँग का नशा उतर जाता है।

(२) अरहर के पत्तों के क्वाथ से कुल्ला करने पर दाँतों का दर्द दूर हो जाता है।

(३) अरहर की दाल घी के साथ खाने से वात नष्ट हो जाता है।

(४) इसका लेप करने से कफ और पित्त का नाश होता है।

(५) भूनी हुई अरहर की दाल का चूर्ण शरीर में मालिश करने से त्रिदोष शांत हो जाता है।

(६) अरहर के पत्तों का रस पिलाने से अफीम का नशा दूर होता है।

(७) यदि मुँह पक गया हो अथवा निनावाँ हो गया हो तो आधे तोले अरहर का पत्ता मुँह में लेकर चबाने से अथवा इसके पत्तों के क्वाथ का कुल्ला करने से तत्काल लाभ पहुँचता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(८) अरहर के पत्तों के रस में दूब का रस मिला कर सूँघने से अधकपारी दूर होती है।

(९) यदि नाक या मुँह से खून आता हो तो इसके पत्तों के एक तोले रस में तीन तोला घी मिला कर पीने से वह बन्द हो जाता है।

(१०) साँप काटने पर अरहर की जड़ को चबाने से विष उतर जाता है।

(११) अरहर की जड़ को यदि पानी में घिस कर आँखों में लगाया जाय तो आँख का जाला दूर हो जाता है।

(१२) गौ का घी इक्कीस बार धोकर अरहर के पत्तों के रसमें मिलाकर नासूर में लगाने से लाभ होता है।

(१३) इसकी छाल या पत्तों की राख दही में मिला कर लगाने से खाज दूर होती है।

(१४) अरहर की भूसी चिलम पर रख कर पीने से हिचकी बन्द होती है।

(१५) अरहर की उबाली हुई दाल का अंजन लगाने से मूर्छा दूर होती है।

[१६] अरहर की कली और पत्तों को पीस कर गुलगुला करके स्तनों पर लेप करने से स्तनों से दूध का टपकना बन्द हो जाता है।

२५–अलसी।

संस्कृत–अतसी, नीलपुष्पी, पार्वती, उमा और शुभा। हिन्दी–अलसी, तीसी, मसीना। मरहठी–जवस। कर्नाटकी–असमे। तेलङ्गी–नकलघ गस्लि चेट्टू। अरबी–बुजरू सूकतान। फारसी–तुख्मेकतान। अंग्रेजी–लिन्सीड।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अलसी ।

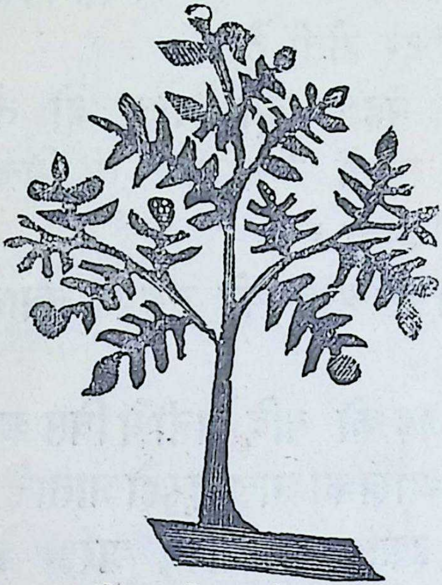

यह मधुर, तिक्त, स्निग्ध, पाक के समय कटु, भारी, गरम, दृष्टि-शक्ति को बिगाड़ने वाली, शुक्र और वादी नाशक तथा कफ और पित्त को भी नाश करने वाली है। धातुको गाढ़ा करती और पथरी को तोड़ती है। शोथ को शांत करने वाली और मूर्छा रोग को शांत कर देती है।

[१] अरण्ड के तेल में इसका तेल बराबर मिला कर काँसे की थाली में डाल कर काँसे की कटोरी से खूब रगड़े और उसी का अंजन लगाये तो आँखों का झोप जाता रहता है।

[२] अलसी की पिट्ठी करके दूध में पकावे और थोड़ी हल्दी डालदे। अथवा पानी में पीस कर थोड़ी हल्दी डाल कर पकावे। गाढ़ी होने पर फोड़े या गाँठ पर लगा कर ऊपर से पान बाँध दे। पाँच सात बार इस प्रकार करने से फोड़ा शीघ्र पक जायेगा।

[३] मूत्र दाह में अलसी का क्वाथ पिलाना चाहिये। इसकी विधि यह है कि एक छटांक अलसी को पाव भर पानी में औंटा कर छान ले जब ऊपर निर्मल जल रह

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जाये तो उसे पीवे। जेठी मधु के साथ मिलाकर इसकी चाय भी पीयी जाती है।

[४] अलसी का सर्वाङ्ग जला कर राख करके उसको तेल में मिलाकर लगाने से चर्म--रोग दूर होता है।

(५) अलसी का चूर्ण मिश्री मिलाकर फाँकने से वीर्य की वृद्धि होती है। और फूलों को शहद के साथ चाटने से हृदय का बल बढ़ता है।

(६) बेलगिरी के चूर्ण की फंकी देकर ऊपर से अलसी के पत्तों का काढ़ा पिलाने से अतिसार रोग नष्ट हो जाता है।

(७) अलसी की राख को गुदा के घाव पर बुर्कने से घाव अच्छा हो जाता है।

(८) अलसी के बीजों का क्वाथ पिलाने से मूत्र-कृच्छ्र और मूत्रनली की जलन शान्त हो जाती है।

(९) अलसी को प्याज के रस में पकाकर छानले, जब कान दर्द करे और उसमें सूजन हो तब कान में डाले, दर्द दूर हो जायगा।

(१०) अलसी को पानी में औटा कर शरीर में लगा देने से कफ-ज्वर शान्त हो जाता है।

२६-असगंध।

असगंध को संस्कृत में वाराहकरणी, पुष्टिका, बलका, कुष्टगंधिनी और अश्वगंधा कहते हैं। हिन्दी में असगन्ध, नागौरी। मराठी में असगंध्र। गुजराती में अन्सोद। तेलगू में पिल्ली और अंगरेजी में बिन्टर-चेरी कहा जाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

असगंध।

असगंध बलकारक, रसायन, तिक्त, कषैला, गरम और शुक्रकर्ता है। इसके द्वारा वादी, कफ, सफेदकुष्ट, सूजन आमबात, व्रण, खाँसी और श्वास रोग नष्ट हो जाते हैं।

[१] असगंध और पीपल का काढ़ा तैयार कर उसमें खाँड, घी और शहद मिलाकर पीने से धातुक्षीणता नष्ट हो जाती है। पथ्य दूध और भात।

[२] असगंध ३ तोला, गौका दूध १ सेर औंटा कर उसमें मिश्री डालकर १५ दिन तक पीने से शरीर की कांति बढ़ जाती है।

[३] क्षय रोगी के लिये असगंध, गिलोय, सितावर दशमूल, खरेंटी और अरूसे की जड़ का क्वाथ लाभदायक है।

[४] असगन्ध, निर्गुन्डी, कटेरी और पीपल को कूट कर घी में मिलाकर गुदा में धूनी देने से बवासीर की पीड़ा जाती रहती है।

[५] असगंध और बिधारे के छ माशे चूर्ण को नित्य सेवन करने से शरीर में अधिक बल उत्पन्न होता है।

(६) असगंध की छाल को तेल में पीस कर लगाने से नहरुआ रोग नष्ट होते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(७) असगंध और खाँड़ की बराबर मात्रा घी में मिलाकर खाने से कमर का दर्द जाता रहता है।

(८) रजोधर्म के पीछे असगन्ध के क्वाथ में सिद्ध किया हुआ घी पिलाने से स्त्री गर्भ धारण करती है।

(९) असगन्ध ६ माशा और खाँड़ ६ माशा मिलाकर जलके साथ फाँकने से ऋतुकाल में प्रमाण से अधिक रुधिर का जाना बन्द हो जाता है।

(१०) असगन्ध की फंकी लेने से मूत्र की वृद्धि होती और मूत्र साफ होता है। तथा असगन्ध के बीजों से दही जमाई जाती है।

[आ]

२७–आक।

संस्कृत—श्वेतार्क, अलर्क, राजार्क। हिन्दी—मंदार, मदार। बंगला—आकन्द। मराठी—रुई, पांढरी रुई। गुजराती—आकड़ो, भोलो आकड़ो। अंगरेजी—जाइगेन्टिकस्वालोवर्ट। फारसी—खुर्क दुग्ध।

आक (मंदार)।

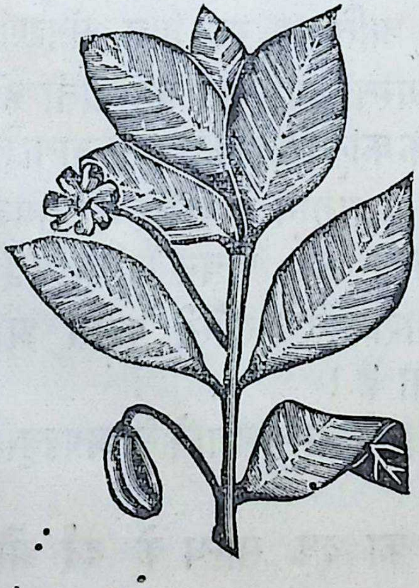

इसके पेड़ बनों में अधिक पाये जाते हैं। थोड़ा-थोड़ा फर्क रखते हुये इसके चार भेद हैं। श्वेत आक, लाल आक, राजार्क और श्वेत मंदार है। ये चारों ही दस्तावर और वायुनाशक हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इसकी लकड़ी निस्सार तथा पत्ते बरगद के समान कुछ सफेदी लिये होते हैं। फल तोते के समान तीन भागों में बँटा रहता है जिसके भीतर से रुई के समान भुआ निकलता है। इसके पाँचों अंग की भस्म बनाई जाती है जो कफ को दूर करती है। इसके पत्तों को गरम करके बाँधने से पेटका दर्द दूर हो जाता है।

सफेद आक का फूल बलकारक, हल्का, दीपन तथा पाचक है। इससे अरुचि, बवासीर, मुखसे लार का टपकना, खाँसी और श्वाँस-विकार नष्ट हो जाते हैं। उदर रोग, खुजली, विष, व्रण, तिल्ली, वायु गोला और मल कृमि आदि रोग भी नष्ट हो जाते हैं।

लाल आक का फूल मधुर, कड़वा, गम, स्निग्ध तथा नमकीन होता है। इसकी जड़ कफ को निकालने वाली, पसीना लाने वाली और वमन कारक है। इसका सेवन करने से, श्वाँस, खाँसी, अतिसार, रक्त पित्त, संग्रहणी, प्रदर और कफ-जन्य समस्त व्याधियाँ नष्ट होती हैं। इसके लेपसे बिच्छू आदि के काटने का विष दूर हो जाता है।

आक का दूध शरीर में लगाने से शरीर की चमड़ी लाल हो जाती है। इसका फूल पाचन शक्ति बर्द्धक तथा पेट के दर्द का नाशक है। खाँसी श्वास और अरुचि में भी लाभ करता है।

[१] इस आक के जड़की छाल लगाने से अण्डवृद्धि का रोग नष्ट होता है।

[२] लाल आक का दूध सन्धि के दर्द और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सूजन में तत्काल लाभ पहुँचाता है। सफेद मंदार गर्म, कड़वा, मलको शोधन करने वाला, मूत्र कृच्छ्र और व्रण आदि अत्यन्त दारुण कृमियों को नष्ट करता है।

[३] आक के पत्तों पर चूना और कत्था लगा कर पान के समान खाने से दमा रोग नष्ट होता है तथा कोमल पत्तों को चबा-चबा कर खाने से ताप और तिजारी आदि ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

[४] आक के पत्तों को सेंककर बाँधने से चोट अच्छा हो जाता है और फूलका जीरा काली मिर्च के साथ दिया जाय तो बच्चों की खाँसी दूर हो जावे। आक की जड़ की राख को कड़ुवे तेल में मिला कर लगाने से खुजली अच्छी हो जाती है और इसकी जड़ को छाये में सुखा कर खरल कर इसमें गुड़ मिला कर एक रत्ती नित्य खाने से शीत ज्वर शान्त हो जाता है। आक का दूध लगाने से बवासीर के मस्से कट कर गिर जाते हैं और पाँव के अँगूठे पर लगाने से दुखती हुई आँख अच्छी हो जाती है। चोट पर लगाने से चोट शान्त हो जाता है। जिस स्थान के बाल गिर गये हों यदि वहाँ आक का दूध लगाया जाय तो बाल उग आते हैं। तलुओं पर मलने से १ महीने में मृगी रोग दूर हो जाता है। आक के दूध का फाहा लगाने से मुँह का लकवा रोग अच्छा हो जाता है।

[५] आक की छाल को पीस कर घी में मिला कर लगाने से चोट अच्छा हो जाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२८-आम।

संस्कृत-आम्र, रसाल, सहकार, सौरभ, कामाङ्ग, मधुदूत, माकन्द, पिकवल्लभ। हिन्दी-आम। मराठी-आवा। गुजराती-आँबों। कर्नाटकी-मखिन। तेलङ्गी-मामीडोचेट्टु। अरबी-अम्बा। फारसी-अबे। अंग्रेजी-मैङ्गो।

आम का वृक्ष बहुत बड़ा होता है। इसके पत्ते आधे से लेकर एक बालिश्त तक लम्बे और अनीदार होते हैं। फूल का मौर (बौर) गुच्छेदार होता है। इसका फल जगत् में एक प्रसिद्ध मेवा है। औषधि में मुख्यतः इसकी गुठली काम आती है। आम का पुष्प (बौर) अतिसार, कफ, पित्त और प्रमेह को दूर करता, शीतल, रुचिकारी, ग्राही और बातल है।

आम का कच्चा फल कषैला खट्टा, रुचिकारी, बादी और पित्त करने वाला है। किन्तु तरुण आम अर्थात् बड़ा आम अत्यंत खट्टा, रुक्ष, त्रिदोष तथा रुधिर को विकृत करने वाला है। कच्चे आम का ऊपर का छिल्का छीलकर अमचुर बनाया जाता है। अमचुर बड़े काम का होता है। परन्तु पका हुआ आम मधुर, स्निग्ध बली और सुखदायक है। इसका सेवन करने से शरीर का रंग चमक जाता है। यह हृदय के लिये हितकारी रसयुक्त, अग्नि, कफ और शुक्रवर्द्धक है। डाल का पका हुआ आम खाने में मधुर और कुछ खट्टा भी होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पर यह बलकारक और पित्तवर्द्धक है। किन्तु पाल का पका हुआ आम पित्तनाशक है। इसमें खटास थोड़ा और मिठास अधिक होता है। पाल का आम शीतल, शीघ्रपची और बात पित्त का हरण करने वाला है।

(१) आमका निचोड़ा हुआ रस बलकारी, भारी, बात हरणकर्त्ता, दस्तावर, हृदय को अहित, तृप्तकारी, रुचिकारी, देर में पचने वाला, मधुर, बलकारी, शीतल तथा बात नाशक होता है।

(२) दूध के साथ खाया हुआ आम बात पित्त नाशक, रुचिकारी, वलवर्द्धक तथा शरीर को निखारने वाला होता है। परन्तु अधिक आम चूसने से मन्दाग्नि का रोग हो जाता है। खट्टे आम में कई दोष हैं। पर मीठा निरोग है। अधिक आम चूस लेनेसे यदि कुछ क्षति पहुँचे तो तुरंत सोंठ का जल या काला नमक और जीरा खा लेना चाहिये।

(३) अम्रार्क या अमावट सूर्य की किरण में पका होने के कारण हल्का और रुचिकारी होता है। इसके सेवन करने से तृषा, वमन, बादी और पित्त की शान्ति होती है। कोष्ठ स्थित समस्त बादी निकल जाती है। आम के भीतर की गुठली, कषैली, कुछ खट्टी और मधुर होती है। यह वमन, अतिसार और हृदय के दाह को नष्ट करती है।

(४) आमके नवीन पत्ते रुचिकारी, कफ और पित्त नाशक हैं। कच्चे आम के फल का अचार पेट को

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शान्ति करता तथा भूख को प्रदीप्त करता है। अमचुर में नाइट्रिक एसिड अधिक होनेके कारण वह रुधिर को शुद्ध करने वाला है।

(५) कच्चे आमके फल के गूदे को सेंककर खाँड़ के साथ हैजा या महामारी में देना चाहिये। आम के पत्तों की नसको जलाकर नेत्रके पलकों में होने वाली गुहेरी में लगाने से वह दूर होती है।

(६) आमकी गुठली पीसकर बीस से तीस ग्रेन की मात्रा में खाने से पेट के कीड़े निकल जाते हैं। दुखते हुये बवासीर के मस्से भी इससे नष्ट हो जाते हैं।

२९-आँवला।

संस्कृत-आमलक, आमलकी, धात्री, त्रिफला, अमृता। हिन्दी-आमला, आवला, आमरो। बंगला-आमलकी। मरहठी-अवले, आवळी। गुजराती-आवली। तेलङ्गी-उसरकाय। फारसी-आमलज। लैटिन-फाइलेन्थस।

आँवला।

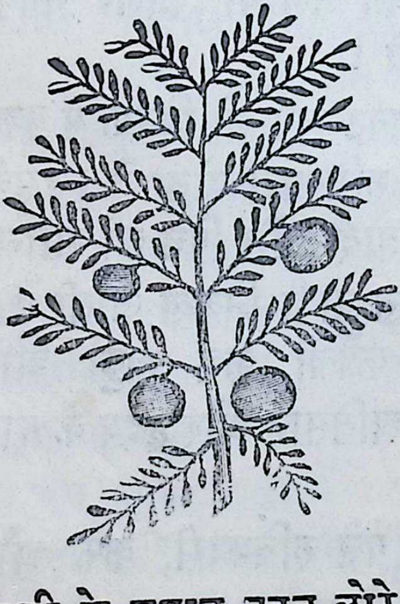

आँवले के दो भेद हैं। एक बागी (बाग में होने वाला) दूसरा जंगली। इनमें बागी आँवला उत्तम होता है। यह शरत ऋतु में फलता है। यों तो आँवला सर्वत्र मिलता है पर काशी के आँवले बहुत उत्तम होते हैं। इसके पत्ते इमली के समान बहुत छोटे होते हैं और डालियों पर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

छोटे छोटे राई के दानों के समान खुरखुरापन जो फूल कहलाता है उसमें से माघ और फाल्गुन में फल निकलते हैं। वे फल सुपारी के बराबर गोल होते हैं। आँवले के फल के बहुत बारीक रेखा की छः संख्या होती है। इसका मुरब्बा बहुत लाभदायक होता है। इसका गुण बीर्य और बिपाकादि में सब हरड़ के ही समान होता है। विशेषता केवल इतनी है कि यह बात रक्त और प्रमेह को नाश करनेवाला वीर्यवर्धक और रसायन है। खट्टा रस होने के कारण यह शीतल बात को हरण करता और कफ को दूर कर देता है। इस कारण आमला त्रिदोष नाशक है।

(१) आँवले की छाल को शिरके में पीस कर नाभी में लगाने से दस्त का आना बन्द हो जाता है।

(२) आँवला. किसमिस, मुनक्का, दारुहल्दी, जवासा, गुरुच, चमेली की पत्ती, हर्र और बहेड़ा सबको बराबर लेकर उनका काढ़ा करके उसमें शहत डालकर कुल्ला करने से मुख की दुर्गन्धि चली जाती है।

(३) आँवले और दूब को शीतल जल में पीस कर मस्तक पर लेप करने से नाक से रुधिर गिरना बन्द हो जाता है।

३०—आमिया (आमा) हल्दी।

संस्कृत-कचूर। द्राविड, कल्पक, शठी। हिन्दी-कचूर, आंबिया हल्दी। बंगला-शठी। मराठी-कचोरा। गुजराती-कचोरा, कच्चुरो, कोंकशा, नरकचरो, काहुलि, अरसिन, षटकचोरा। तेलगू-कचोरालु। अरबी-एरकुल, काफूर। फ़ारसी-जरंबाद। अंगरेजी-लांगजोडोरोआ। लैटिन-करक्यूमा, जोडोरिया।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यह हल्दी जाति के एक वृक्ष की जड़ है। मालाबार और बम्बई आदि प्रान्तों में इसकी अधिक उपज होती है। इसका गुण अग्निदीपक रोचक, चरपरा, कड़वा, सुगन्धित, गरम और हल्का है। काढ़ बवासीर व्रण, खाँसी, आदि कई रोगों में इसका प्रयोग विशेष लाभदायक है। चार माशे की मात्रा में सेवन की जाती है। इसका प्रतिनिधि शतावर और दर्पनाशक सफेद चन्दन है।

(१) हल्दी, काली मिर्च, मुनक्का, पीपली रास्ना और कचूर इन सबको चूर्ण करके उसके एक टंक चूर्ण में थोड़ासा गुड़ और तिल्ली का तेल मिलाकर सेवन करने से श्वास कास नष्ट होता है।

(२) आमाहल्दी, चोटमुसव्वर और प्याज को एक में पीसकर गरम करके चोट पर रखा जाय तो चोट का दर्द शीघ्र दूर हो जाता और सूजन पच जाती है।

(३) हल्दी और प्याज को पीस कर आई हुई आँख पर प्रयोग करना अत्यन्त लाभदायक है।

२१–आलू।

यह एक मूल है जो क्षुप जाति के पौधे के नीचे बैठती है। एक पेड़ के नीचे पचासों तक की गिनती

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

में होती है। यह छः तरह का होता है। काष्ठालुक, शंखालुक, हस्त्यालुक, पिण्डालुक सप्तालुक और रक्तालुक।

काष्ठालुक को हिन्दी में कठालू और बँगला में काठआलू कहते हैं। यह कठोर होता है। शंखालू को हिन्दी में शंखारू कहते हैं। बँगला में शंखारू कहा जाता है। यह सफेदी भी लिये होता है। हस्त्यालुक लम्बा और मोटा होता है। पिण्डालुक गोल होता है। सप्तालुक मोटा रोमांचयुक्त और लम्बा होता है। रक्तालुक को रतालू या रतड़ा कहते हैं। इसका रंग लाल होता है।

सब जाति के आलू शीतल, मधुर, भारी मल मूत्र को प्रगट करने वाले, रुक्ष, दुर्जर और रक्तपित्त नाशक हैं। कफ वात कारक, बलकर्त्ता और अग्नि को भी बढ़ाता है।

३२–आलू बुखारा।

इसे संस्कृत–आलुक। हिन्दी–आलू बुखारा। मराठी–नोपरुक। गुजराती–आलु। अरबी–इजास। अंगरेज़ी–चेरीप्लम कहते हैं।

आलू बुखारा।

यह बलखबुखारे में होने वाले एक छोटे फूल हैं। इसका फल लाल और कुछ–कुछ कालापन लिये होता है। स्वाद इसका मिठास के साथ–साथ कुछ फीका और खट्टा रहता है।

गुण में यह ठंडा है। आलूबुखारे के साथ, सफेद

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जीरा, पोदीना, सोंठ, निर्बीज मुनक्का, सैंधानमक और काला नमक को चटनी की भाँति पीस कर रोगियों को दिया जाता है जिससे जीका मिचलाना, बमन होना, पेट का दर्द, पतले दस्तों का आना, और हैजे में भी लाभदायक है।

आलूबुखारा पित्त-ज्वर और रक्त-ज्वर को भी लाभकारी है। खुजली प्रमेह, गुल्म और बवासीर का नाशक तथा खट्टा होते हुए भी यह खाँसी को दूर कर देता है।

(१) आलूबुखारा, सेंधा नमक, सेंकी हुई भाँग, सोंठ, पीपल, और द्राक्षा की गोली बना कर मुख में रखने से अरुचि नष्ट होती है।

(२) एक रत्ती आलूबुखारा और एक रत्ती भाँग के चूर्ण को मधु के साथ चटाने से भूख और निद्रा की वृद्धि होकर अतिसार और संग्रहणी नष्ट हो जावेगी।

३३-इन्द्र जौ।

संस्कृत-कुटजबीज, यव, इन्द्रयव, कलिंग कालिंग, भद्रयव, और इन्द्रवाचक। हिन्दी-इद्रजौ। कलिङ्गड़ी-कोडसिगेयबीज। गुजराती-इन्द्रयव। फारसी-लिसातुल असाफिर, कुंज द्युजवा। लैटिन-राइएन्टी डियाँडिसेंटेरिका।

इन्द्रजौ त्रिदोष नाशक, संग्राही, कटुतिक्त, शीतल, अग्निदीपक और दाहनाशक है। इसका सेवन करने से रक्तपित्त का ज्वर और अतिसार ज्वर शांत हो जाता है। कृमि, विसर्प कुष्ट, खूनी बवासीर, गुदा की कीलें, बादी, रुधिर के दोष, कफ और शूल रोग भी शीघ्र दूर होता है। पाँच रत्ती से लेकर तीस रत्ती तक की मात्रा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रखनी चाहिये। इसके वृक्ष की छाल पेट पीड़ा और दस्त की मुख्य औषधि है। इसका बीज ग्राही और ज्वर नाशक भी है। पेट की पीड़ा में बीज भी काम आता है।

(१) यदि छाती में दर्द हो तथा पेट में मरोड़ा हो और पेशाब अधिक आता हो इन्द्रजौ का बीज बड़ा लाभदायक है। यह पेशाब की थैली से पथरी को पिघला कर निकाल देता है। कामोत्तेजक और शक्तिवर्द्धक भी है।

(२) गर्भधारण के लिये इन्द्रजौ और शहद तथा केसर को भी एक साथ मिला कर स्त्री की जननेन्द्री में रखना चाहिये। प्रसव के समय भी ऐसा किया जाता है। ऐसा प्रयोग करने से प्रसवकाल सुखकर व्यतीत होता है।

(३) पुराने ज्वर तथा रक्तस्राव में इसकी छाल जलसे पीस कर देनी चाहिये। अतड़ी के दर्द के लिये भी यह बहुत लाभदायक है। अतड़ी में जब दर्द उठे तब इन्द्रजौ के बीजों को सेंक कर गर्म जल में भिगो देना चाहिये। थोड़ी देर बाद जब उसका अर्क पानी में उतर आवे तब वही पानी रोगी को पिला देना चाहिये। इससे तत्काल लाभ पहुँचेगा।

३४–इन्द्रायन।

ऐन्द्री. इन्द्रवारुणी. चित्रा, गवाक्षी और गवादिनी यह छोटी इन्द्र वारुणी के संस्कृत नाम हैं। हिन्दी–इन्द्रारुण, इन्द्रायन, फरफेंदू। बंगला–राखाल-शशा। मराठी–लघुकांवडल। कोंकड़–इन्द्रायण। कर्नाटी–हामेक्के। गुजराती–इन्द्रवरणु। तेलगू–एतीपुच्छा। अंगरेजी–हिंजल। फारसी–खुरपे-जेतलख। लैटिन—कोलोसिन्थिस।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इन्द्रायन ।

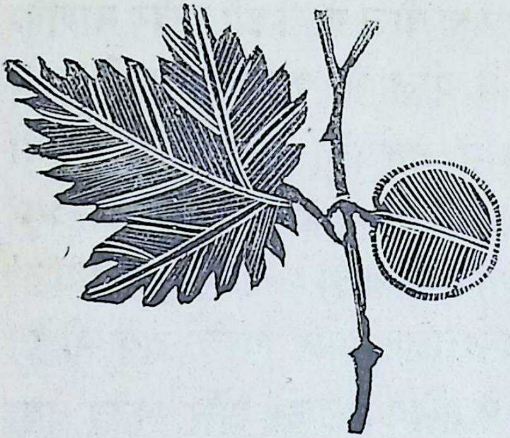

इन्द्रायन की लतायें रेतीली जमीन में ही अधिक होती हैं। इसके पत्ते लम्बे और बीच में कटे हुये तथा फल पीले रंग के पाँच पँखड़ियों वाले होते हैं। सन्तरे के समान ही इसका फल पीला और सुन्दर होता है। हाँ, इसमें बीज अधिक होते हैं। इसके भीतर से इलाटेरियम नाम का सत्त निकलता है।

बड़ी इन्द्रबारुणी के नाम। संस्कृत में इसे विशाला, महाफला, श्वेत-पुष्पा, मृगाक्षी, मृगैर्वारु और मृगादनी कहते हैं। हिन्दी में बड़ी इन्द्रफला। मराठी–थोरकाबडल। कर्नाटी–हिरियहामेक्वे। इसका फूल सफेद और फल बड़ा होता है।

दोनों प्रकार की इन्द्रायन कड़वी पाक में कटु, दस्तावर, हल्का और गरम होती है। कामला, पित्त, कफ, प्लीहा, उदर विकार, श्वास रोग, खाँसी. बायुगोला, गठिया, घाव, प्रमेह, मूढ़गर्भ, आम, गंडरोग और विषरोग में लाया जाता है और छः रत्ती से लेकर दो माशे तक की मात्रा नियत की गई है। यह रक्त और फेफड़े को हानि पहुँचाती है। कतीरा, बिहीदाना, मस्तगी और निशास्ता इसका दर्प नाशक है। इसबंद, रसोत और निसोथ इसका प्रतिनिधि है। यह दस्तावर विष नाशक और दुष्ट दोषों को हरने वाला है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१–इन्द्रायन की जड़ पीस कर जुलाब लिया जाता है। फलका शरबत भी जुलाब के प्रयोग में आता है। इसका शरबत पीने से, बलगम, जलन्धर, पेटकी ऐंठन और कामला रोग दूर हो जाता है। गर्भाशय पर भी इसका अधिक प्रभाव पड़ता है। इन्द्रायन की धूनी देने से नष्ट हुआ आर्तव पुनः जारी हो जाता है। जलन्धर के रोगी को चाहिये कि इसके फलको खाँड़ के रस में निचोड़ कर पीवे।

(२) इन्द्रायन की छाल, अतीस, नागरमोथा, नेत्रवाला लोद, रक्त चन्दन, धवड़े के फूल और अनार के छिल्के में से २ टंक के क्काथ में २ टंक मधु मिलाकर ७ दिन तक खिलाने से दाह, मल और रक्तातिसार नष्ट हो जाता है।

३५–इमली।

संस्कृत–अम्लिका, चुक्रिका, अम्ली, चुक्रा, दंतशठा, अम्ला, चिचिंका। चिंचा, तिंतिडीका औरतिंतिडी। हिन्दी–इमली। वंगला–अरमरूल, तेकल तेंतुल। कर्नाटकी–हुणिसे। मराठी–चिंच। गुजराती–आँवली। तेलगू–चीताचेट्टू। उडिआ–कआँ। फारसी–तमर-हिन्दी। ई०–टेमेरिन्ड। इसकी कच्ची फली को कतारे कहते हैं।

इमली।

इमली सर्वत्र मिलती है। यह रंग में पीली और लाल दो प्रकार की होती है। स्वाद में खट्टी और गुरु, बातनाशक, पित्त-कर्त्ता, कफवर्द्धक और रक्त दोष निवारक होती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

साथही । शीतल, पाचक दस्त खुलासा लाने वाली और ज्वर में भी अत्यंत उपयोगी है ।

इमली का वृक्ष बहुत बड़ा होता है । लकड़ियाँ केवल जलाने ही के काम में आती हैं । इसकी पत्ती बहुत छोटी होती है । फूल भी बहुत छोटे और पीले वर्ण के होते हैं । माघ के महीने में इसमें फल लगते हैं और फाल्गुन चैत तक पूर्णतः पक जाते हैं ।

हकीमों की सम्मति है कि इमली से उल्टी का आना बन्द हो जाता है और दस्त साफ होता है । इमली पित्त को नाश करती और जुलाब में भी काम आती है ।

(१) इमली के पानी का कुल्ला करने से गले के भीतर की सूजन और दर्द दूर हो जाता है ।

(२) इमली को उबाल कर पुल्टिस बना फोड़े पर बाँधने से फोड़ा अच्छा हो जाता है । यदि किसी को फोड़ा हो जावे तो इमली को जल में पीसकर पुल्टिस बनाकर बाँधने से सूजन उतर जाती है । पेशाब की गर्मी में भी इसका प्रयोग किया जाता है ।

(३) आँख के पर्दे में सूजन आई हो तो इमली के फूल की पुल्टिस बाँधना चाहिए । तत्काल लाभ पहुँचता है ।

(४) इमली खाने से पाचन शक्ति बढ़ती और प्यास कम लगती है । इसके फूल का रस बवासीर के दर्द में शीघ्र लाभ पहुँचाता है ।

(५) इमली के गोंद को चूर्ण कर नासूर के घाव पर बुरकने से घाव जल्दी भर जाता है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(६) इमली के पत्तों को शीतल जल में भिगो कर आँख दूखने आई हो तो उस पर और नासूर के घाव पर उसे बाँधते हैं।

(७) इमली का बीज पीस कर जल में मिला गाँठ (फोड़े) पर चुपड़ने से फोड़ा शीघ्र फट जाता और अच्छा हो जाता है।

३६—बड़ी इलायची।

संस्कृत—स्थूलएला, बहुला, पृथ्वीका, त्रिपुटा, भद्रैला, चन्द्रबाला, निष्कुटि। हिन्दी—बड़ी इलायची, लायची। बंगला—बड़ए-लाइच। मरहठी—वेलदोड़ा। तेलङ्गी—पंगएलाकुल। ता०—एलम। कर्नाटकी—यरडूलकी। गुजराती—एलची। अरबी—काकलेकीबर। फारसी—हैलकलां। लैटिन—अमोमम्।

बड़ी एलायची—रस और पाक में कटु (चरपरा) अग्निकारक हल्की रुक्ष और गर्म है। कफ, रक्त, पित्त खुजली, श्वाँस, प्यास, बाई (डकार) विष रोग, खाँसी वमन, मुख रोग और शिर रोग को भी नष्ट करती है मात्रा ३॥ माशे की। प्रतिनिधि—छोटी इलायची। दर्प नाशक—गुलाब के फूल हैं।

छोटी एलायची।

संस्कृत—सूक्ष्मैला, उपकुंचिका, तुत्था, कोरंगी, द्राविड़ी, त्रुटि। हिन्दी—गुजराती इलायची, छोटी इलायची। बंगला—छोटा इलाइच। मरहठी—लघुवेला, एलदोड़ा। तेलङ्गी—पलाकु। अरबी—काकले सगीरखीर, बवाब-हीलखुर्द। लैटिन—इलेटिरिया।

इसकी उपज मालाबार में अधिक होती है। यह चरपरी, शीतल, हल्की और वायुनाशक है। कफ, खासी, श्वाँस, बवासीर और मूत्र-कृच्छ्र रोग को शमन करती है। इसकी प्रतिनिधि बड़ी इलायची तथा दर्प-नाशक गुलाब का फूल या मिश्री है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(१) इलायची दालचीनी, नागकेशर कालीमिर्च, पीपली, सोंठ, उत्तरोत्तर वृद्धि क्रम से पहिला १ दूसरा २ तीसरा ३ टंकादि लेकर इनके समान ही मिश्री डाल कर इसे घृत में छान कर प्रतिनिधि दो टंक चूर्ण जल के साथ सेवन करने से हिक्का, अजीर्ण, उदर रोग, अर्श और श्वासकास नष्ट होता है।

(२) इलायची, पाषाणभेद, शिलाजीत, पीपली तेवरसी (खीरा या ककड़ी) के बीज, केशर, सेंधा नमक इन सबका २ टंक चूर्ण चावल के जल के साथ सेवन कराने से मूत्रकृच्छ्र नष्ट हो जाता है।

(३) इलायची कूडेकी छाल, गुरच और आँवला प्रत्येक को एक दूसरे से बढ़कर १—२—३ और इनके समान जितनी यह सब हों उतनी गूगल सबको महीन पीसकर सवा या डेढ़ टंक मधु के साथ सेवन कराने से मेदरोग और भगन्दर दोनों ही रोग नष्ट हो जाते हैं।

(४) इलायची, भीमसेनी कपूर, नारंगी, जायफल, गोखरू, सलाई वृक्ष की छाल, शुद्धपारा अभ्रक, मोचरस और बंगसार सबको महीन पीस कर पिलाने से प्रमेह नष्ट हो जाता है।

(५) इलायची का महीन चूर्ण जल के साथ पिलाने से मूत्रकृच्छ्र नष्ट हो जाता है।

३७-ईख।

संस्कृत-इक्षु, दीर्घच्छद, भूमिरस, असिपत्र, मधुतृण। हिन्दी-ईख, गांडा, गन्ना। मरहठी-ऊस। गुजराती-शेरडी। तेलङ्गी-चिरकु। फारसी-नेशकर। अंगरेजी-शूगरकेन।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ईख।

ईख रक्त पित्त नाशक, बलकारक, कफ जनक स्वादुपाकी, स्निग्द्ध, भारी, मूत्रकारक और शीतल है। ईख कई जाति की होती है। पौंड्रक, भीरुक, बंशक, शतपोरक, कांतार, तापसेक्षु, कान्डेक्षु, सूचीपत्र, नैपाल, दीर्घपत्र, नीलपोर और कोशक। से सब ईख के ही नाम हैं। इनके गुण इस प्रकार हैं:- सफेद पौंडा-बात पित्त नाशक, रस और पाक में मधुर है। शीतल, बृहण और बलकर्त्ता भी है। बंगला में श्वेत पौंडा को श्यामसाडा और भीरुक पौंडा को सचिइक्षु और मराठी में पाढराउँस कहते हैं।

कोशकार पौंडा-भारी, शीतल, रक्त पित्त और बीर्य को नष्ट करने वाला होता है।

कांतारेक्षु, काला पौंडा-भारी, वृष्य, कफकारक और दस्तावर है।

शतपोरक ईख-जिसमें बहुत गाँठ हो तापसेक्षु-इसको बँगला, चीनेर बम्बई अर्थात् चीनियाँ बम्बई भी कहते हैं। यह मधुर, कफ कुपित, तृप्तिकारी, रुचिप्रद और बलकारी है।

इस प्रकार सब ईखें अपना पृथक२ गुण रखती हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पर सबमें कुछ कुछ ही अन्तर होता है अधिक नहीं। अल्पायुकी ईख कफको प्रकट करती तथा मेदे को बढ़ाती है। इसके चबाने से प्रमेह रोग भी हो जाता है। इसी से छोटी ईख नहीं खानी चाहिये। पर युवा ईख-वायु नाशक, स्वादी कुछ तीक्ष्ण और पित्त–नाशक है। वृद्ध (पुरानी) ईख रक्त-पित्त-नाशक, घावनिवारक, बल-कारक और वीर्योत्पादक भी है।

ईख के जल का भाग बहुत मीठा होता है। मध्य का भाग भी मीठा होता है परन्तु ऊपर की ग्रन्थि में नमकीन रस रहता है। जो ईख दाँतों से चबाई जाती है वह रक्त पित्त का नाश कारक है। अनेक औषधियों में इसका और इससे जो गुड़ बनता है उसका अच्छा प्रयोग किया जाता है। इसका गुड़ तृषा, दाह, मूर्छा और रक्त पित्त के रोग में अधिक लाभ देता है।

३८–उशीर (खस)

वीरणतृण की जड़ को उशीर अर्थात खस कहते हैं। इसके पर्याय-वाचक संस्कृत शब्द–उसीर, नलद, अमृणाल, सेव्य और समगंधिक हैं। हिन्दी में इसे खस। बंगला में ब्याणार मूल। मराठी–पोलाबाला, काला-बाला। कर्नाटी–बालदवेस और अंगरेजी में अड्रोपोगनम्यूरीकेट्स कहते हैं।

उशीर (खश)

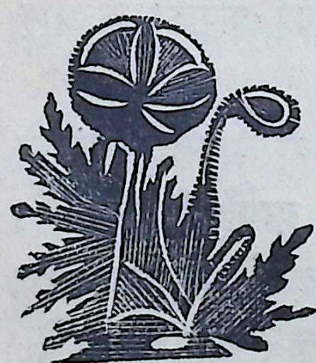

खस एक प्रकार के गाँडर घास की जड़ है जो पाचक, शीतल, हल्का, तिक्त, स्तम्भन, मधुर और कफ, पित्त नाशक होती है। इससे ज्वर, मद, तृषा विसर्प, विष दोष, तीव्र दाह और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

व्रण रोग शीघ्र दूर होते हैं।

(१) उशीर (खश) और चन्दन को घिसकर शरीर में लेप करने से दाह नष्ट होती है।

(२) खश कमलगट्टा, अडूसा, गुरबेल, मुलहठी, महुआ, नागरमोथा, रक्तचन्दन और धनियाँ के दो टंक चूर्ण का क्वाथ मधु के साथ पिलाने से रक्त पित्त का विकार नष्ट हो जाता है।

३९–एरण्ड (सफेद और लाल)

श्वेत एरण्ड के ये नाम हैं। शुक्ल एरण्ड, आमण्ड, चित्र, गन्धर्वहस्तक, पञ्चांगुल, वर्द्धमान, दीर्घदण्ड, अदण्डक, वातारि, तरुण और रुबूक। हिन्दी–अण्ड, अरण्ड, अण्डौआ। बंगला–शुक्ल एरण्ड, भ्यारेन्दा। मराठी–एरण्ड। कर्नाटी-एरडूआंडलके। गुजराती–एरण्डो। तेलगू–आमुडामु। अरबी–स्वरूप। फारसी–वेदअंजीर। तुरकी–करकवाला। लैटिन–रिसिनस। अंगरेजी–कैस्ट्राइल।

एरण्ड।

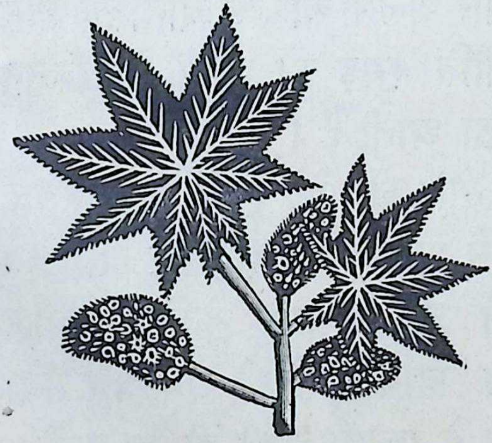

लाल एरण्ड के नाम–रुबूक, उरुबूक रुबू, व्याघ्र-पुच्छ, वातारि, चंचू और उत्तानपत्रक हैं। हिन्दी–लाल अरण्ड। बंगला–लोहित एरण्ड, अरण्डका वृक्ष।

इसके प्रत्येक डोंडों में तीन–तीन अण्डी निकलती है। वे डोंडे काँटे वाले और बिना काँटे के भी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

होते हैं। उनके ऊपर बहुत से खड़े-खड़े रुयें होते हैं। दोनों प्रकार के एरण्ड मधुर, गर्म और भारी होते हैं। इसके पत्ते वायुनाशक, कृमिनाशक और रक्त पित्त को कुपित करने वाले हैं। फल (अरण्डी) अत्यन्त गर्म,बात नाशक, चरपरे और अग्निदीपक हैं।

(१) एरण्ड के कोमल पत्ते गोला, वस्तिशूल.कफ, बादी, कृमि, आदि को शीघ्र दूर करते हैं। इसकी जड़ छाल पत्ते और अरण्डी प्रयोग में लायी जाती है। अरण्डी के तीन या छः बीज पीस कर शहद में मिला कर चाटने से कफ और बात रोग दूर हो जाता है।

(२) अरण्डी के बीज का छिलका उतार कर सलाई में गोदकर काजल पारे, जिसको नींद न आती हो वह इसके काजल को लगावे तो गहरी नींद आवेगी।

(३) एरण्ड और अलसी का तेल दोनों को काँसे की थाली में भली भाँति रगड़ कर आँखों में अञ्जन लगाने से अच्छी निद्रा आती है।

(४) अरण्डी के बीज को गौके दूध में पीस कर दाह स्थान में मर्दन करने से अत्यन्त पाददाह नष्ट होता है।

(५) एरण्ड की जड़, उर्द और केवाँच के बीज और खरेंटी की जड़ के क्वाथ में सिंकी हींग और सेंधा नमक मिला कर पीने से पक्षाघात दूर हो जाता है।

यह पुराने मल को निकाल कर पेट को हल्का करता तथा ठंडी प्रकृति वालों को रेचक भी है। अर्द्धांगवात,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गृद्धसी, झनकबाई, और जलोदर को भी नाश करने वाला है। अग्नि से जले हुये स्थान पर रेंड के पत्तों का राँग गार कर लगाने से लाभ करता है। सूजन, विषम ज्वर, कमर और पीठ के दर्द पर गरम करके इसके पत्ते बाँधे जाते हैं। इसके तेल से जुलाब लिया जाता है।

(६) लाल एरण्डी की जड़, पलास की जड़ दोनों को चावलों के पानी में पीसकर लेप करने से गलगण्ड रोग अच्छा होता है।

४०–ककड़ी।

संस्कृत–एर्वारु, कर्कटी। हिन्दी–ककड़ी, कांकरी। बंगला–कांकुड़। तैलङ्गी–दोसकाया। कर्नाटकी–कोयसौत और अंगरेजी में ककंबर कहते हैं।

कच्ची ककड़ी शीतल, रुक्ष,ग्राही, मधुर, भारी, रुचि-कारक, पित्त को शान्त करने वाली और आम को भी पैदा करती है। परन्तु पक्की ककड़ी प्यास, अग्नि और पित्त की उत्पादिका है।

एक प्रकार की ककड़ी बनमें होती है जिसे बनककड़ी कहते हैं। यह गरम और तिक्त रस संयुक्त होती है। कफ, पित्त, कृमि, कण्डू और ज्वर में भी लाभदायक है। यह मूत्र जनक और बमन कारक भी होती है। ककड़ी का बीज प्यास लाता और पित्त ज्वर, दाह पित्तातिसार और तृषा को भी नाश करता है। इसके बीजों का उप-टन गालों की झाईं को दूर करता और चित्त को प्रसन्न करता है। ककड़ी और पेठे के बीज मिला कर पानी में घोंट कर दो माशे जवाखार और मिश्री मिला कर पिलाने से रुका हुआ मूत्र उतर जाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४१–ककोड़ा (खेखसा)

इसे संस्कृत में–कर्कोटकी, पीतपुष्पा और महाजाली कहते हैं । हिन्दी–खेखसा, ककोड़ा । बंगला–काकरोल । मरहठी–कर्टोली । गुजराती-कंटोला और तेलगू में अगोरकरु कहा जाता है ।

ककोड़ा रुचिकारक, अग्नि प्रदीपक, वात, कफ और पित्त तथा विष नाशक है । इसके पत्तों और फल का भी शाक बनाया जाता है । गुल्म शूल, त्रिदोष कुष्ट, खाँसी, प्रमेह, श्वाँस, ज्वर और बवासीर को भी दूर करने वाला है । मलशोधक, कुष्टनाशक अरुचि खाँसी और ज्वर को भी नाशकारक है । यह पाक में कटु और दीपन है ।

४२–कंघी (सहदेई)

संस्कृत–बला । हिन्दी–वरियाला, बीजबन्द, खिरेटी । बंगला–श्वेत बेडेला । मराठी–चिकणा । गुजराती–बलदाणा । तैलङ्गी–मुर्पिड़ो । लाटिन–अबुटीलन् इराडीकम् ।

कंघी ।

कंघी चार प्रकार की होती है । उनमें से एक को हिन्दी में सहदेई कहते हैं । सहदेई के भी चार भेद हैं । अतिवला, ऋष्यप्रोक्त और कंकतिका । चारों प्रकार की कंघी चाहे उसे सहदेई, चाहे वरियाला, चाहे अतिबला, और चाहे गंगेरन, जो भी कहा जाय सभी गुण में शीतल, मधुर, बलकारक कांतिप्रद, स्निग्ध और ग्राही होती हैं । चारों प्रकार की बलाओं की जड़ की छाल को बारीक पीस

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चूर्ण कर मिश्री मिले दूध के साथ सेवन करने से मूत्रातिसार रोग नष्ट होता है। मूत्रकृच्छ्र के भयंकर रोग को यह शमन करने वाली है। यह वायु को अनुलोमन करती अर्थात् वादी को गुदा द्वारा निकाल देती है। दूध और मिश्री के साथ चाहे पानी में पीस कर चाहे चूर्ण कर अतिबला का सेवन प्रमेह रोग में शीघ्र लाभ पहुँचाता है।

४३–कचनार।

संस्कृत–कांचनार, कांचनक, गंडारि, शोणपुष्पक। हिन्दी–कचनार। बंगला–लाल कांचन। गुजराती–कंचनवृक्ष। मराठी–रक्तकंचन। कावोहिड़ा। कांचनू। लैटिन–बीहिनिआ वेरायगेटा। तामिली–देवकांचन।

कचनार।

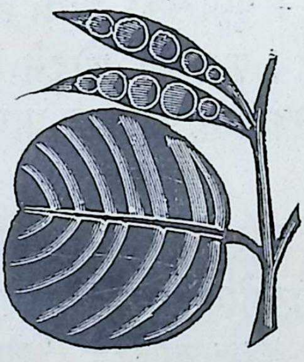

कचनार का एक और भेद कोविदार नाम से है। जिसे भिन्न २ नामों से पुकारते हैं। पर उसका भी वही गुण है जो श्वेत कचनार के होते हैं।

दोनों प्रकार के कचनार के फूल रूखे, हलके और संग्राही हैं। रक्त पित्त, प्रदर, क्षय, और खाँसी रोग को नष्ट करता है। औषधि में छाल का प्रयोग लिया जाता है। कचनार की फली का साग भी बनता है। कचनार के रस की पुट देने से सुवर्ण का भस्म होता है। कचनार की छाल के क्वाथ से कुल्ला करने पर जीभ के समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४४–कटकरंजा कंजा।

संस्कृत–करंज, नक्तमाल, चिरविल्वक। हिन्दी–कंजा। करंजुवा, कट-करंजा। बंगला–डहरकरंज। मरहठी-करंजाचे, चोपडाकरंज। लाटिन–पोन-गेम्याग्लेबरा। कलिङ्गड़ा–नापसीय मरनू। तैलङ्गी–कंज। अंगरेजी–वौंडिंगनट।

कटकरंजा कंजा।

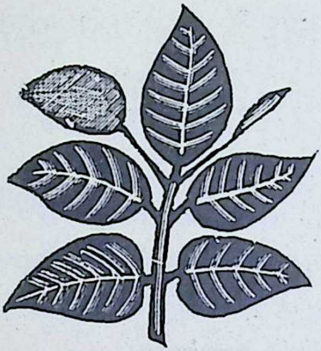

करंज के कई भेद हैं। सब पृथक–पृथक गुण रखते हैं पर उनमें कुछ विशेष अन्तर नहीं है। कंजा शाखी जाति का एक वृक्ष है। इसके वृक्ष और फलों पर भी छोटे छोटे काँटे होते हैं। पत्ते गोल, आगोस अनीदार और लच्छेदार होते हैं। पुष्प सुफेद होता है। फली लम्बी और चपटी होती है। फल को फोड़ने से बादामी रंग का चपटा बीज निकलता है। यह प्रायः नदी के किनारे बहुत होता है।

कंजा–कटु, तीक्ष्ण, उष्णवीर्य और योनि के दोष को हरण करता है। कुष्ट उदावर्त, वायुगोला, बवासीर, व्रण, कृमिरोग और कफ को भी नाश करने वाला है। साथ ही कफ, बात, बवासीर, कृमि और सूजन को भी दूर करता है। कंजा के बीज तेल, छाल और पत्ते औषधि के प्रयोग में लिये जाते हैं। खुजली, विषूचिका कुष्ट, त्वचा आदि चर्म रोगों में भी यह अचूक लाभ पहुँचाता है।

(१) करंज का तेल लगाने से खुजली का रोग नष्ट हो जाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(२) करंज की जड़, दारुहल्दी, सरसों, कूट, हींग, बच, मजीठ, त्रिफला, सोंठ काली मिर्च, पीपली, प्रियंगु-पुष्प को बकरे के मूत्र में पीसकर नास देने और अंजन लगाने से भूत बाधा भी नष्ट होती है।

४५–कटेरी (भटकटैया)।

संस्कृत–कंटकारी, दुःस्पर्शा, क्षुद्रा, व्याघ्री, निदिग्धिका कंटालिका, कंटकिनी, धावनी। हिन्दी–कटेरी, भटकटैया, रेगनी। बंगला–कंटकारी। मराठी-रिंगणी। कर्नाटी–नेलगुल्लु। गुजराती–भोरीगणी।

यह क्षुपजाति की बनस्पति है जो पृथ्वी में फैली रहती है। इसका फूल नीले रंगका और फल पीले रंग का बेरके समान गोल होता है। कटेरी का गुण दस्तावर स्वाद चर्परा, दीपन हल्की, रुक्ष, गर्म और पाचक है।

(१) कटियाली, सोंठ, पित्तपापड़ा और गिलोय को समान भाग लेकर चूर्ण कर डालो। इसमें से छदाम छदाम भरका क्वाथ १० दिन तक पीनेसे बात, कफ ज्वर, खाँसी और सूजन भी शीघ्र नष्ट हो जायगा।

(२) कटियाली का रस मधु के साथ पिलाने से मूत्रकृच्छ्र नष्ट होता है।

(३) कटियाली के फलों का रस, पीपल, पिपला मूल, चव्य, चित्रक, और सोंठका चूर्ण मधुके साथ चटाने से बालक दूध नहीं फेंकता।

कटेरी का प्रयोग खाँसी, श्वास, ज्वर, कफ, वादी पीनस पार्श्वपीड़ा और हृद्रोग में किया जाता है। कटेरी के फल स्वाद और पाक में चरपरे, वीर्यरेचक, भेदक,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कड़वा, पित्त-कर्त्ता, अग्नि बर्द्धक और कफ, वायु नाशक है। इसी को लक्ष्मण भी कहते हैं। परन्तु सुश्रुत ने शारीरिक भाग में लक्ष्मण के अन्यही लक्षण कहे हैं। पर गुणों में दोनों ही समान हैं। प्रयोग के लिये इसकी जड़ लेना चाहिये पर यदि जड़ न मिले तब पंचाङ्ग लेना चाहिये।

४६—कदम्ब।

संस्कृत—कदम्ब, प्रियक, वृत्तपुष्प। हिन्दी—कदम, कदम्ब। मराठी—राजकंदव। कर्नाटी—कडऊ। तैलङ्गी—कदम्ब चेट्टू।

इसका वृक्ष बड़ा और पत्ते भी लम्बे पहुँचे के समान होते हैं। फल और फूल नीबू की तरह सुगन्धियुक्त होता है। यह मधुर, शीतल, कषैला, निमकीन, रसयुक्त, भारी दस्तावर, रुक्ष, कफवर्द्धक, आँवकर्ता और स्तनों में दूध लाता है। कदम्ब और काहू का बक्कल और तेंदू के अन्तर छाल के क्वाथ से इन्द्री पर के घाव शीघ्र अच्छे हो जाते हैं।

४७—कपास।

संस्कृत—कार्पासी, तुण्डकेरी, समुद्रांता। हिन्दी—कपास। वंगला—कार्पास। मराठी—कापसी। तैलंगी—पत्तीचेट्टु। अरबी—कुतुन। फारसी—कुतुनपुबेदाना। लाटिन—गोसिपियम्। इंगलिश—काटन। गुजराती—वण।

पीले और लाल फूल की कपास हलकी, किञ्चित उष्ण, मधुर और बातनाशक होती है। इसके सेवन करने से तृषा, दाह, चित्त की बेकली, परिश्रम, भ्रम और मूर्च्छा दूर होती है। कपास के पत्ते वायुनाशक और रक्तजनक हैं। इसके सेवन से कान का दर्द, कर्णनाद और कान

से राध का बहना दूर होता है। कपास के बीज स्तनों में लगाने से दूध बढ़ता है। कपास की जड़ का रस या भंटे की जड़ का रस पिलाने से भंग तथा धतूरे का मदात्य दूर हो जाता है। कपास की छाल गुरच, नीम की छाल, छड़, दोनों पीपल, खेरटी और देवदारु के क्वाथ को तेल में पकाकर वह तेल २५ दिन पिलाने से गलगंड रोग शांत होता है।

४८—कत्था (खैर)

संस्कृत—खदिर, रक्तसार, गायत्री, दन्तधावन, वालपत्र, बहुशल्य और यज्ञिक। हिन्दी—खैर, लाल कत्था। तैलंगी—रुवास। मराठी—कात। गुजराती—खेरियो कर्नाटकी-कैंपिन खैर।

इस वृक्ष के अन्तरंग की लकड़ी और कच्चे कलियों में से औंट के जो सत्व निकलता है उसी को कत्था कहते हैं। कत्था—शीतल, दाँतों को हितकारी, कड़ुवा और कषैला है। खुजली, खाँसी, अरुचि,मेदरोग आम-वात और कफ के विकारों को भी दूर करता है। इसका वृक्ष बहुत बड़ा और काँटेदार तथा टेढ़ा मेढ़ा होता है। इसकी लकड़ी का कोयला आतिशबाजी के काम में लिया जाता है। इसकी लकड़ी से यज्ञ में स्रुवा बनाकर होम करते हैं।

(१) चिरायते के जल में १० या १२ ग्रेन कत्था डाल कर भिंगो दिया जाय जब कत्था भलीभाँति भींग जाय तब उस जल को अतरिया ज्वर के रोगी को पिला दिया जाय। कैसा भी पुराना ज्वर होगा दूर हो जायगा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(२) रुधिर विकार के कारण मसूड़ों से रुधिर निकलता हो तो कत्थे को मसूड़े के ऊपर मले अथवा खाये तो रक्त निकलना बन्द हो जायगा। रुधिर विकार और दन्तरोग में यह मुख्य प्रयोग किया जाता है।

४६–कमलगट्टा।

संस्कृत–पद्मबीज, पद्माक्ष, गालोड, पद्मककर्कटी। हिन्दी–कमलगट्टा। मराठी–कामलाक्ष। कमलकांकड़ी। अंगरेजी–वालकेकुवति। तैलङ्गी–तामरकाडा!

कमलगट्टा।

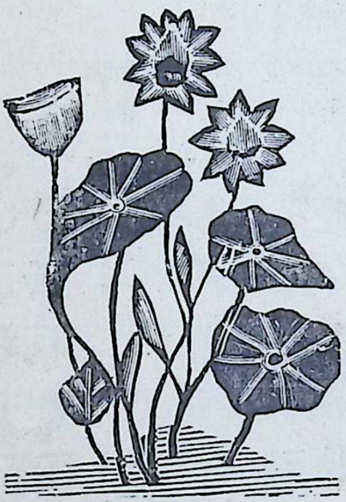

कमलगट्टा बड़े-बड़े तालाबों में कमल नाल से उत्पन्न होता है। बल्कि यों कहना चाहिये कि कमल का ही यह फल है। इसके पत्ते बहुत बड़े-बड़े अरुई के पत्ते के समान होते हैं। यह शीतल, स्वादु, कषैला, कड़वा, भारी, वृष्य, रुक्ष और सर्वोपरि गर्भदाता और बलकारक है। कमलगट्टा ग्राही, पित्त, रुधिर विकार और दाह को उत्पन्न करने वाला है।

(१) कमलगट्टा, सोंचरनोन, जीरा और मुलहठी क्वाथ मधु के साथ पिलाने से वादी का प्रदर रोग अच्छा हो जाता है।

(२) कमलनाल, हल्दी, निम्बपत्र और मुलहठी को तेल में पकाकर उस तेल से कुल्ला करे तो त्रिदोषज मुखपाक नष्ट होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(३) कमलगट्टा, देवदारु, खरैंटी, रक्तचन्दन इन सबको दूध या घृत में महीन पीस कर लेप करने से वातज विसर्प नष्ट होता है।

५०—काला जीरा।

जीरक, जरण अजाजी, कणा तथा दीर्घ जीरक, ये सब सफेद जीरे के नाम हैं। कृष्ण जीरेका नाम—उदगार, शोधक और सुगन्ध है। काले जीरे को संस्कृत में कालिका, उपकालिका, पृथ्वीका, कारवी, पृथ्वी, पृथुकृष्णा, उपकुंचिका, उषकुंची और वृहज्जीरक कहते हैं। सफेद जीरे को मराठी में पांढर जिरें। कर्नाटी में बिलिय जीरगे। पर काले जीरेको मराठी में कालेजिरे ही कहते हैं। कर्नाटी में करिजीरगे, कलौजी, और जोदुजीरगे तथा तेलगू में जिलकरर कहते हैं। गुजराती—घोलु जीरुं, कालीजीरी, कलौंजी जरु। फारसी—कमूनी शोनीजत, हब्ब असवद। अंगरेजी—कम्मिनन् सीड।

काला जीरा।

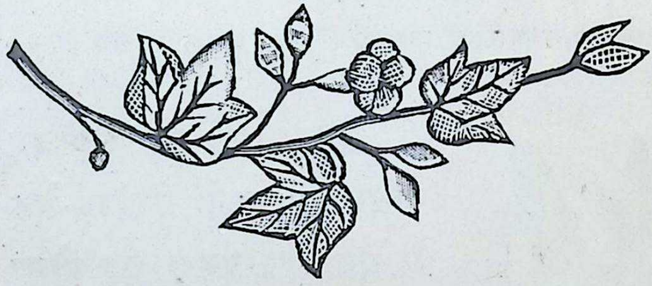

यह भी एक क्षुप जाति का पौधा है जो काबुल के राज्य में तथा हिन्दुस्तान के उत्तरी पहाड़ों में अधिक उत्पन्न होता है। दोनों प्रकार के जीरे रूक्ष कटु, गरम अग्नि दीपक, हल्के, संग्राहक, पित्तकारक, स्मरणशक्ति वर्द्धक, गर्भशोधक, ज्वरनाशक और लोगों को लाभप्रद हैं।

श्वेत जीरा सुगन्धित, पेटकी ऐंठन को नष्ट करने वाला और ग्राही है। इससे नेत्र धोने का पानी बनाते हैं जिससे नेत्र का तेज बढ़ता है। मूत्र में कड़वास हो तो जीरा पीसकर पीना चाहिये। इससे मूत्र अधिक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आता है। और पेट के कीड़े भी निकल जाते हैं। गर्भ स्थान में सूजन आकर अधिक दर्द होता हो तो इस जीरे के पानी में स्त्री को बिठा देना चाहिये। श्वेत जीरा पीस पुल्टिस बनाकर बाँधने से बाहर निकले हुये मस्से और अत्यंत दर्द करनेवाली बवासीर जाती रहती है। टके भर जीरा और टकेभर गुड़ नित्य खाने से मूत्रकृच्छ्र का रोग नष्ट हो जाता है।

किसी-किसी के मत से जीरा पाँच प्रकार का होता है। साधारण जीरा, काला जीरा, स्याह जीरा, कलौंजी और शंख जीरा।

५१-काला धतूरा।

संस्कृत-कृष्णपुष्प, विषाराति, क्रूरधूर्त्त। सिद्ध, कनक, सचिव, शिव। हिन्दी-काला धतूरा।

धतूरा एक क्षुप जातिका पौधा है। फूलों के रंग-भेद से यह पाँच प्रकार का होता है। श्वेत, नीला, काला लाल और पीला। सब में सामान्य गुण होता है। धतूरे के पत्तों का रस शरीर में मालिश करने से मेद रोग नष्ट होजाता है।

५२-कालासेमर।

संस्कृत-कुत्सित, शाल्मलि, रोचन, कूट शाल्मलि। हिन्दी-काला सेमर। मराठी-काली साँवरी।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

काला सेमर।

काला सेमर, सेमरका ही एक भेद है जिसका गुण, कड़वा, चरपरा, दस्तावर और गरम है। कफ, बात के रोग, प्लीहा उदर, यकृत (कलेजा) गोला, विष, भूत बाधा, अपरा, विविध रुधिर विकार, मेद रोग, शूल और कफ को नष्ट करता है।

५३–कुचला।

संस्कृत–तिंदुक, जज्द, दीर्घपत्रक, कुपीलु, कुतक, काकतिंदुक इत्यादि। हिन्दी–कुचला, मकर तेंदुआ। मराठी–काजरा। गुजराती–झेरकोजोला। तैलंग–मुष्टिगिजा। कलिंगडा–कांजिवार। फारसी–इफाराकी।

कुचिला।

कुचला एक प्रकार के वृक्ष का फल है जिसे जहरबला भी कहते हैं। यह शीतल, ग्राही, कड़वा, बातकारी, मदकर्ता और हल्का होता है। यह अत्यन्त व्यथा को नष्ट करता तथा कफ, पित्त और रुधिरविकार को दूर करता है। यह मूत्र लाने

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वाला, बलकारी, अग्निवर्द्धक, कामोत्तेजक, शूल, एकांग बात, शुक्रप्रमेह, गुदभ्रंश, अतिसार आदि रोगों को दूर करने वाला है। दुर्बलता दूर करता, मासिक स्राव लाता, पथरी को तोड़ता, दाह को नाश करता और पाण्डु रोग और कमला को भी नष्ट कर देता है।

कुचिला, हर्रे की छाल, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल शुद्ध गंधक, सिंकी हींग और सेंधा नमक सबको जल से खरल करके चने के बराबर गोलियाँ बनाकर एक गोली नित्य प्रातःकाल जलके साथ लेने से संग्रहणी, अतिसार, अजीर्ण और मन्दाग्नि दूर हो जाते हैं।

५४–कुटकी।

संस्कृत–कटूवी, कटुका, तिक्ता. कृष्णमेदा, कंटुभरा, अशोका। हिन्दी–कुटको। बंगला–कटकी। मराठी–काली कुटको। गुजराती–कडु। तैलङ्गी–काटक रोहिणी। फारसी–खर्व के सियाह। अंग्रेजी–ब्लाकहेलीबोर। लेटिन–हेलीबोरस नाइजर।

कुटकी की केवल जड़ प्रयोग में ली जाती है। इसका रस कटु, पाक में कड़वी, रुक्ष शीतल, हल्की भेदक, अग्निदीपक और हृदय को हितकारी है। कुटकी सेवन करने से कफ, पित्त ज्वर, प्रमेह, श्वाँस, खाँसी, रुधिर विकार, दाह, कुष्ठ और कृमि रोग नष्ट होते हैं।

(१) कुटकी को पीसकर घिया तुरई में भरकर रातभर रखदे तदनंतर प्रातःकाल उसी घियातुरई को पीस छान कर ७ दिन तक खिलाने से गंडमाला नष्ट हो जाती है।

(२) कुटकी, गिलोय, इन्द्रयव, नीमकी छाल, पटोल, सोंठ, अगर, चन्दन, नागरमोथा और पीपल को समान

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भाग लेकर चूर्ण बना डाले ४ माशा प्रतिदिन अष्टावशेष जलके संयोग से पिलाओ तो कफ, पित्त ज्वर, खाँसी, दाह अरुचि और हृदय की पीड़ा भी दूर हो जायगी।

५५-कुटज। (इन्द्र जौ)

संस्कृत-कुटज, कूटज, कीट, वत्सक, गिरिमल्लिका, कालिंग, शक्रशाखी, इन्द्र, जयवफल। हिन्दी-कुडा, कोरैया (आ)। वंगला-कुडची। मराठी-श्वेतकुडा। फारसी-तिवाज।

इसके वृक्ष बड़े होते हैं। इसी के बीज को इन्द्रजौ कहते हैं। यह कटु, रुक्ष, अग्निदीपक, कषैला, शीतल, तिक्त और संग्राही है। बवासीर अतिसार, रक्त-पित्त, कफजतृष्णा, त्वचाके दोष, ज्वर, आम, कुष्टरोग, प्लीहा और अतिसार का भी नाशक है। कुटज की गिरी, धनियाँ, कुटकी, नागरमोथा, पिपलामूल, सोंठ और पीपल के चूर्ण में छदाम भर का क्वाथ दोनों समय १० दिन तक पिलाने से कफ-पित्त-ज्वर, शूल, मूर्छा और उल्टी सब दूर हो जाती है।

५६-कुष्ठ [कूठ या कूट]।

संस्कृत-कुष्ठ। हिन्दी-कूठ। मराठी-कोष्ठागु। गुजराती-कठ। फारसी-कोश्नह। अरबो-कुस्तबहरी। तैलङ्ग-चंगल कुष्ठ। अंगरेजी-कोस्टसरूट्।

इसका सुगंधादिगणमें पाठहै। परन्तु यह असल नहीं मिलता और सिन्धुनद के किनारे होता है। इसका गुण गरम, कटु स्वादु, शुक्र उत्पन्नकर्ता, कडुआ और हल्का, वात-रक्त, विसर्प, खाँसी, कुष्ठ, वादी और कफ को नष्ट करने वाला है। केवल जड़ प्रयोग में ली जाती है।

(१) कूट, मिर्च, सेंधा नोन, पाठ और नागर-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मोथे का चूर्ण गलशुंडी पर मलने से गलशुंडी अच्छी हो जाती है।

(२) कूट, धना, सेंधा नमक, खैरसार और सिंका हुआ जीरा सबको खरल कर मंजन करने से दाँतों से रुधिर का प्रवाह बन्द हो जाता है।

(३) कूट, रक्तचन्दन, मजीठ, लोद, बड़ के अंकुर और प्रियंगुको जल में पीस कर मुख पर लेप करे तो मुख पर की झाईं श्यामता दूर हो जावे।

५७–केला।

संस्कृत–कदली, बरणा, मोचा, अंबुसार। हिन्दी–केला, केरा। मराठी–केल। गुजराती–केल्य। कर्नाटकी–कावालेतव। तामिली–पाजम। ब्रनपिपसी। फारसी–पावजू।

केला।

कच्चा केला स्वादु, शीतल, विष्टंभी, कफ नाशक, भारी, स्निग्ध, रक्त पित्त तृषा दाह क्षय, बृंहण, क्षुधाक्षु, तृष्णा रोग और प्रमेह रोग भी नष्ट करता है।

केले का फूल चिकना, स्निग्ध, मधुर, कषैला, शीतल रक्त पित्त और क्षय को नाश करता है। केलेका मुख्य गुण दोषहीनता और हलकापन है। आँव गिरने पर केले की तरकारी और पकी फली खाना चाहिये। केले के कोमल पत्तों पर सुलाने से अतिदाहयुक्त पित्तज्वर से पीड़ित रोगी को लाभ पहुँचता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

५८—केशर ।

केशर के पर्याय वाचक नाम कुंकुम, घुसृण, वाल्हीक और रक्त वाचक जितने संस्कृत नाम हैं सब केशर के ही नाम हैं। हिन्दी—केशर । बंगला—कुंकुम । फारसी—जाफरान । अरबी—लरकीमास । ईरान—सेफरून ।

कश्मीर, वाह्लीक (बलख) फारस, ग्रीक (ईरान) देशों में केशर उत्पन्न होता है । इनमें जो केशर काश्मीर में उत्पन्न होती है बहुत छोटे-छोटे बारीक बालों के समान और कुछ-कुछ रक्त वर्ण तथा कमल की गन्ध के समान होती है । यह सब केशरों से उत्तम होती है । वाह्लीक अर्थात् बलख देश की केशर पीले रंग की और उसमें केतकी के फूल के समान सुगन्धि आती है । यह भी बारीक होती है । पर यह मध्यम कोटिकी केशर कही जाती है । फारस देश की केशर की गंध शहद के समान, पीली और इसके तंतु मोटे होते हैं । यह अधम केशर है ।

केशर चरचरी, स्निग्ध, कड़वी, वमन नाशक और देहके वर्ण को उज्ज्वल कर्त्ता है ।

मस्तक के रोग, व्रण, कृमि और मुख की झाई दूर करता है । मात्रा १ माशे की होती है ।

(१) नाग केशर के सूखे हुये फूलों को पीसकर घी के साथ मिलाकर दुखते हुये बवासीर तथा पैर के तलुये में लगाने से जलन दूर हो जाती है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(२) केशर की छाल और जड़ को पानी में भिंगा कर पीने से पाचन शक्ति बढ़ती है। इसके बीजों के तेल से संधि बात के दर्द दूर हो जाते हैं।

५९—केसू।

संस्कृत—बलाश, किंशुक, वर्ण, यतिय, रक्त पुष्पक, क्षारश्रेष्ट, वातहर, ब्रहन वृक्ष। हिन्दी—पलास, ढाक। मराठी—छीला, केसूला। उड़िया—पराशु। गुजराती—खाखरो। कर्नाटकी—मुत्तलु। लैटिन—डाउनी ब्रव ब्युटिया बिबहा।

यह गुण में दीपन, बलकर्त्ता, दस्तावर, गरम, कषैला, चरचरा, कड़वा और स्निग्ध है। इसका वृक्ष बड़ा और टेढ़ा मेढ़ा होता है। इसके जड़, पत्ते और लकड़ियाँ तथा फूल भी काम आते हैं। इसके बड़े बड़े जङ्गल होते हैं। यह ब्रण, गोले और गुदा के रोग को नष्ट करता तथा टूटे हाड़ को भी जोड़ देता है। पलास की जड़ और लाल एरण्ड की जड़ को चावल के पानी में पीस कर लेप करने से गलगंड रोग अच्छा होता है। पलास का बीज और गूलर के पक्के फल को तिल्ली के तेल में पीस कर २१ दिन लेप करने से फटी हुई भग गाढ़ी हो जाती है। पलास का फल, काहू की छाल, नीम की छाल, बैरसार और कुटकी को घी में पकाकर बालक को खिलाने और मर्दन करने से शीतपूतनाग्रह का दोष छूट जाता है।

६०—कन्दरी (लहसन)

संस्कृत—लशुन, रसोन, उग्रगन्धा, महौषध, अरिष्ट, म्लेच्छकन्द, यवनेष्ट, रसोनक। हिन्दी—लहसन। मराठी—लसूण, पांढरी। कर्नाटकी—बिलियबेल्लुल्लि। तैलङ्गी—तेल्ला उल्ली। गुजराती—लसन। अरबी—सूम। फारसी—शीर। अंगरेजी—गार्लीक। लैटिन—आलयमसटाइवम्।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कन्दरी।

इसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में ऐसा कहा जाता है कि समुद्रमन्थन के पश्चात् अमृत निकलते समय जब देवासुर संग्राम हुआ तब उस समय गरुड़ अपनी चोंच में अमृत कलश को पकड़ आकाश में उड़ चला। पर उस समय गरुड़ की बेहोशी में कलश से एक बूँद अमृत छलक कर पृथ्वी में गिर पड़ा जिससे एक छोटासा क्षुप उगकर खड़ा हो गया। कुछ काल पश्चात् १२ वर्ष का एक घोर अकाल पड़ गया और पृथ्वी के पौधे रस रहित होगये किन्तु यह क्षुप पौधा ज्यों का त्यों हरा भरा बना रहा। एक वृद्ध ऋषी उसी पौधे को चबा-चबा कर अपना शरीर रक्षा कर रहे थे शेष समस्त ऋषि दुःखी और अन्न जल तथा फलफूल के न मिलने से त्रसित हो सुदूर देशों बनों और पर्वत की गुफाओं में भाग चले। जब दुर्भिक्ष ब्यतीत होकर सुकाल आया तब फिर सब ऋषि एकत्रित हुये। वह वृद्ध ऋषि भी उनमें जा पहुँचा। तब वार्तालाप के प्रसंग में ऋषियों को इस पौधे की महत्ता ज्ञात हुइ। इस कारण ईर्षावश उन्होंने उस क्षुप को शाप दे दिया कि यह ब्राह्मण मात्र

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

को अभक्ष्य होजाय। बस, यही कारण है जो लहसुन का खाना वर्जित हो गया। पर संसार में जो छः रस हैं उनमें लहसुन ही एक ऐसा पदार्थ है जिस अकेले में ही पाँच रस विद्यमान हैं। केवल एक खट्टा रस इसमें नहीं है। इसकी जड़ में चरपरा रस, पत्तों मे कड़वा रस, नाल में कषैला, नाल के अग्र भाग में लवण रस और बीजों में मधु रस विद्यमान है।

लहशुन का सेवन करने से हृदय के रोग, अजीर्ण ज्वर, कोख का दर्द, गुल्म, अरुचि खाँसी, मन्दाग्नि, कफ और बादी का रोग नष्ट हो जाता है।

६१—खजूर।

संस्कृत—भूमिखर्जूरिका, स्वाद्वी, दुरारोहा, मृदुच्छदा, स्कंधफला। काककर्कटी, स्वदुमस्तका। हिन्दी—खजूर : बंगला—खेजूर। मराठी—शिंदी। तैलगू—इटाचेट्टू। फारसी—खुर्मा। अरबी—तमइरुतब। अँगरेजी—डेटपाम।

छुहारा नामक एक प्रकार की खजूर जाति है। यह तीन प्रकार की होती है। तीनों प्रकार की खजूर शीतल मधुर, स्निग्ध, रुचिकारी, हृदय को हित, भारी, तृप्तिकर्ता, पुष्टिकारक, शुक्र कर्त्ता, बलकारी और बात-कफ-नाशक है। खजूर, हर्र की छाल और मिश्री को पीस कर मधु के साथ दो टंक प्रमाण की गोली बाँध कर जल के साथ नित्य १ गोली सेवन करने से अजीर्ण मात्र नष्ट होता है।

६२—गजपीपल।

चव्य के फल को गजपीपल कहते हैं। इसका संस्कृत नाम कपिवल्ली, कोकवल्ली, श्रेयसी, वशिर, और गजकृष्णा है। हिन्दी—गजपीपर। गुजराती—गजपिंपली। बंगला—गजपीपुल। मराठी—मीरवेलीलां, मोठीपिंपली। कर्नाटी—गजहिप्पली। तेलगू—पेद्दापिप्पलु। लैटिन—सीडापसस आफिसीनेलिस कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गजपीपल--चर्परीं, बात कफ नाशक, अग्निबर्द्धक और गरम है। अतिसार श्वास, कंठरोग और कृमि-नाशक है। इसके फल की ६ रत्ती की मात्रा है। गजपीपल, पिपलामूल, चित्रक, सोंठ, मिर्च, सम्भालु, इलायची, अजमोद, सरसों, पाठ, सिंकी हींग, भारंगी, बकायन इन्द्रयव, जीरा, मूर्वा, अतीस कुटकी और वाय बिडङ्ग इनका दो टंक चूर्ण गरम जल के साथ देने से गुल्म, शूल, आम और बात के समस्त रोग दूर होते और क्षुधा की तृप्ति होती है।

६३--गावजुबाँ।

गावजुबाँ एक प्रकार की घास का पत्ता है जो हरा, सुफेद और बिन्दीदार होता है। स्वाद में यह कषैला और चरपरा होता है। इसका पत्ता चित्त को प्रसन्न करता, शरीर की गरमी को दूर करता, प्रकृति को कोमल करता, पित्त को पाखाने के रास्ते से बाहर निकलता छाती की खसखसाहट, जकड़ और खाँसी को दूर करता है।

इसका फूल काले और लाजवरदी रङ्ग का होता है जो स्वाद में कषैला और फीका लगता है। यह अनार के फूल की तरह पर उससे बहुत छोटा होता है। इसके सेवन से चित्त प्रसन्न होता, स्मरणशक्ति बढ़ती, पित्त विकार दूर होता तथा उन्माद और प्यास को शान्त करता एवं कामला को लाभकारी है।

इसका बीज सफेद होता है जो स्वाद में लसीला तथा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फीका होता है। यह कुसुम के बीज के समान पर उससे छोटा होता है। यह गावजुवाँ में अधिक लाभदायक है।

६४–गाँजा।

संस्कृत–भंगा, गंजा, मातुलानी, मादिनी, विजया जथा। हिन्दी–भांग, गाँजा। बंगला–सिद्धि, भाँग, गाँजा। मराठी–भाँग, गाँजा। गुजराती–गाँजो, चरस। फारसी–क़नवजुज, व बरठल रकाल। लैटिन–केनेविस इन्डिका। अंगरेज़ी–इन्डियन हेम्प। एकही तरह के वृक्ष से गाँजा, भाँग और चरस तीनों की उत्पत्ति है।

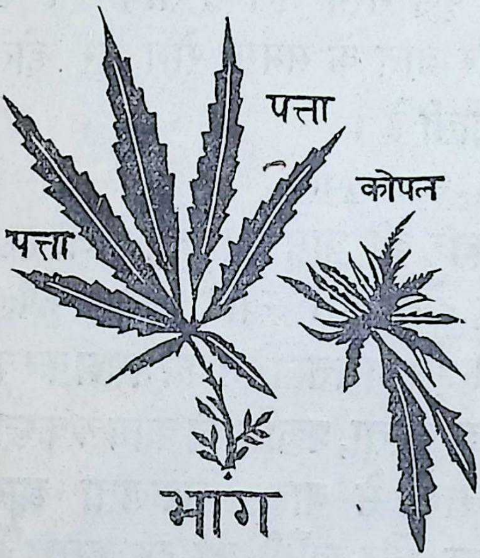

गाँजा, अग्नि वर्द्धक, बलकारक, कामोद्दीपक और पीड़ा निवारक है। कुत्ते और स्यार के काटने पर गाँजा अधिक लाभदायक है। गाँजे का सत्त निकलता है जो गाँजे ही के समान होता है जिसे चरस कहते हैं। गाँजे के बीजों का तेल पान में खाने से ज्वर खाँसी और तिजारी रोग नष्ट हो जाता है। भाँग भी इसी को कहते हैं। भाँग खाने से अजीर्ण रोग दूर होता है।

६५–गिलोय।

संस्कृत–गुडुची, मधुपर्णी, अमृतवल्लरी, छिन्ना, छिन्न रुहा, जीवती, सोना। हिन्दी–गिलोय, गुरुच। बंगला–गुलंच। मराठी–गुलबेल, गरुडबेल, गरोल। कर्नाटकी–अमरद बल्ली। गुजराती–गलो। तामिली–सिंदी लकोदी। तेलगू–तिप्पतिगा। फारसी–गलो। अंगरेजी–गुलाँचा। लैटिन–टिनोस्पोरेकार्डिफोलिआ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

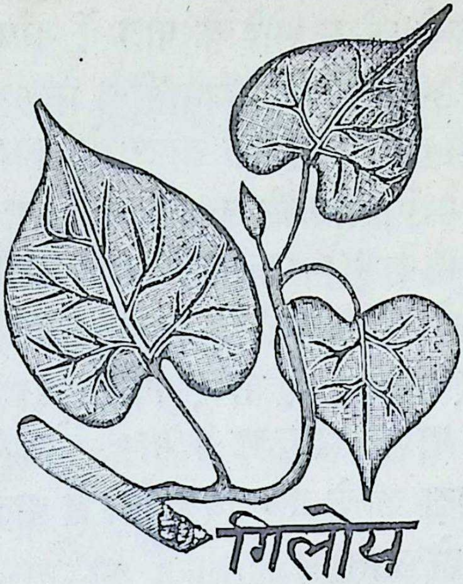

गिलोय की बेल पीपल के पत्तों के समान होती है; इस के कोने अधिक निकले होते हैं और यह एक प्रकार की लता वृक्ष है जो बड़े बड़े वृक्षों पर चढ़ी होती है । इसका चढ़ाव नीम पर अधिक होता है और नीम चढ़ी ही गिलोय उत्तम होती है । इसीसे इसे नीम चढ़ी भी कहा है । वर्षाकाल में यह फूलती है । इशके पत्ते अधिक हरे होते हैं । फल चने के बराबर गुच्छेदार और हरे रंग के होते हैं । पर पकने पर काले रंग के हो जाते हैं । ग्रीष्म और शरत् काल में इसमें पत्ते और फल एक भी नहीं रहते ।

गिलोय, मधुर, कड़वी, पकने के समय स्वादु रस वाली, ग्राहक, कषैला हल्की और बलकारी होती है । आम, तृषा दाह, धातु क्षीणता खाँसी पाण्डुरोग, कापला, कोढ़, श्वास, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, हृदय रोग और बादी को भी ये नष्ट करने वाली है ।

गिलोय का सत्त भी बनता है:—

(१) विधि—गिलोय के छोटे २ टुकड़े कतर के कूट डाले । फिर जल में डाल कर चलनी से छान ले ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फिराई से मथकर किसी चौरस लोहे के पात्र में भरकर रख देवे। दूसरे दिन उस जल को सावधानी से निकाल कर फिर उसको सुखा लेवे। बस सत्त तयार हो गया।

(२) गुरच ३ मा०, नीम की छाल ३ मा०, लाल चन्दन ३ मा०, धनिया ३ मा०, पद्माक्ष ३ मा०, सबको कूटकर काढ़ा करके पीने से कफ का ज्वर दूर हो जाता है।

(३) गिलोय (गुरुच) ३ मा०, पित्तपापड़ा ३ मा०, नागरमोथा ३ मा०, चिरायता ३ मा०, सोंठ ३ मा०, इन सबका काढ़ा करके १० दिन पीने से बात, पित्त का ज्वर शान्त हो जाता है।

(४) गिलोय (गुरच), नीम की छाल, छड़, कपास की छाल, दोनों पीपल, खरैटी और देवदारु के क्वाथ को तेल में पकाकर वह तेल १५ दिन पिलाने से गलगंड रोग शान्त हो जाता है।

६६–सेवती गुलाब।

संस्कृत–शतपत्री, तरुणी, कर्णिका, चारुकेशरा, महाकुमारी, गन्धाढ्या, लाक्षा, कृष्णा, अतिमंजुला। हिन्दी–गुलाब, सेवती। फारसी–गुलसुर्ख। अरबी–वर्गअहमर। कर्नाटकी–चेवड़े। अङ्गरेजी–रोज़।

गुलाब–शीतल, हृदय को हितकारी, शुक्र जनक, हल्का, त्रिदोष नाशक और रुधिर विकार को दूर करने वाला तथा शरीर के रंग को भी उज्ज्वल करने वाला है। स्वाद में, कड़वास और चर्परा तथा पाचक है। गुलाब में हल किया हुआ सुर्मा नेत्रों को हितकर है। गुलाब का तेल मर्दन करने से दाहयुक्त पित्त-ज्वर नष्ट हो जाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

६७–गूलर ।

संस्कृत–उदूंवर, जन्तुफल, यज्ञांग, हेमदुग्धक । हिन्दी–गूलर, ऊमरो । वंगला–यज्ञडुमुर । मराठी–उवर । फारसी–अंजीरेआदम । लैटिन–फाइकूसग्लोमिरेटा ।

गूलर का वृक्ष बड़ा होता है । इसके पत्ते महुआ के पत्ते के समान किन्तु उससे कुछ छोटे और दूसरी पृष्ठ पर कुछ खुरखुरापन लिये होता है । इसकी लकड़ी यज्ञ के प्रयोग में भी आती है । फल खाया जाता है पर वह फल कृमिकारक कफकारक होते हैं । किन्तु रुधिर विकार, पित्त, दाह, क्षुधा. प्यास और थकावट को भी दूर करने वाला होता है । सूखी खाँसी और जकड़न के भी लाभ पहुँचाता है । गूलर के सूखे फलों का चूर्ण मिश्री और मधु में छानकर टके भर की गोलियाँ बनाले और एक गोली नित्य ७ दिन खाने से प्रदर रोग अच्छा हो जाता है ।

६८–गूमा ।

संस्कृत–द्रोणा, द्रोण, पुष्पी, फल पुष्पी । हिन्दी–गोमा, गूमा । वंगला–गलघसिया । मराठी–तुब । तेल–गयल चेट्टू । गुजराती–कुबा ।

गुमा–गुरु, स्वादु, रुक्ष, गरम, बातपित्त कर्ता, रस-युक्त, पाक में स्वादिष्ट, कटु और दस्तावर है । साथ ही यह कफ, आम, कामला सूजन, तमक श्वास और कीटादि को दूर करने वाला है । इसका सर्वाङ्ग लिया जाता है ।

यह एक क्षुप जाति का पौधा है जो गुच्छेदार और गठीला होता है । इसका फूल स्वेत रंग का होता है और इसके भीतर बीज होते हैं । इसके रसकी मात्रा दो तोले की होती है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

६९ गोरख मुण्डी।

संस्कृत-मुण्डी, भिक्षु, श्रावणी तपोधना, श्रावणाहवा, मुण्डीतिका, श्रवणशीर्षका। हिन्दी-गोरखमुण्डी। बंगला-मुडरी, भूई कदम। कर्नाटी-कियोबोलतर। तैलगू-वावसरपुचेट्ट। तामिली-कोदल। अरबी-कमादुरयूस। लैटिन-स्फिरेन्थस् इन्डिकम।

यह-एक प्रसर जाति की बूटी है जो बहुधा काली पृथ्वी पर जल स्थान में अधिक होती है। इसका छत्ता पृथ्वी में फैला हुआ रहता है। फूल गोल और कनेरी के रंग का होता है।

यह पाक-में कड़वी, उष्ण, वीर्य मधुर, हल्की और स्मरणशक्ति वर्धक है। मूत्रकृच्छ्र, कृमिरोग, योनिरोग, पाण्डु और अरुचि आदि रोगों में यह विशेष लाभ पहुँचाती है। वृक्ष का सर्वाङ्ग लिया जाता है। मुण्डी का अर्क भी निकाला जाता है। जो खून को साफ करता और शरीर के समस्त विकारों को दूर कर बलवान बनाता है।

७०-गेंदा।

संस्कृत-पद्मचारिणी अतिचरा, अव्यथा, पद्मा, शारदा। गेंदा। गेंदे का फूल पीला, लाल और सफेद रंग का होता है।

वृक्ष दो हाथ से अधिक लम्बा नहीं होता। किसी के डंठल सुफेद और किसी के लाल रंग के भी होते हैं। गुण में सब एक समान हैं। मूत्रकृच्छ्र, पथरी, शूल, श्वास, और विष के विकारों में इसका अच्छा प्रयोग किया जाता है। यह कटु, तिक्त, कषाय और बात-पित्त का हरण कर्ता है। गेंदे के पत्ते का अर्क कान में डालने से कान का दर्द बन्द हो जाता है। जिस स्त्री

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

के स्तनों में अकारण अथवा खाग आदि से सूजन आ गई हो उसे गेंदे के पत्तों का रस मलना चाहिये।

७१—गोभी।

संस्कृत—गोजिह्वा, गोजिका, गोभी दार्विका, खरपिणनी। हिन्दी—गोभी। वंगला—गोजिया। मराठी—पाथरी। कर्नाटकी—यनुनालेग। गुजराती—यलजिभी, भोंपाथरी।

गोभी के पत्ते लम्बे होते हैं और पत्तों के बीच में एक बड़ा पीले रंग का बँधा हुआ फूल होता है जो शाक के काम आता है। गोभी का शाक प्रसिद्ध और उत्तम है।

यह बातल, शीतल, कफ—पित्त—नाशक और हृदय को हितकारी है। गोभी पाक में स्वादिष्ट और स्वाद में कषैली और कड़वी है। प्रमेह, खाँसी, रुधिर विकार, व्रण और ज्वर को भी दूर करती है।

७२—गोखरू।

संस्कृत—गोक्षुर, क्षुरक, त्रिकंटक, स्वादुकटक, गोकंटक, गोक्षुरक, वनश्रृङ्गाट। हिन्दी—गोखरू। वंगला—गोक्षुरी। मराठी—गोखरू। कर्नाटकी—दोड्नेग्गिलु। तेलङ्गी—पालेरु। गुजराती—गोखरू। अरबी—बजर, उलखलक। फारसी—तुख्म खारखसक।

गोखरू दो प्रकार का होता है। एक बड़ा और एक छोटा। इसके पत्ते इमली के समान छोटे-छोटे होते हैं और डालियों में रुआँ तथा थोड़े २ अन्तर पर गाँठे होती हैं। इन्हीं गाँठों पर से पत्ते और फूल निकलते हैं। फूल सौंफ के समान और पीले रंग का होता है। फल छोटे, गोल, तथा काँटेदार होते हैं। प्रत्येक फल की बाजू पर पाँच-पाँच कँगूर और उन कँगूरों पर दो-दो कीर तथा भीतर एक बीज होता है। गोखुरू शीतल, स्वादु,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बलकारक, बस्तिशोधक, मधुर, दीपक, शुक्रजनक, वायु-नाशक और पुष्टिबर्द्धक है। प्रमेह, पथरी, श्वाँस, खाँसी बवासीर और कठिन हृदय के रोगों को भी यह अच्छा कर देता है। आँख के प्रयोग में इसका पंचांग आता है।

(१) गोखुरू अधोपुष्पी, खरेंटी, दारुहल्दी, पृष्ट-पर्णी, इन्द्रयव, सलाई के फूल, बड़ के अंकुर, गूलर के अंकुर और पीपल के कोमल पत्ते सबको दो-दो टंक भर लेकर कूटकर चूर्ण बनाले। नित्य दो टंक चूर्ण का क्काथ बना कर पीने से बवासीर का रोग नष्ट हो जाता है।

(२) गोखुरू के क्काथ में जवाखार डालकर पिलाने से मूत्रकृच्छ्र का रोग अच्छा हो जाता है।

७३–ग्वारपाठा–(घी-कुवार)

संस्कृत-कुमारी, गृहकन्या, घृतकुमारिका। हिन्दी-घीकुवारकु, ग्वार-पाठा। बंगला-घृतकुमारी। मराठी-कोरकाड। गुजराती-कुचार। तेलगू-पिन्नगोरीटकलबन्द। फारसी-दरखतेसिब्र। अरबी-मुसव्वर। लैटिन-पलोय इण्डिका।

यह एक क्षुप जाति की बनस्पति है। जल के तट पर यह अधिक होती है। इसके पत्ते लम्बे और दोनों किनारे पर कँटीले होते हैं। पत्ते का सिर अनीदार होता है। इसका फूल लाल रँग का गुच्छेदार होता है और पत्ते के भीतर ही मोटे दल को सफेद और लुआब-दार मोटे दल का गूदा होता है जो बहुत ठण्ढा होता है। मस्तक की गर्मी में यह गूदा निकाल कर मस्तक पर रखा जाता है। गुल्म रोग, प्लीहा, कफ, ज्वर विस्फोटक, रक्त, पित्त और त्वचा के रोगों में इसका प्रयोग अत्यन्त

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लाभदायक होता है। घी-कुवार का गूदा और आमिया हल्दी के लेप से हर प्रकार की सूजन दूर होती है और इन्हीं दोनों के योग से दुखती हुई आँख का दर्द भी दूर होता है। नेत्र में चाहे जैसा भी दर्द हो ग्वारपाठे का केवल अर्क टपकाने से नेत्र की पीड़ा बन्द हो जाती है।

७४-घुय्याँ (अरुई)

संस्कृत-गजकर्णालु। हिन्दी-घुय्याँ, अरवो, आलू। मराठी—अलवाया, कादा। गुजराती—अलबो।

अरवी बलकारी, स्निग्ध कफनाशक और विष्टंभकर्त्ता है। तेल में बनाई हुई अरवी अरुचि को उत्पन्न करती है। इसके पत्ते चौड़े और गोल होते हैं। इसका सर्वाङ्ग काम में लिया जाता है। अरवी की भाँजी अच्छी होती है। इसको अजवायन से ही छौंकना चाहिये। यह धातु रोग और संग्रहणी के लिये अत्यन्त लाभदायक है।

७५-घुँघुची।

संस्कृत—काकदनी, काकपीलू, काकचिंची, काकनन्ती, काकवल्लरी। हिन्दी—घुँघुची, चिरमिठी, गुञ्जा, चोटलो। बंगला—श्वेतकुच, लालकुच। मराठी—गुञ्ज। कालिङ्गड़ा—गुलगुञ्जे, एरडु। गुजराती—चणोठी। तेलङ्गी-गुलविन्दे। फारसी-चश्मेखरुश। अरबी-हब्बशर्व। उड़िया-रुंज।

चिरमिटा दो प्रकार की होती है। एक लाल दूसरी सफेद। आकार प्रकार तथा गुण दोनों ही समान हैं। इसके पत्ते इमली के से छोटे छोटे और पतले होते हैं। इसका फूल सफेद और भूरे रङ्ग का होता है। फल बबूल के समान होते हैं। इसकी जड़ मुलहठी के समान मीठी होती है। बात पित्तज्वर, मुखशोष, भ्रमरोग, स्वास

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तृष्णा, मदात्य, नेत्ररोग, खुजली और कृमिरोग की औषधियों में इसका प्रयोग किया जाता है। औषधि में इसके जड़ पत्ते और बीज लिये जाते हैं। चिरमिटी के पत्तों को इलायची और मिश्री के साथ चबाने से आतशक का रोग दूर होता है। चिरमिटी के पत्तों को चबाने से निनावाँ और मुँह के छाले दूर होते हैं।

७६—चमेली।

चमेली को संस्कृत में राजपुत्रिका, चेतिका और हृद्यगन्धा, मालती और सुमुना कहते हैं। हिन्दी में चमेली।

यह क्षुप जाति का पौधा है। यह दो तरह की होती है। एक जाती और दूसरा सुवर्णजाती। जाती का फूल सफेद तथा सुवर्ण जाती का पीलापन लिये होता है।

दोनों प्रकार की चमेली गरम, कषैली, हल्की और दोषहरण कर्ता है। इसके द्वारा मस्तक और नेत्र की पीड़ा दूर होती है। विषजन्य रोग, कोढ़, बादी और रुधिर के दोष दूर होते हैं। यह चित्त को प्रसन्न करती है। इसके पीने से बात और कफ के विकार पाखाने के द्वारा बाहर निकल जाते हैं। यह लकवा और गठिया के लिये हितकर है। इसका लेप स्तम्भनशक्ति को बढ़ाता है। इसके पत्तों के काढ़े से कुल्ला करने से दाँतों और मुख की पीड़ा मसूड़ों की सूजन और मुँह के दाने अच्छे होते हैं। इसका तेल दिमाग को ताजा और ठण्डा करता है। चमेली का पत्ता या फूल, दोनों हल्दी, नीम का पत्ता और रसौत को गोबर के रस में पीसकर शिर में लेप करने से रतौंधी अच्छी हो जाती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

७७–चिरायता।

संस्कृत–किरात, निकत, कैरात, कटुतिक्त, किरातक, कांडतिक्त, नार्यतिक्त, भूनिंब, रामसेनक। हिन्दी–चिरायता, चिरेता। बंगला–चिराता। मराठी–किराइत। गुजराती–करी आन्तु। तेलगू–नेलानेमु। फारसी–कसबुअरीरा। अरबी–नेरनिहाद। अंगरेजी—चिरेटा।

चिरायता नैपाल देश में होता है। गुण में यह रुक्ष और शीतल तथा कडुवा और हल्का है। सन्निपातज्वर, श्वास, कफ, रक्त पित्त, दाह, खासी, कुष्ठ, ज्वर और कृमिरोग को नष्ट करने वाला है।

(१) चिरायता, गिलोय देवदारु, कायफल और बच को समान मात्रा में लेकर चूर्ण करे और उस चूर्ण को छदाम भर लेकर क्वाथ बनाकर पीने से बात और कफ का ज्वर नष्ट हो जाता है।

७८–चौलाई।

संस्कृत–तन्दुलीय मेघनाद, कांडेर, तंदुलेरक, भडीर, तंदुलीबीज, विषघ्न। हिन्दी–चाला (रा) ई। बंगला–नटेशाक। मराठी–तान्दुलजा। गुजराती–तांजलजो। तामिली–मुल्लुक्विरई। तेलगू–मोलाकुर। अंगरेजी–हार्मेफ्रोडाइर एमेरैन्थ।

यह क्षुप जाति का एक पौंधा है जो पृथ्वी पर फैला रहता है। यह गुण में शीतल, रुक्ष, पित्त कफनाशक, रुधिरदोष निवारक, अग्निकारक और विषनाशक है। उदर विकार के लिए चौराई का शाक अत्यंत लाभदायक है। अरुचि और पेट के भारीपन तथा गुड़गुड़ाहट को दूर करने के लिये चौलाई को खुचुल कर उसके चार तोले अर्क छः रत्ती सुहागा मिलाकर पीने से सब प्रकार के उदर रोग शान्त हो जाते हैं।

७९–छिरहिटा।

संस्कृत–छिलिहिट, छिलिहिंट, महम्मूल, पाताल गरुण। हिन्दी–छिरहिटा। बंगला–पातालगरुणी। मरपाठी–तानीचावेल। तेलङ्गी–वानबेल,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वासनी, वासन पएडा। कर्नाटको–पीताळगरुणी निबली, चावेल, भुइपाडळ और सीता। गुजराती–पाताल तुंवडी।

छिरहिटा की बेल गिलोय की बेल की तरह होती है गुजरात में यह छोटे छोटे बालकों के लिये उपयोग में लायी जाती है। यह बलकारक, बात नाशक और कफघ्न होती है। इसकी लता का समस्त अंश काम में लाना चाहिये। इसका प्रयोग दो माशे की मात्रा में होता है। इसके पत्ते का आकार सीसम के पत्ते के समान ही होता है और गुण में भी यह वैसाही लाभदायक है।

८०–छुई–मुई।

संस्कृत–लज्जावन्ती और लज्जालु। हिन्दी–छुई-मुई। बंगला–लाजुक, लज्जावती। मराठी–लाजरी। गुजराती–रिशामणी।

इसके दो भेद हैं। एक पीली, दूसरी लाल। दोनों के वृक्ष और पत्तों की यह प्रधानता है कि वे छूते ही मुरझा जाते हैं। रविवार के दिन इसका वृक्ष उखाड़ कर कमर में बाँधने से आँत का उतरना बन्द हो जाता है। इसकी लुगदी से मूँगा और सिंगरफ का भस्म बनता है।

८१–जँभीरी।

संस्कृत—जंबीर, दन्तशठ, जम्भ और जम्भल। हिन्दी—जँभीरी। बंगला—गोड़ा लेबू और कागजी लेबू। मराठी—लघुईडनिंबु। कलिङ्गड़ा—कचील।

यह एक क्षुप जाति का पौधा है जो गरम, भारी खट्टी, बात, कफ, और विषघ्न को दूर करता है। शूल खाँसी, वमन, तृषा और आम के दोष को हरण करता है। मुख की किरसता, हृदय की पीड़ा, मन्दाग्नि और क्रृमि रोग में अचूक लाभ पहुँचाता है। इसी प्रकार

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

छोटी जँभीरी में भी गुण हैं। विशेषता यह है कि यह तृषा और वमन होने को दूर करती है।

८२-जमाल गोटा ?

संस्कृत-जयपाल, दन्तबीज, तन्तिलो फल। हिन्दी—जमालगोटा, अजेपाल। बंगला-जयपाल। मराठी—जपाल। कर्नाटकी जेवाल। गुजराती-नेपालो। अरबी-हब्ब सलातीन। फारसी-तुख्मबेदअञ्जीर। अंगरेजी-क्रोटनसीड। लैटिन-ओलियम क्रेटोनिस।

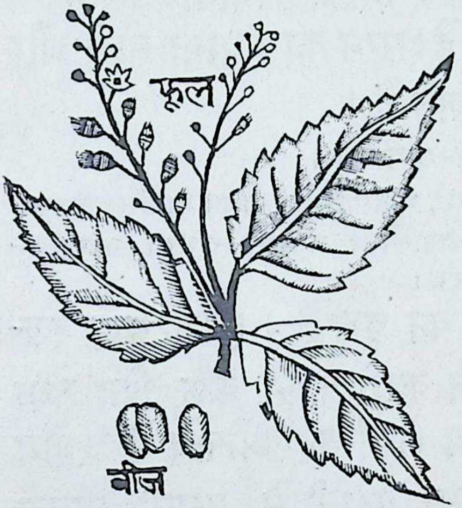

जमालगोटा, भारी चिकना, दस्तकारक और कफ पित्त का हरण करता है। इसका बीज हरी औषधि के काम में लाया जाता है और वह भी शुद्ध किया हुआ होना चाहिये। हकीम लोग जमाल गोटे से कोठे में सूजन उत्पन्न होने के कारण इसका देना बर्जित करते हैं। कदाचित किसीने भूल से खा लिया हो तो उसका दर्पनाशक इसकी छाल तथा केवल घृतपान कहा गया है। जमालगोटे के दश टंक बीज, १ टंक काली मिर्च और एक टंक पिपलामूल--इन तीनों को जँभीरी नीबू के रस में ७ दिन खरल करके नेत्रों में लगाने से नेत्र रोग शांत होता है।

८३-जमींकन्द

संस्कृत-सूरण, कंद, ओल, कंदल। हिन्दी-सूरन, जमींकन्द, ओल। बंगला-ओल। मराठी-सूरण। तेलगू-मंचाकन्दा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यह दीपन, रुक्ष, कषैला, खुजलीकर्त्ता, चरचरा विषद रुचिकारी, कफ, बवासीर को नष्ट कर्त्ता और हल्का है। यह विशेष करके बवासीर रोगका पथ्य है। पील्हा और गोले के रोगों को नष्ट करता है। सब कन्दों के सागों में सूरण अच्छा है। दाद, कोढ़, और रक्त पित्त रोगियों के लिये हितकर नहीं है। इसका संधाना डालने से अधिक गुणकारी होता है। सूरन का संधाना सोरों और फीजी द्वीप में बहुत डालते हैं।

८४-जवासा।

संस्कृत—यास, यवास, दुस्पर्श, धन्वमास कुनाशक। हिन्दी—जवासा। बंगला—यवासा। गुजराती—जवासो। अंगरेजी—हाज। फारसी—सुत्तर। लाटिन—अलहागीमोरोरम।

यह एक क्षुप जाति का वृक्ष है। इसका गुण बल-कारक, अग्नि को दीपन करने वाला, कफ, पित्त तथा रक्त, खाँसी, ज्वर, अन्य रोगों की औषधि में प्रयोग आता है। गर्मी से उत्पन्न पुरानी से पुरानी मस्तक पीड़ा को दूर कर देता है। पेसाब अधिक लाता है, मूत्रकृच्छ्र (सूजाक) को लाभ पहुँचाता है। इसका सुर्मा नेत्रों की जाला को लाभ दायक है। इसका तेल गठिया के लिये अत्यन्त हितकारी है।

८५-जामुन।

संस्कृत—क्षुद्राजंबू, सूक्ष्म पत्रा, नादेयी और जलजंबूका ये छोटी जामुन के नाम हैं। बंगला—जाम। मराठी—जांबूल। गुजराती—जाम्बू अंगरेजी—जाम्बूल।

जामुन दो प्रकार की होती है। एक कठ जामुन होती है जिसके पत्ते कनेर के समान लम्बे और मोले

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

के समान होते हैं । दूसरी महा जामुन (फरेंद) के पत्ते मोटे और उससे कुछ छोटे होते हैं । इस वृक्ष में गुच्छा पुष्प और गुच्छा फल होता है । जामुन संग्राही, रूखी, कफ, रुधिर और दाह को दूर करती है । जामुन का गुठली, आमकी गुठली, अजमोद, मोचरस और धावड़े के फूल तथा इन्द्र जौ के २ टंक चूर्ण को भैंस के मट्ठे में मिलाकर पीने से पक्वातिसार नष्ट होता है ।

८६–जायफल ।

संस्कृत—जातिफल, जातिकोष, मालतीफल । भारतवर्ष की समस्त भाषाओं में इसे जायफलही कहते हैं ।

जायफल ।

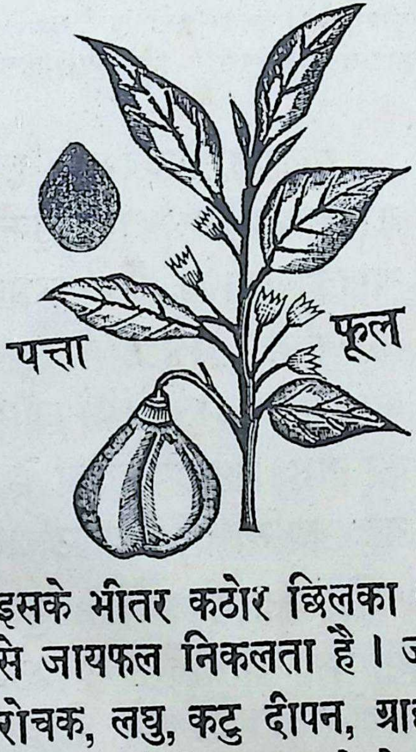

जायफल का वृक्ष बड़ा होता है । इसके फल जामुन के समान होते हैं । इसकी छाल निकाल डालने से लाल गुच्छा निकलता है, उसी को जावित्री कहते हैं । थोड़ी देर में ही इसका रङ्ग पीला हो जाता है। इसके भीतर कठोर छिलका बीज होता है जिसे तोड़ने से जायफल निकलता है । जायफल कड़वा, तीक्ष्ण, रोचक, लघु, कटु दीपन, ग्राही और स्वर शोधक है । जायफल के सेवन करने से बादी, कफ, कृमि, खाँसी,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वमन, श्वाँस, शोष, पीनस और हर रोग दूर होते हैं। मात्रा दो माशे की है। प्रतिनिधि जायपत्री।

(१) जायफल, सोंठ, काली मिर्च, पीपली, तज पत्रज, इलायची, लौंग, वंशलोचन, कपूर और अनारदाना को पीस कर सबके तुल्य कान्तिसार तथा इन सबके तुल्य मिश्री मिला देने से गगनापास चूर्ण बनाया जाता है। इसे दो टंक प्रतिदिन बकरी के दूध के साथ खिलाने से राजरोग, मन्दाग्नि, तथा बीस प्रकार के प्रमेह दूर हो जाते हैं।

८७–जेठी मधु (मुलहठी)

संस्कृत–यष्ठोमधु, यष्ठीमधुक, क्लीतक, डपमधूलिका। हिन्दी–मुलहठो, मुरहठो, मीठो लकड़ी। तेलङ्गी–यष्ठीमधूकमु। बंगला–यष्ठोमधु। मरहठी–जेठीमध। गुजराती–जेठोमध। फारसी–रब्बुलसुस। अरबी–बेखमहक। अंगरेजी–लिकिरिस रूट।

मुलहठी शीतल भारी नेत्रों को हितकारी, बलकारक, शुक्रोत्पादक, बलबर्धक और स्वरभंग नाशक है। मुलहठी के सेवन करने से व्रण, सूजन और खाँसी का रोग नष्ट हो जाता है। यह कान्तिकारी, कण्ठहितकारी, दाह–प्रशमन–कर्ता और रक्तशोधक है। मुलहठी के सेवन करने से खाँसी चली जाती है। मुलहठी, काली तिल्ली, भैंस का दूध और मक्खन को पीसकर लेप करने से भिलावे की सूजन नष्ट हो जाती है। शीत

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

के कारण यदि पेट में पीड़ा होती हो तो मुलहठी, का क्वाथ देना हितकारी होता है। नेत्र तेज को बढ़ाने के लिये मुलहठी के रस की बूँद नेत्र में डालना चाहिए और यदि मस्तक में फोड़े हो गए हों तो मुलहठी के पत्तों की पुल्टिस बाँधनी चाहिए।

८८—तज।

संस्कृत—त्वक्पत्र, वरांग, भृंग, चोंच, उत्कट। हिन्दी—तज।

दालचीनी की मोटी छाल को तज और बारीक छाल को दालचीनी कहते हैं। गुणमें यह हल्की, उष्ण, कटु, स्वादु, तिक्त, रुक्ष तथा पित्तकारक है। इसके प्रयोग से कफ वादी खुजली, आम, अरुचि हृद्रोग, वात और कृमिरोग दूर होते हैं।

(१) तज एक टंक, बंशलोचन ८ टंक, पीपली चार टंक और इलायची दो टंक तथा मिश्री का चूर्ण १६ टंक सबको चूर्ण कर मधु और मक्खन के साथ चटाने से ज्वर, श्वास कास पार्श्वशूल, मंदाग्नि, और रक्त पित्त के रोग नष्ट होते हैं।

८९—तिल।

संस्कृत—सवर्ण्य। हिन्दी—तिल। मराठी—तील। गुजराती—तल। तैलगू—नुव्बुलु। अरबी—सिमसिम। फारसी—कुंजद। अंगरेजी—सिसेम नेजरसीडम्।

तिल तीन प्रकार के होते हैं। काला, सफेद और भूरा। इसका गुण कटु, तिक्त, मधुर और कषैला है। यह कफ पित्त का नाश करने वाला, बलकारी तथा बालों को हितकारी है। स्पर्श में शीतल और त्वचा को स्वास्थ्य-रक्षक, स्तनों में दूध लाने वाला अल्पमूत्र कारक,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ग्राही, बातनाशक और अग्निकारक है। तिलों में काला तिल सबसे उत्तम है। सुफेद मध्यम और शुक्रकर्ता है। भूरा तिल हीन गुण वाला है। इसमें केवल वीर्य बढ़ाने की एक विशेषता है। तिल्ली को पीसकर कांजी में पकाते समय कुछ तेल डालकर पोटली बनाकर सेंकने से कैसा भी शूल हो तत्क्षण लाभ पहुँचता है। छः मासा तिल को कूटकर गोली बना ले और दो तोला मक्खन में रखकर एक एक गोली १५ दिन तक नित्य खाने से खूनी बवासीर में लाभ पहुँचता है। सोंठ, बिनौला, काला तिल ६, ६ मासा कूट पीसकर गौ के मूत्र में पकाकर नीम गरम करके मलने से अण्डकोषों का बढ़ना बन्द हो जाता है। अथवा तम्बाकू को ही गरम करके बाँधने चाहिए।

९० तुलसी।

सं०—तुलसी, सुरसा, ग्राम्या, सुलभा बहुमंजरी, अपेतराक्षसी, गौरी देवदुंदुभि। हिं०--तुलसी। म० तुलसा। फा०-रेहन। लै०-ओसिममसालवम्

तुलसी—कटु, तिक्त, उष्ण, दाहकारी, पित्तजनक तथा दीपन है। कोढ़, मूत्रकृच्छ्र, रक्तदोष, पार्श्वपीड़ा, कफ़ और वायुनाशक है। तुलसी के पत्ते पीसकर औटाने के बाद लेप करने से मेदे की अण्डवृद्धि नष्ट हो जाती है। इसका वृक्ष हाथ दो हाथ से अधिक लम्बा नहीं होता। यह दो प्रकार की होती है। एक श्यामा दूसरी हरी। श्यामा प्रायः जंगलों में उत्पन्न होती है। और हरित प्रायः पवित्र गृहस्थों के घर और पुष्प बाटिकाओं में लगी होती है। तुलसीपत्र, जौ, कनेर की छाल

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सहजन की जड़, सहजन का बीज और इन्द्रयव को गौ के मट्ठे में महीन पीसकर लेप करने से अर्बुद रोग नष्ट होता है।

९१-तूत।

सं०—तूत, स्थूल, पूग, क्रमुक, ब्रह्मदारु। हिन्दी तूत, सहतूत। बंगला-तूत। मरहठी-तूते। अंगरेजी-मलबरी।

पकी हुई तूत भारी, स्वादिष्ट, शीतल, पित्त और बादी को नष्ट करने वाली है। पर कच्ची तूत-भारी, दस्तावर, खट्टी, गरम और रक्त-पित्त को नाश करने वाली है। तूत के फलों का अर्क पीने से गरमी का रोग अच्छा होता है। और तूत के नरम पत्ते तथा चोंकर की पुल्टिस गरम कर फोड़े पर बाँधने से फोड़ा अच्छा हो जाता है। तूत खाने से बात विकार नष्ट होता है।

९२-त्रिफला।

हरड़, बहेड़ा और आमला तीनों को त्रिफला कहते हैं। त्रिफला का चूर्ण मधु या मिश्री के साथ चटाने से पित्तगुल्म नष्ट होता है। त्रिफला का चूर्ण मधु या घी के साथ देने से शूल रोग नष्ट होता है। जिसके हाथ और पाँव के तलुओं में जलन हो, रात को नींद न आती हो, भोजन करने में अरुचि हो उसे चाहिये कि त्रिफला और नीम की गुर्चें को किसी मिट्टी के पात्र में रात भर भिगो छोड़े। प्रातःकाल होने पर उन तीनों को खूब मसल मसल कर छान ले। पुनः आधा अर्क तो पी डाले और आधे से हाथ पाँव और मस्तक को धोवे। दस दिन ऐसा करने से उपरोक्त सभी विकार नष्ट हो

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जायँगे। त्रिफला नेत्र-ज्योति को बढ़ाता और प्रमेह रोग को भी शान्त करता है।

६३-थूहर।

संस्कृत-सेहुंड, स्नुही, गुडा। हिन्दी-थूहर सैंहुड। बंगला-सिजवृत्त, मनसाबाछ। मराठी-निवडुङ्ग, साबर। गुजराती-थोर। कर्नाटकी-निवडुङ्ग। तैलङ्गी-चेमुण्डु। फारसी-लादनाम। अरबी-जकुम्। अंगरेजी-गुफोर्ब्या।

थूहर का वृत्त कटीला होता है। इसमें से श्वेत रंग का किन्तु गाढ़ा दूध निकलता है जो अनेक औषधियों के प्रयोग में लाया जाता है। इसमें एक प्रकार की गंध होती है। यह कटु, स्वादु, तिक्त, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, मेधा-शक्ति-बर्धक, कृमिनाशक, रुचिकारी और शुक्र-प्रगट-कर्ता है। इसका वृत्त अधिक से अधिक ८, १० हाथ लम्बा होता है। इसके पत्तों को बकरियाँ अधिक खाती हैं और कान की पीड़ा में गरम करके इसके पत्तों का रांग तथा भुनी हुई कौड़ी का चूर्ण डाला जाता है। अबोध बालक को खाँसी और दस्त, दुर्बलता और सर्दी होने पर माताएँ थूहर के पत्तों के रांग में अपने स्तन का दूध और राई भर हींग मिलाकर पिलाती हैं। इससे बच्चे प्रसन्न रहते हैं। थूहर के दूध में पीपल या हर्रे को तीन दिन भिगो कर सुखा लेना चाहिये। इसका दो टङ्क चूर्ण दस दिन सेवन कराने से सन्निपात रोग दूर हो जाता है। थूहर के दूध तथा किरमाले के गूदे के रस में नीला थोथा, गन्धक, पीपल की छाल का चूर्ण पाँच दिन खरल करके गरम जल के साथ नित्य एक मासे का सेवन करने से जलोदर रोग अच्छा होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

९४–दशमूल।

एक प्रकार की औषधियों के योग को दशमूल कहते हैं। उनके नाम ये हैं–शालपर्णी, पृष्टपर्णी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, गोखुरू खम्भारी, पाडर, अरणी और स्पोनक। दशमूल त्रिदोष को नष्ट करने वाला है। श्वाँस, खाँसी, मस्तक रोग, तन्द्रा, सूजन अफरा और अरुचि रोग में भी प्रयोग किया जाता है। यह गुण में हल्का, बलकारी, सुस्वादु, बात–पित्त नाशक और पुष्टिदा है। दशमूल रास्ना, आँवला, खश, घमासा, गुरच, धनियाँ और नागरमोथा का क्वाथ पिलाने से बादी की बवासीर अच्छी हो जाती है।

९५–दाख।

संस्कृत–स्वादुफला, द्राक्षा, मधुरसा। हिन्दी–दाख। गुजराती–ध्राख। तामिली–कोडिमंडिरिष्पभाम। अंगरेजी–ग्रेषरोफ्रिन्स। लैटिन–वाइटिस्, विनीफोरा।

पक्की दाख–शीतल, दस्तावर, नेत्र हितकारी, पुष्टिकारी, भारी, स्वादु, स्वर-सोधक, मूत्रकारक, कफकारक, पुष्टिकर तथा ज्वर, श्वास, कामला, रक्त–पित्त–प्रमेह दाह और शोथ आदि रोगों को नष्ट करता है। कच्ची दाख–अल्प शक्तिवाली, भारी, खट्टी और रक्त पित्त रोगोत्पादक है। दाख, किसमिस और मुनक्का के ही समान गुणकारी है।

(१) दाख, चन्दन, लोद, गोदिनी के पुष्प को पीस कर मधु के साथ १० दिन सेवन करने से सब प्रकार के रक्त पित्त रोग नष्ट हो जाते हैं। रक्त–स्राव बन्द हो जाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(२) दाख, गिरी, धनिया, कुटकी, नागरमोथा, पिपलामूल, सोंठ और पीपल के चूर्ण में छदाम भर का क्वाथ १० दिन तक पिलाने से कफ-पित्त ज्वर, शूल, भ्रम, मूर्छा, अरुचि और उल्टी के रोग दूर होते हैं।

६६-दुद्धी।

संस्कृत-दुग्धिका, स्वादुपर्णी, क्षीरा, अविक्षीरिणी। हिन्दी-दुद्धी, दूधी, दुधिया। बंगला-क्षीरुई। मराठी-दुधी, खिलकुला। गुजराती-दुधेली, नागार्जुनी।

दुद्धी दो प्रकार की होती है। एक के डंठल लाल, पत्ते भूरे और दूसरी के डंठल और पत्ते दोनों हरे रङ्ग के पृथ्वी में फैले हुए रहते हैं। पत्ते छोटे २ और अनीदार होते हैं। उसकी शाखाओं और पत्तों में भी दूध होता है। गुण में यह कफ को शान्त करती और कोढ़, पाँव की बेवाई, सूजाक कृमिरोग और तिजारी रोग को हितकर और मूत्रकृच्छ्र को भी दूर करने वाली है।

६७-दूब।

यह दो प्रकार की होती है। एक हरी और दूसरी श्वेत। संस्कृत में इसे श्वेतदूर्वा, गोलोमी और शतवीर्या कहते हैं। हिन्दी-सफेद दूब। मराठी-पांढरी, हरियाली। गुजराती-धोलीध्रो।

दूब कषैली, स्वादु, बलकारक, जीवन शक्ति वर्द्धक, कड़वी और शीतल है। रुधिर दोष और तृषा को हरण करती है।

(१) दूब, हर्र की छाल, सेंधा नोन, पवारे के बीज कनेर की छाल, इन सबको काँजी या छाछ में पीसकर लेप करने से दाद खाज और खुजली दूर होती है।

(२) दूब, काली मिर्च, छोटी इलायची और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मुलहठी को समान भाग में लेकर सात दिन तक पीने से बवासीर के रोग में पर्याप्त लाभ पहुँचता है।

(३) हरी दूब को लाकर पानी में खौलाकर, भपारा देने से बवासीर की पीड़ा शान्त होती है।

९८-देवदारु।

संस्कृत-दारुगंधा, गंधमादिनी, तरुणी, तारा। हिन्दी-चीढ़, देवदारु।

यह एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष है। यह स्वाद में चरपरा होता है और खाँसी तथा कफ पित्त दोष और परिश्रम को दूर करता है। देवदारु, कायफल, भारंगी, नागरमोथा, धनियाँ, पित्तपापड़ा, हर्र की छाल, सोंठ, केवांच की जड़ को समान भाग में चूर्ण कर दो टंक भर का क्वाथ पिलाने से बात, कफ़, ज्वर, खाँसी और सूजन नष्ट होता है।

९९-धतूरा।

संस्कृत-धत्तूर, धूर्त, धुत्तूरा, उन्मत्त, देवता, महामोही, शिवप्रिय, मातुल, मदन। हिन्दी-धतूरा। बँगला-धुतूरा। मराठी-धोतरा। का०-मद-कुणिके। तैलगू-नाल्लाउम्मोते। अरबी-जोजअलसिल। फारसी-तातूरह। अंगरेजी-इस्ट्रेमूनियम।

धतूरे का वृक्ष अधिक से अधिक दो ढ़ाई हाथ का ऊँचा होता है। फूल सफेद और लम्बे आकार के होते हैं। धतूरा पाँच प्रकार का होता है। सबके फूलों का रङ्ग भिन्न२ होता है। किन्तु फल सबके एक समान गोल और काँटेदार होते हैं। धतूरामादक, अग्निकारक, बातजनक, कड़ुवा, कषैला, गरम, विषनाशक, पीड़ा निवारक, निद्रा-कर्ता और मूत्रवर्द्धक है। धतूरे को पीस कर नेत्र के ऊपर चारों ओर लेप करने से नेत्र का तारा फैलता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(१) धतूरे का बीज और जवाखार को कड़ुवे तेल में पकाकर बिवाई पर मलने से वह अच्छी हो जाती है।

(२) धतूर, मजीठ, गोखुरू, चमेली का पत्ता, करियाली, लोद, खैरसार और मुलहठी के क्वाथ में कड़ुवे तेल को पकाकर उस तेल का कुल्ला करने से मसूड़े के समस्त रोग अच्छे होते हैं।

(३) धतूरे का बीज हल्दी, साँभर नोन और तिल्ली को जल में महीन पीस कर इन सबके बराबर गौ का मक्खन और इससे चौगुना गौमूत्र सबको इकट्ठा करके आँच से पकाओ। जब जल और औषधियाँ जलकर घी मात्र ठीक रह जावे तब उसे छान कर पैर के तलुओं में मर्दन करो तो पैर का फूलना बन्द हो जावे।

१००—पीपल।

संस्कृत—पिप्पली, मागधी, कृष्णा, वैदेही, चपला, कणा, शौंडी, कोला और तंडुला। हिन्दी—पीपल, पीपर। बंगला—पिपुल। मराठी—पिंपली। कर्नाटकी—पिप्पली। गुजराती—लिंडी, पीपल, पीपर। तैलगू—पिप्पलु। फारसी—फिलफिलदराज। अरबी—दारफिलफिल। अंगरेजी—लांग पेपर।

यह एक गुल्म जाति की औषधि का फल है। मालव आदि देशों में अधिक होती है। पंसारियों के यहाँ मिलती है। यह दो प्रकार की होती है। एक छोटी, दूसरी बड़ी। छोटी पीपर अधिक गुणकारी होती है। पीपल अग्निदीपनकर्ता, बलकारक तथा पाक में मीठी है। इसका स्वाद चरपरा है। यह स्निग्ध, बात और कफ को हरण करनेवाली तथा हल्की होती है। दस्तकारक, श्वास, खाँसी और उदर रोग को नष्ट करती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(१) पीपल के चूर्ण को शहद में मिलाकर खाने से मेद कफ, श्वास, खाँसी और ज्वर दूर होते हैं।

(२) पीपल के चूर्ण को गुड़ में मिलाकर खाने से जीर्णज्वर, मन्दाग्नि, खाँसी, अजीर्ण, हृदयरोग, पाण्डु और कृमिरोग दूर होते हैं, पर गुड़ पुराना होना चाहिये।

(३) पीपली का चूर्ण मधु के साथ खाने से नष्ट हुई निद्रा फिर आ जाती है।

यह वीर्य को बढ़ाती, दाह और ज्वर को दूर करती दमा, रक्त अतिसार, प्यास और वमन को रोकती तथा बात, रक्त और फोड़ों को लाभदायक है।

१०१–पुनर्नवा–गदहपुर्ना ।

संस्कृत–श्वेत पुनर्नवा, श्वेतमूला, दीर्घपत्रिका, शोथघ्नी, । हिन्दी–विषखपरा । बंगला–श्वेतपुनर्नवा । मराठी–पुनर्नवा । गुजराती–साटोडी ।

इसकी कई जातियाँ होती हैं, जैसे सफेद, लाल तथा नीला । इनमें सफेद फूल वाले को विषखपरा और लाल फूल वाले को साँठ या गदहपुर्ना कहते हैं। इसके पत्ते चौलाई के शाक के समान एवं गोल पर लाल किनारेदार होते हैं। यह कंकरीली और पथरीली जमीन पर अधिकता से उत्पन्न होती है। यह प्रसर जाति की बनस्पति है तथा इसका क्षुप पृथ्वी पर फैला हुआ होता है।

यह कटु, किंचित मात्र कषैली, अत्यन्त अग्निकारक और वायु नाशक होती है। पांडुरोग, शोथ, वायुवृद्धि, कफाधिक्य, उदररोग, खाँसी, हृदयरोग, बवासीर और शूल रोगों को यह नष्ट करती है। इसका समस्त अंग प्रयोग में लेना चाहिए।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यह तो हुस्ना श्वेत पुनर्नवा का वर्णन है। रक्त पुनर्नवा को संस्कृत में रक्त पुष्प, शोथघ्नि, वृषकेतु और कपिल्लक कहते हैं। हिन्दी-साँठ, गदहपूर्ना। मराठी-तावड़ी थेंट्ठली। गुजराती-राती। बंगला-लाल पुनर्नवा साटोडो।

इसका फूल लाल रंग का होता है। यह कड़वी, पाक में चरपरी, शीतल, हल्की, बात कर्त्ता और ग्राही होती है। यह कफ और रक्त पित्त को दूर करती है। इसका भी सारा अंग प्रयोग में लाया जाता है। मात्रा दोनों की बराबर है।

इसके अतिरिक्त जो नीली पुनर्नवा होती है। वह भी गुणमें कड़वी, चरपरी, गरम और कसायनी होती है। हृदय-रोग, पांडुरोग, श्वास बादी और कफ को हितकारी है।

पुराने विषखार की छाल तथा जड़ को घिसकर शहद में मिला आँख की फूली पर लगाने से अधिक आँसू गिरना रुक जाता है। बकरी के दूध में घिसकर लगाने से आँखों पर का केश गिरना बन्द होता है और वहाँ के केश फिर उग आते हैं।

पुनर्नवा की जड़ को भंगरा के रस में घिसकर लगाने से मोतियाबिन्द शान्त रहती है। पहले हर्रे घिसकर फिर विषखपरा की जड़ घिसकर उसमें मिलाकर लगाने से तिमिर रोग शान्त हो जाता है।

साँप के काटे प्राणी को विषखपरा का रस तुरन्त पिला देना अत्यन्त लाभकारी है।

विषखपरा के पत्ते नमक मिलाकर खाने से वायु-गोला अच्छा होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१०२–फालसा ।

संस्कृत–परूषक, परुष, अल्पास्थि, परापर । हिन्दी–फालसा । बंगला–फलसा । का०–चेद्हा । तैलङ्गी–पुटको । अंगरेजी–एशियाटिक ग्रे विया ।

फालसे के वृक्ष मध्यम आकार के होते हैं । इसके पत्ते बड़े पर बेल के समान एक–एक डाली में तीन–तीन लगते हैं । फल दो तीन एक साथ लगते हैं जो बचपन में हरे और पकने पर ऊदे रंग के हो जाते हैं ।

कच्चे फालसे कषैले, खट्टे, पित्तकर्ता, कफनाशक तथा हल्के होते हैं । पके हुये फालसे पाक में मधुर, शीतल, वृष्टंभी वृंहण और हृदय के प्रिय होते हैं । ये रुचि को बढ़ाते तथा पित्त को नाश करते हैं । मुसलमानी वैद्यों के मतानुसार फालसा, दिल, मेदा और जिगर के लिये हितकारी होता है । गर्म प्रकृति वालों के लिये यह गर्मी के दस्तों और वमन को दूर करता है । हिचकी और प्यास को शान्त करता है । ज्वर की गर्मी को दबाता है । छाती में दाह और पेशाब की जलन को मिटाता, सूजाक को अच्छा करता, पागलपन और छाती के धड़कन को शान्त करता है । इसके जड़ की छाल को टुकड़े २ करके सन्ध्या को जल में भिगो कर प्रातः में छान कर पीने से पेशाब की जलन और पीड़ा का नाश करता है ।

१०३–धनियाँ ।

संस्कृत–धान्यक, धानक, धान्य, धाना, धेनिक । हिन्दी–धनियाँ । बंगला–धनियाँ । मराठी–धणे, कोंकोथिंवया । तैलङ्गी–कोथमीलू । गुजराती–धाणा । फारसी–कजबुर, कशनीजा, अरबी–तुख्मे कसनीज । अगरेजी–कोरीएन्डर फ्रूट ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यह एक क्षुप जाति का पौधा है जिसका गुण-कषैला, चिकना, मूत्रकारी, और वमन तथा कृमिरोग नाशक है। त्रिदोष, ज्वर, तृषा, दाह, बमन, श्वास, खाँसी और कृशरोग में भी इसका प्रयोग लाभप्रद है। पित्त का तो मानो शत्रुही है। धनियाँ, आँवला, अडूसा, दाख और पित्तपापड़ा को जल में भिगो कर ठंडाई के समान पीस डाले और ४ टंक छान कर पिलाने से रक्त-पित्त-ज्वर दाह और प्यास सब दूर होता है।

१०४-नागरमोथा।

संस्कृत-मुस्तक, मुस्त, क्रोड़, कसेरुक। हिन्दी-मोथा, नागरमोथा। बंगला-मुथा। गुजराती-मोथा। कर्नाटी-भद्रमुस्त। तैलगू-तुगमुस्त। फारसी-मुश्क जमीन।

मोथा ठंढी जमीन में होता है। एक प्रकार का हरित तृण है। इसकी कई जातियाँ होती हैं। परन्तु सबमें श्रेष्ठ नागरमोथा है। इसका पौधा ३ फीट से अधिक लम्बा नहीं होता, ऊपर के सिरपर लम्बे पत्ते और लाल तथा भूरे रंग के फूल होते हैं। पथरी को तोड़ने, मुँह और शरीर की दुर्गन्धि को दूर करने, बुद्धि को बढ़ाने और मैथुन शक्ति का उत्तेजित करने तथा मेंदा और पट्ठों को बलिष्ट बनाने में यह प्रधान गुण रखता है। इसका मंजन दाँतों को सुदृढ़ और चित्त को प्रसन्न करता है। यह शीतल, कफ नाशक, पित्त ज्वर, अतिसार, अरुचि, प्यास और दाह तथा श्रम को भी दूर करता है। गुण में शीतल, कड़वा, कषैला, चरपरा, क़ांतिबर्द्धक विषघ्न और कफनाशक है। रक्त-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पित्त, कोढ़ और खुजली में भी इसका प्रयोग लाभदायक है। नागरमोथा, त्रिफला, लोद, मुलहठी और मिश्री को शीतल जल में पीसकर धोने से रक्तज नेत्र रोग नष्ट होता है।

१०५–नारियल।

संस्कृत-नारिकेर, दृढ़फल, लांगली, कूर्चशोर्षक, तुङ्ग, स्कन्धफल, तृणराज, सदाफल। हिन्दी–नारियल। मराठी–नारलमाड। गुजराती–नालीएर। तैलगू–टेंकाया। का०–रमु। उड़िया–नड़िया। तामोली-टेन्ना। अंगरेजी–कोकोनट। अरबी–नारिजिल। फारसी–जोजहिन्दी।

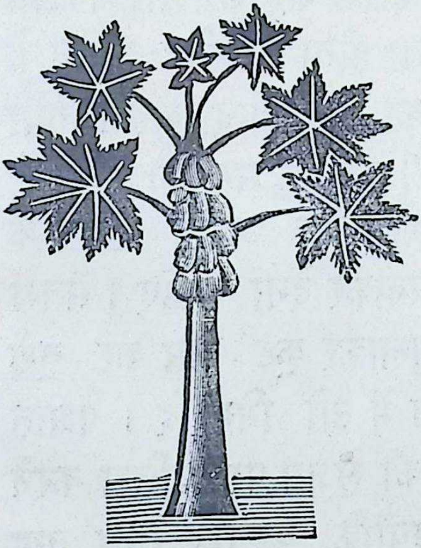

नारियल का वृक्ष ताड़ के बराबर ऊँचा होता है। इसके पत्ते दो फुटसे लेकर चार फुटतक लंबे सामने सामने होते हैं। फूल, जैसे गेहूँ की बाल में से गेहूँ फूट कर निकलते हैं। किन्तु वह तीन पँखड़ियों वाला होता है और उसके भीतर स्त्री केसर होती है। फल के बाहर कठोरता और बीच में एक गिरी होती है जिसमें जल भरा रहता है। नारियल की गिरी शीतल, दुर्जर, वस्तिशोधक, बलकारी, बात, पित्त रुधिर और दाह रोग को हरण करने वाली है। पित्तदोष में तो यह अचूक लाभ पहुँचाती है। किन्तु पुरानी गिरी भारी, पित्तकर्ता विदाही और विष्टम्भ है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१०६—नारंगी।

संस्कृत—नारङ्ग, नागरङ्ग, त्वक्सुगन्ध, मुखप्रिय। हिन्दी—नारङ्गी। मराठी—नारङ्ग। कर्नाटी—माधवला। तेलगू—दयाकाया। तामिली—किच्चिलि। उड़िया—नारङ्गी। अरबी—नारंज। अंगरेजी—आरेंज। लैटिन—सादट्रमओरेंटियम

यह एक क्षुप जाति का पौधा है जिसके पत्ते नीबू के समान और फूल सफेद रंग के पाँच पँखाड़ियों वाले होते हैं। नारंगी मधुर, खट्टी, दीपन और वातनाशक है। इसकी छाल को हकीम लोग गरम कहते हैं। पर इसका रस खट्टा होने के कारण शीतल और मिठास के कारण ठंड पहुँचाने वाला होता है। पित्त—प्रकोप के कारण आने वाली वमन को यह बन्द करती तथा पाचन-शक्ति को बढ़ाती है। वमन के समय जब नारंगी का रस दिया जाय तो पहले खाँड़ अथवा शहत के साथ मिलाकर थोड़ी देर रखकर देना चाहिए। संतरा और नीबू की छाल को सुखाकर कूट पीस कर चूर्ण कर ले और पुनः मीठे तेल में उसे भिगो दे। पश्चात निचोड़ कर वह तेल सर्दी की सूजन पर मालिश करने से विशेष लाभ होता है क्योंकि यह तेल गरम तथा रूखा है। फूल और पत्तों में भी इसी प्रकार तेल निकलता है, उसका भी गुण वैसा ही होता है।

नारंगी की छाल खाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं। पित्त की अधिकता के कारण दर्द करता हुआ मस्तक और वमन के लिए नीबू का रस अचूक लाभ करता है। रक्तदोष में नारंगी अत्यंत लाभदायक है। नारंगी की छाल का चूर्ण, मग्नेशिया और श्वेत चीनी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

का शीरा इन तीनों को मिलाकर देने से सन्धिवाद का दर्द और बद्हज्मी दूर होती है। नारंगी के अर्क में सेंधा नमक, कालीमिर्च पीसकर पीने से पित्त और दाह शान्त होता है। नारंगी का अर्क ४ तोला सफ़ेद इलायची ५. मिश्री १ तोला पीसकर देने से पित्तजनित दाह शान्त हो जाता है। पुराने नासूर पर नारंगी का गूदा सेंककर बाँधने से घाव शीघ्र भर जाता है। कपड़ों में संतरा का फल रखने से कीड़े नहीं लगते। विष-प्रकोप में भी यह उत्तम लाभ पहुँचाता है। नारंगी पित्तनाशक और रक्तशोधक है।

१०७–नीबू।

संस्कृत–निबू, निंबूक, निंबुक। हिन्दी–नीबू। बँगला–पातिलेबू। कर्नाटी–कचिलें। फारसी–लेमु। अंगरेजी–लेमन्स। लैटिन–लेमोनएसिड़।

नीबू खट्टा, बातनाशक, दीपन, पाचन कर्ता तथा हल्का होता है, नीबू कृमिनाशक, तीक्ष्ण, उदर पीड़ा को हरने वाला तथा अरुचि, मंदाग्नि, क्षयरोग, वातव्याधि, कण्ठावरोध और विशूचिका रोग में लाभदायक है। मीठे नीबू का गुण स्वादु, गुरु, बात. पित्त नाशक, विषघ्न विष तथा रक्त दोष नाशक है। बल कारक, पुष्टिदा, अरुचि, तृषा और वमन का निवारक है। नीबू का अचार खाने से अजीर्ण दूर होता है। इसके अचार कई प्रकार के होते हैं। पर निमकीन अचार ही अधिक लाभकारी है। नीबू के रस को सायंकाल में खाने से प्रातःकाल में होने वाली अजीर्ण की वमन दूर होती है। संधिवात सदृश रोगों में नीबू का रस जवाखार और शहद को मिलाकर दिया जाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१०८—नीम।

संस्कृत—निम्ब, पिचुमर्द, पिचुमन्द, तिक्तक, अरिष्ट, पारिभद्र। हिन्दी-नीम। बंगला—निम। मराठी—कडुनिम्ब। कर्नाटी—वेउ। गुजराती—लिंवडो। तैलगू—वेपा। अरबी—आजाददरख्त। फारसी—दरख्त हक़। अंगरेजी—निम्बट्री।

नीम का वृक्ष बड़ा होता है। पत्ते छोटे और, कंगनीदार और अनीदार होते हैं। फूल श्वेत रंग का छोटा तथा पाँच पखड़ियों वाला झुमकदार होता है। फल अर्थात् निंबौरी खिरनी के समान होती है। इसकी लकड़ी पीले रंग की होती है और बीज ज्वरघ्न है। वसन्त ऋतु में इसमें फूल लगते हैं। नीम शीतल, हलका, ग्राही, पाक में कटु, बातहरण-कर्ता, हृदय को अरुचि-कारी और श्रम शान्ति कर्ता है। तृषा, खाँसी, ज्वर, कृमि, व्रण, पित्त, कफ, वमन, कुष्ट और प्रमेह रोगों में इसका प्रयोग अत्यन्त लाभदायक है। नीम अथवा निबौड़ी खाने में कड़ुवी और पाक में कटु, दस्तावर तथा कृमि और प्रमेह को दूर करने वाली है। अवस्था-नुसार छाल और पत्ते प्रयोग में लिए जाते हैं। इसकी मात्रा २ माशे की होती है।

नीम का पत्ता और गेहूँ के चोकर की पुल्टिस बाँधने से फोड़े की गाँठ बैठ जाती है। शीतला के घावपर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नीमका पत्ता पीसकर लेप करना चाहिए। नीमके पत्तों का रस पान करने से पेट के कीड़े निकल जाते हैं। नासूर रोगपर नीम के पत्तों और तिल की पुल्टिस बाँधने से दर्द दूर हो जाता और घाव अच्छा हो जाता है। कुष्ट रोग और गाँठ युक्त फोड़े के ऊपर नीमका तेल लगाना चाहिए। कुष्ट रोगी को चाहिए कि १ तोला नीम का तेल नित्य सेवन करे। नीम के पत्तों का भपारा देने से घाव और घाव की सूजन अच्छी हो जाती है। नीम के कच्चे पत्तों की पुल्टिस बाँधने से फोड़ा शीघ्र फूट जाता है। नीम के पत्तों का क्वाथ कालरा (हैजा) के आक्रमण में लाभकारी है। नीम के कोमल पत्ते ७ काली मिर्च ४ दोनों को पीसकर सेंधा नमक डालकर पीनेसे ज्वर का प्रकोप शान्त होता है और फोड़े फुन्सी के घाव अच्छे होते हैं। नीम की पत्ती का अर्क पीने से रुधिरदोष नष्ट होता है। नीम की मींगी रसौत और कपूर को बराबर मात्रा में लेकर पीस डाले। उस लुन्दी को बवासीर रोग के मस्सों पर लगाने से दर्द और खुजली शान्त हो जाती है। नीम की पत्ती और मोम को सरसों अथवा अलसी के तेल में जलाकर, घोटकर मलहम बना ले। इस मलहम के लगाने से फोड़े के घाव भर जाते हैं।

१०९–नील।

संस्कृत–नीली, नीलिनी, तूली, कालदोला, श्रीफली, तुत्था, ग्रामीण, मधुपर्णिका, कालकेशी, नील पुष्पा। हिन्दी–नील, लील। मराठी–गुली। गुजराती–गली। कर्नाटी–हिरिपनीली। तेलगू–नीलीजेट। अंगरेजी–इंडिगो।

नील का वृक्ष मेथी के शाक–वृक्ष के समान होता

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

है जिसमें से नील रंग निकलता है। नील रेचक, कड़वी, बालों को उत्तम और मोह, भ्रम नाशक है। जिनके बाल सफ़ेद हो गए हों उन्हें चाहिये कि बालों पर पहले मेंहदी के पत्तों को पीसकर लगावें। ऐसा करने से जब बाल लाल होजायँ तब फिर उनपर नील के पत्तों को पीसकर लगा दें। फिर तो बाल का रंग ठीक ठीक काले भौंरे के समान हो जाता है। मात्रा २ माशे की है।

११०-पटोल = परवल।

संस्कृत-पटोल, कूलक, राजीफल, पांडुफल, राजेय, अमृतफल, बीजगर्भ, प्रतीक, कासभंजन। हिन्दी-परवल। बँगला-पळुतालता। मराठी-कडुपडवल तैलगू-कोम्बुपुडले। तामोली-सेसपदूला। कर्नाटी-मोरहठी।

यह एक प्रकार का लता-वृत्त है। इसमें पत्ते तीन या चार इञ्च लम्बे और दो इञ्च चौड़े, कुछ नोकीलेदार और काली हरियाली लिए होते हैं। फूल सफेद होता है। परवल पाचक, हल्का, गरम, खाँसी, रक्त और ज्वर तथा कृमि दोष को दूर करता है। परवल की जड़ पीसकर पीने से सुखपूर्वक दस्त आते हैं। परवल की लता कफ को हरण करनेवाली पत्ते पित्तनाशक और फल त्रिदोष को नष्ट करने वाले हैं। परवल की जड़ का क्वाथ पिलाने से पित्त की मसूरिका अच्छी हो जाती है।

१११-पान।

संस्कृत-तांबूलपल्ली, तांबूली, नागिनी, नागबल्लरी। हिन्दी-पान, नागर-बेल का पान। गुजराती-नागरबेल। फारसी-तंबोल। अंगरेजी-बिटिलवलीफ़।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

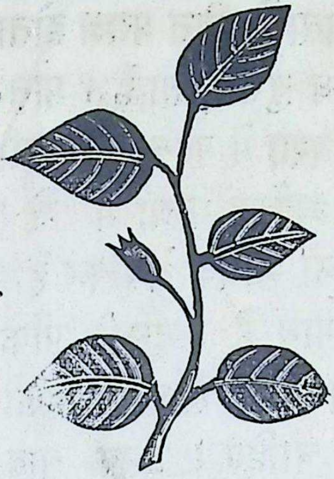

पान के कई भेद हैं और सब अपने अपने भेदानुसार कुछ न्यून्याधिक्य गुण रखते हैं। प्रत्येक प्रान्तों का पान भिन्न भिन्न ढङ्ग आकार-प्रकार और भिन्न-भिन्न गुण और स्वाद का होता है, जिन सबका वर्णन यहाँ नहीं हो सकता। ताजा तोड़ा हुआ पान खाने से मुख रोग तथा जड़ता का नाश होता है। वात, पित्त तथा कफ़ का वृद्धिकर्ता, जलन उत्पन्न कर्ता, अरुचि को बढ़ाने वाला तथा रक्त रोगों को उत्पन्न कर्ता और कै (वमन) लाता है। पका हुआ पान रुचि उत्पन्न करता है, शरीर के वर्ण को उत्तम करता है और त्रिदोष का नाश करता है। पान की नसें खाने से शिथिलता आती है और रक्त सूख जाता है। सूखे और गले हुए पान चर्म रोग, दाँतों के रोग और मुँह के रोग पैदा करते हैं। पान की जड़ खाने से व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं। पान का अग्र भाग अर्थात् फुनगियों को खाने से भी विकार उत्पन्न होते हैं। पान का फल हृदय को हित करने वाला, सुगन्धयुक्त कफ और वात का नाश करने वाला है। पान कत्था कफ़ और पित्त नाशक है। चूना बात और कफ का नाशक है। सुपारी में भी वही गुण है। अतएव कत्था, चूना और सुपारी के साथ पान

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

खाने से तीनों दोषों का नाश होता है, चित्त प्रसन्न होता है शरीर हल्का और मुख सुगन्ध युक्त होता है। प्रातः काल का खाया हुआ पान उस दशा में बहुत लाभकारी होता है जब उसमें सुपारी कुछ अधिक मात्रा में हो। दोपहर में कत्था और रात में चूना अधिक श्रेयस्कर है। पान की पहली पीक विष के समान है। दूसरी पीक भारी और दस्तावर है। अतएव पान खाकर पहली और दूसरी पीक अवश्य थूकनी चाहिए। इसके बाद की सभी पीकों को निगल जाना लाभदायक है।

जुलाब लेने तथा भूख लगने की दशा में अधिक पान न खाना चाहिए। यदि उस दशा में पान खाया जाय तो शरीर, आँख की रोशनी, बाल, दाँत, कान, बल और अग्नि का नाश होता है। ऐसी दशा में शोष भी हो जाया करता है। पित्त, बात और रुधिर की वृद्धि होती है।

निर्बल, दाँतों को बीमारी, आँख के रोगी मनुष्यों को अथवा विष खाये हुए एवं मूर्छित, नशा खाकर मतवाले तथा मुँह, नाक, कान आदि से खून निकलने वाले रोगी को पान खाना हानिकर है।

पान का पत्ता हर्रे की छाल और कूट को जल में पीस कर शरीर में मालिश करने से शरीर की दुर्गन्धि जाती रहती है।

११२–प्याज।

संस्कृत–पलांडु, यवनेष्ट, दुर्गंध, मुखदूषक। हिन्दी–प्याज। बंगला–पेयाज। मराठी–काँदा। कर्नाटी–लोहिबीउल्ली। गुजराती–डुंगरी। तैलङ्गी–नीरउल्ली। फारसी–अस्कील (बसुलल्फार) अंगरेजी–एलियम।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्याज ।

यह क्षुप जाति का पौधा है जो खेतों में बोया जाता है। इसका वृक्ष लगभग दो फुट लम्बा होता है। पेड़ में पत्ती ही पत्ती होती है जो हरे रंग की पीली और गोल होती है। इसी पेड़ की जड़ की गाँठ को प्याज कहते हैं।

प्याज, पित्तनाशक कफ़ दोष को नष्ट करनेवाली, शीतल गाढ़ी नींद लाने वाली, दीपन और अत्यन्त उत्तेजक है। यह स्वभाव को कोमल करती, वायु को शमन करती, पेशाब और मासिक श्राव को आरंभ करती और वायु नाशक है। सर्दी से उत्पन्न हुई सूजनों में प्याज को पका कर बाँधना चाहिए। खट्टी डकार और जल-विकार को नष्ट करती है।

प्याज सफेद तथा लाल दो प्रकार की होतीं हैं। लाल प्याज शीतल और पित्त कफ को नाश करने वाली है। प्याज का रस ५ तोले और शहद ५ तोले लेकर आग पर चढ़ाकर औटने से जब तारदार चाशनी बन-जाए तब उतार लेना चाहिए! इस चाशनी को सेवन करने से धातु पुष्ट होता और शक्ति बढ़ती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्याज के रसमें १ छ० कलमी शोरा डालकर मंद मंद आँचपर ऐसा पकाना चाहिए कि जब प्याज का रस जलकर केवल शोरामात्र शेष रहजावे तब उसे उतार शीशी में बन्द कर रख दे। नेत्रों की धुंध मिटाने के लिए यह अचूक सुर्मा है।

प्याज का रस निकाल कर बारम्बार पिलाने से कै, दस्त शीघ्र बंद होता है। शरीर के गंज और श्वेत दागों पर प्याज का अर्क मलने से यह रोग अच्छा होता है। प्याज खाने से भूख बढ़ती है।

११३-पित्तपापड़ा।

संस्कृत-पर्पट, पर्पटक, वरतिक्त। हिन्दी-पित्तपापड़ा, दवनपापड़। बंगला-क्षेतपापड़ा। गुजराती-खडसलीओ, पीठपापड़ो। अरबी-शाहतरज। फारसी-शाहतरा। अंगरेजी-जस्टिस याप्रोकंवेंस।

सूखा पित्तपापड़ा पुराने ज्वर और बात रोग और बालों को हितकारी है। पर भूख को लाने वाला, स्वभाव को कोमल करने वाला और इसके पत्तों का रस मेदे को बलिष्टकारक है।

(१) पित्तपापड़ा, नीम की छाल, परोल, खस, दोनों चंदन, कुटकी, आँवला, अडूसा और जवासे का क्वाथ मिश्री कें संयोग से पिलाओ तो पित्त की मस्रिका अच्छी हो।

(२) पित्तपापड़ा ४ मा० काली मिर्च ७ दोनों को पीसकर फंकी लगा गरम जल का घूँट पीने से ज्वर शान्त होता है।

(३) पित्तपापड़ा १ तो० काली मिर्च ७ दोनोंको

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पीस कर पानी में औटा कर सेंधा नोन मिलाकर पीने तीन दिन में पित्तज्वर और भीतरी ज्वर अच्छा हो जाता है।

११४-बनप्सा।

यह एक पहाड़ी घास है। इसके पत्ते और फूल काम में लाए जाते हैं। यह पित्त के दोषों को दस्त के रास्ते से बाहर निकालता है। प्यास और हृदय की गरमी को शान्त करता है। छाती और गले की खर-खराहट को मिटाता है। सूजनों को पचाता है। मसाने की जलन को शान्त करता है। खाँसी के लिए हित-कर और नींद लाने वाला है। बनप्सा, गावज़वाँ, मुलहठी, लसोड़ा और काली मिर्च तथा मिश्री का क्वाथ बना कर तीन दिन पीने से जुकाम के कारण शरीर तथा शिर का दर्द रुकी हुई सर्दी और उससे उत्पन्न ज्वर दूर हो जाता है।

११५-बरगद।

संस्कृत-वट, रक्तफल, शृङ्गी, न्यग्रोध, स्कंधज, ध्रुव, क्षीरी, बहुपाद, वनस्पति। हिन्दी-बड़। बंगला-बट। कांगड़ी-आल। उड़िया-बोरू। तैलगू-मूरोलचट्टू। फारसी-दरख्त रेशा। अंगरेजी-वैनियन ट्री।

बरगद का वृक्ष बहुत बड़ा होता है। इसके पत्ते भी लम्बे चौड़े और मोटे होते हैं। फल छोटे छोटे और गोल तथा लाल रङ्ग के होते हैं। इसकी शाखाओं से लाल अंकुर निकलते हैं। कोमल अवस्था में इसको बड़ की डाढ़ी कहते हैं। जब यही खूब बढ़ जाती है तब बरोह कही जाती है। यही बढ़ते २ जमीन में पहुँच कर जम जाती है और इस प्रकार बरोह के भी वृक्ष हो जाते हैं और तब यह बरगद के वृक्ष को बहुत दूर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तक फैला देती है। बरगद के वृक्ष से बड़ा और सघन छाया वाला कोई भी वृक्ष नहीं होता।

बरगद शीतल, भारी, कषैला, कफ़ और पित्त को दूर करता है तथा देह का वर्ण उज्ज्वल करता है। यह ब्रण-रोग, बिसर्प और दाह का भी नाशक तथा दस्तों को बन्द करने वाला है। पित्त और बात दोष को दूर करता और फोड़े, फुन्सियों को अच्छा करता है। इसका दूध सूजनों को पचाता है, धातु को पुष्ट करता है। बवासीर और प्रमेह को लाभ पहुँचाता है। स्वप्न दोष पेशाब और पाखाने के बाद वीर्य निकल जाने को तथा धातु दोषों को भी नष्ट करता है।

(१) यदि किसी का वीर्य धातु, पेशाब के मार्ग से बाहर निकल कर चूनेके समान जम जाता हो तो बरगद का दूध बताशे के अन्दर भर कर प्रातःकाल बासी मुँह खाने से अवश्य लाभ पहुँचाता है। और यदि नित्य प्रातः बरगद का दूध खाया जाय तो धातु अत्यन्त पुष्ट होकर स्तम्भन शक्ति को बढ़ाता है।

(२) बरगद की ताजी बरोह को पीस कर स्त्रियों के लटके तथा ढीले हुए स्तनों पर लेप करने से शीघ्र ही बहुत कड़े हो जाते हैं।

(३) बरगद का दूध बताशे में खिलाने से बच्चों का सुखंडी रोग अच्छा होता है।

११६—बहेड़ा।

संस्कृत—बिभीतक, बिभीतकी, अक्ष, कर्षफल, कलिद्रुम, भूतवास, कलियुगालय। हिन्दी, बँगला—बहेड़ा, बहेरा। मराठी—बेहेडा। तामिली—तनि-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

काइक । का०-तोरे । गुजराती-बेहेड़ा । फारसी-बलेलज, बलेलय । लैटिन-टर्मीनेलिया बेलेरिक । अंगरेजी-बेलेरिक माइलेबोलम ।

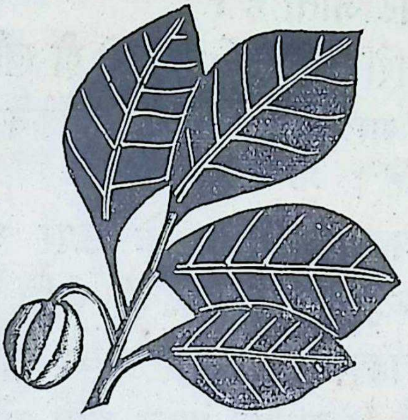

बहेड़ा ।

(१) यह शाखी जाति के वृक्ष का फल है। बहेड़ा का वृक्ष ऊँची जमीन में होता है। इसके पत्ते महुए के समान और फूल बहुत बारीक होते हैं। भारतवर्ष में बहेरे का वृक्ष प्रायः सभी स्थानों में पाया जाता है। बहेड़े का रस मीठा और पाक में कषैला है। यह फल, पित्त को हरण करने वाला, खाँसी का नाशक नेत्र हितकारी, बालों को उत्तम दृढ़कर्ता और कृमिरोग तथा स्वरभेद को नष्ट करता है। प्रयोग में बहेरे की छाल ली जाती है।

(२) मुसलमानी वैद्य इसे वर्द्धक, पाचक खुलासा दस्त लानेवाला, बदहज्मी और अफरा [पित्त] से जो मस्तक पीड़ा होती है। तथा उससे आँख दुखती हो, इसपर लेप करने से लाभ होता है।

(३) आँखें दुखती हों तो बहेड़े को शहद में घिसके लगावें या लेप करें तथा जलंधर, दस्त, बवासीर, कोढ़ और खाँसी की बीमारियों में देने से लाभ होता है। यह मेदनाशक और शुक्र-दोष हरता है।

(४) बहेड़े के पेड़ की छाल का काढ़ा कोढ़ और पाण्डुरोग को दूर करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(५) बहेड़े के बीज को पानी में घिसकर चुपड़ने से हाथ पाँव का दाह मिट जाता है।

(६) साढ़े तीन माशे बहेड़ा और इतनी ही खाँड़ मिलाकर सबेरे के समय गरम पानी के साथ फाँकने से आँख की ज्योति बढ़ती है।

(७) एक समूचा बहेड़ा लेकर उसके ऊपर घी चुपड़ दे और आँटे में बन्द कर पुट पाक की रीति के अनुसार पका दे। पीछे बहेड़ा निकालकर उसकी छाल को सेवन करे। यह अकेले ही अत्यन्त प्रबल श्वास और खाँसी को दूर करती है। थोड़ी-थोड़ी छाल मुँह में डाल कर चूसना चाहिए। औषधि सेवन की अवस्था में खटाई मिर्चा, तथा स्त्री प्रसंग से परहेज करना आवश्यक है।

११७–बादाम।

संस्कृत-बादाद, बातवैरी, नेत्रोपमफल। हिन्दी-बादाम। तैलगू-बेदम। अरबी-लोज। अंगरेजी-स्वीटआलमण्ड्स।

इसका वृक्ष महुए की तरह काबुल और मालावार में अधिकता से होते हैं। पत्ते लंबे और गोल होते हैं। इसकी मिंगी, मधुर, वृष्ण, बात, पित्त नाशक, स्निग्धोष्ण, कफवर्द्धक तथा रक्त पित्तवाले रोगियों को हितकारी नहीं है। यह मस्तिष्क और शरीर को बलवान तथा सुन्दर और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सुदृढ़ बनाता है। आँखों की रोशनी को बढ़ाता है, कण्ठ को कोमल बनाता, हृदय को लाभ पहुँचाता, वीर्य पैदा करता और गाढ़ा कर बलवान बनाता है। सूखी खाँसी को यह हितकारी है। सुजाक के लिये यह हितकारी तथा वायु को शमन करता है।

कच्चा बादाम—भारी, सारक, पित्त को उत्तेजित करने वाला तथा कफ और वायु के दोषों को नाश करता है। पक्का बादाम—मधुर वृष्ण, स्निग्ध, पुष्टिकारी, वीर्योत्पादक, कफ उत्पन्न करने वाला तथा रक्त पित्त और बात पित्त को नाश करता है। सूखा बादाम—मीठा और धातु को बढ़ाने वाला, अत्यन्त बल को बढ़ाने वाला, किंचित् पित्त को उत्पन्न करने वाला तथा कफ के दोषों और बात पित्तको नाश करता है।

बादाम का तैल, वाजीकर, मस्तक के समस्त रोगों को नाश करने वाला और दिमाग को बलवान बनाने वाला होता है। यह पित्त, बात और दाह को नाश करता है। मुखाकृति को सुन्दर और चमकदार बनाता, प्रमेह उत्पन्न करता तथा शीतल है।

एक प्रकार का कड़वा बादाम भी होता है जो सूजनों को पचाता, शरीर को शुद्ध करता, दूषित खून को जलाता, सूखी और तर दोनों ही खाँसियों को लाभदायक, छाती की खरखराहट और फेफड़े की सूजन को मिटाने वाला, जिगर की बीमारियों और कमला में हितकर है। यह पथरी को तोड़ता है। ४॥ माशा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बादाम शहद में रगड़कर खिलाने से पागल कुत्ते का काटा जहर नष्ट होता है।

११८–बायबिडंग।

संस्कृत–बिड़ंग, कृमिघ्न, जन्तुनाशन, तंडुल, वेल्लअमोघा, चित्रतंडुला। हिन्दी–बायबिडंग। बंगला–बिडंग। मराठी–गुजराती–वावडींग, कारकुनी। कर्नाटी–वायुवीडंग। तामिली–बायविल। तैलगू–बायवीडंथमु। फारसी–बिरंज काबली। अंगरेजी–वेब्रेंग।

बायबिडंग का स्वाद उत्तम, कुछ कषैला और कुछ सुगन्धियुक्त होता है। माता के दूध में अथवा गौ के दूध में बायबिडंग के थोड़े दाने मिलाकर देने से बालकों के पेट में बादी का रोग नहीं उत्पन्न होता। बायबिडंग पसारियों के यहाँ मिलता है। यह कृमि नाशक, विरेचन गुल्म शूल नाशक खाँसी और श्वास रोग को भी हरण करने वाला है। इसका जुलाब भी लिया जाता है। इसको पानी में मिलाकर पीने से पेट के कीड़े निकल जाते हैं। बायबिडंग के ऊपर की छाल, साबूदाना और मक्खन के साथ मिलाकर देने से दस्तों का आना बन्द हो जाता है। इसको नीबू के रस में मिलाकर देने से आँव का पड़ना बन्द हो जाता है।

११९–बाँस।

संस्कृत–बंश, वेणु, शतफली, त्वक्सार, तृण-ध्वज। हिन्दी–बाँस। बंगला–बाँस-श। मराठी–बाबू। कां०ऋड़० वेलू। तैलगू–वेन्नेमुक। तामिली–मंगिल्। फारसी–कसव। अंगरेजी–बम्बूकन।

बाँस का वृक्ष बहुत लम्बा और पतला गाँठदार होता है वृक्ष का फल घासके फूल के समान होता है। बास के कई भेद हैं। स्थाना-भावके कारण सब नहीं लिखे जा सकते। गुण में सभी समान हैं। बाँस–खट्टा, कषैला

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

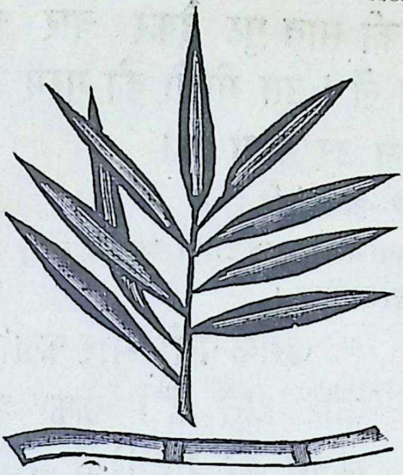

बाँस।

कुछ कड़ुवा और शीतल है। मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, बवासीर, पित्त, दाह और रुधिर रोगों में इसका फल प्रयोग किया जाता है।

१२०—बिजौरा।

संस्कृत-बीजपूर, मातुलुंग, फलपूरक। हिन्दी-बिजौरा। बंगला-टावालेबू। मराठी-महालुंग। गुजराती-बीज़ोरुँ। तैलङ्गी-दबाकावा। कर्नाटी-माधवाला। उड़िया-कलंबा। अरबी-उतरंज। फारसी-तुरंज। लाटिन-साइट्र समेडीका।

बिजौरा।

इसका वृक्ष छोटा, पत्ते नींबू के समान छोटे-छोटे कँगनीदार होते हैं। फल, लम्बा, गोल, अनीदार और खरदरी छाल का होता है। यह रसमें स्वादु, खट्टा, दीपन, हल्का, रक्त पित्त, स्वास, खाँसी और तृषा को हरण करता है। यह कण्ठ, जिह्वा और हृदय को शोधन करता तथा हितकर है।

(१) सोंचर नोन १ टंक, जीरा ३ टंक, काली मिर्च ४ टंक, सबको चूर्ण कर अम्लवेत के रस की सात

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पुट में बिजौरा के रस की सात पुट देकर चार चार माशे की गोलियाँ बना लें। उस गोली को गरम जल के साथ देने से वात-शूल दूर होता है।

१२१–ब्रह्मदंडी।

इसे भारतवर्ष की अनेक भाषाओं में ब्रह्मदंडी ही कहते हैं।

ब्रह्मदंडी।

इसके पत्तों और फलों पर काँटे होते हैं। कफ और सूजन की बीमारियों में इसे देते हैं। खारिश, खुजली, दाद, आदि जिल्दी रोगों में इसका काढ़ा बड़ा गुणकारी है।

१२२–ब्राह्मी (ब्रह्ममंडूकी)।

संस्कृत–ब्राह्मी, ब्रह्ममंडूकी, कपोतबंका, सरस्वती, सोमवल्ली। हिन्दी–ब्रह्मी। बंगला–ब्रह्मीशाक। मराठी–ब्राह्मी। फारसी–जरनब। ला०–हैड्रोकोटाइलएसिआटिका।

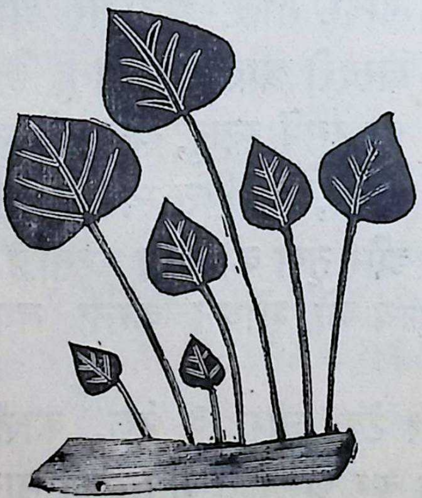

ब्राह्मी।

ब्राह्मीकपोत बंकाच–
सोमवल्ली सरस्वती।
मंडूकपर्णी माँडूकीत्वाष्ट्री–
दिव्या महौषधी॥

यह पहाड़ी जलाशयों और नदियों के किनारों पर मिलती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१२३–मंडूकपर्णी ।

ब्राह्मी की एकजाति मंडूकपर्णी भी है । इसे संस्कृत में महौषधि, मांडुकी, दिव्या, त्वाष्ट्री । हिन्दी में ब्रह्ममांडूकी, मंडुकपानो । बंगला–थुलकुडी ।

मंडूकपर्णी ।

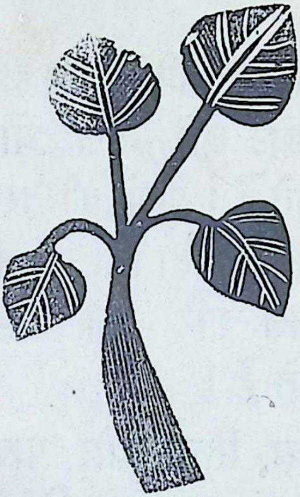

ये दोनों ब्राह्मी प्रसर जाति की औषधि हैं । दोनों शीतल, सर, कड़वी, हलकी, स्मरण शक्ति को बढ़ाने वाली, कषाय मधुर, सिद्ध होने पर स्वादिष्ट, आयु को बढ़ाने वाली स्वर को शुद्ध करने वाली रसायन है ।

ज्वर, सूजन, प्रमेह, रक्त-दोष, विषदोष पांडु, कोढ़ आदि इससे दूर होते हैं । मात्रा इसके स्वरस की दो माशे हैं । इसका दर्प दूर करने वाला मलयाचंदन और गुलाब जल है । दाल-चीनी इसकी प्रतिनिधि है ।

प्राचीन महर्षियों ने सिद्ध किया है कि इस बूटी के सेवन से स्मरणसक्ति बढ़ती है अतः विद्यार्थियों के बड़े काम की है । उन लोगों को भी लाभदायक है जिनका दिमाग कमजोर है ।

इसके पत्तों को घी में घोटकर पिलाने से स्वरभंग दूर होता है । और इसके पत्तों के रसमें कूट और शहद मिलाकर पागलों को देते हैं ।

घास के तेल में इसका रस घोंट कर गाठिया पर लगाते हैं । और शहद के साथ मृगी वाले रोगी को भी देते हैं ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१२३—बावचा (बाकुची)

संस्कृत-सोमवल्ली, सोमराजी, शशिलेखा, सोमा, कालामेषी, अवल्गुज, बाकुची। हिन्दी-बावची। बंगला-सोमराज। मराठी-बांवचा। कर्नाटी-बाउचिगे। तैलगू-तिप्पतोगे। तामिली-वोगिविट्लु। ला०-कोरिली फोलिया।

बावचा।

यह क्षुप जाति की औषधि है। इसके पत्ते छोटे छोटे गोल और अनीदार होते हैं। बालों की तरह फूलों का गुच्छा होता है। बावची के काले काले चपटे दाने इन्हीं बालों में होते हैं।

यह मधुर, तिक्त और पाक करने पर कड़ू, रसायन, विष्टंभ-नाशक, कफनाशक, रक्त-पित्त-नाशक, रूखी, रोचक, सारक, शीतल है।

ज्वर, प्रमेह, कृमिरोग, कुष्ट, स्वाँस को दूर करती है। इसका फल पित्त पैदा करता है। यह बालों को लाभ दायक है। त्वचा के रोगों को दूर करता है।

खाँसी, सूजन, बादी, वमन, कफ, कुष्ट, और कमला का नाशक है। औषधि में बीज ही लिया जाता है जिसकी मात्रा १ मासे की है।

कुछ वैद्यों के मत से यह दस्तावर और उत्तेजक है। बावची के बीज का तेल स्वेतकुष्ट पर बड़ा फायदा करता है।

१२४—बालछड़ (जटामासी)।

संस्कृत-जटामासी, भूतजटा, तपस्विनी मांसी। हिन्दी-जटामासी। गुजराती-बीलछड़। फारसी-सुंबुल।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बालछड़।

इसका पौधा सुगन्धित होता है और जड़ कुछ कड़वी होती है। पहाड़ी धरती पर होता है।

यह कड़वी कषैली, स्मरण-शक्तिबर्धक, बल देने वाली, कांति बढ़ानेवाली, स्वादु, शीतल, त्रिदोष दूर करने वाली है।

रक्त विकार, दाह, मृगी, कोढ़, ज्वर और समस्त चमड़े के रोगों में इसका ब्यवहार लाभदायक है। जटा-मासी का तेल बालों में लगाते हैं। इससे दिमाग में ताकत होती है, दर्द सर और जुकाम को लाभ होता है। बाल काले और लंबे हो जाते हैं।

जिसे गालों का रंग बदलना हो वह जटामासी को पीसकर उबटन में मिलाकर मले, गाल साफ हो जावेंगे। जिनकी आँखों की पलकें गिर गई होवें वे जटामासी को हरे धनियें के पानी में पीस कर लेप करें।

१२५–बाराहीकंद = बिदारीकंद।

संस्कृत–बिदारी, स्वादु गंधा, इक्षुगंधा, क्षीरशुक्ला, बाराहवदना, बदरो। हिन्दी–बिदारीकंद। मराठी–भूयकोंहले। का०–नेलगुम्बुड्ड। गुजराती–फग बेलानो कंद। तैलगू–नेलागुम्बुडू। ला०–आइपोमिया डिजीटेडा।

बाराही कंद = बिदारीकंद।

यह नीची धरती में होता है। इसकी गाँठों पर सूअर कैसे मोटे मोटे बाल होते हैं इसीसे इसका नाम बाराहीकंद पड़ा है। यह मधुर, स्निग्ध, शीतल, बलका-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रक और भारी है। आयु का बढ़ाने वाला, स्वरदोष दूर करने वाला, बीर्य्य-बर्धक, स्तनों में दूध उत्पन्न करने वाला, बल बढ़ाने वाला है। रक्त पित्त बादी और दाह को दूर करता है। इसकी जड़ को सूत में बाँधकर बाँह या गले में बाँधने से तिजारी ज्वर जाता रहता है।

यह पहाड़ी जमीन पर होता है। इसकी बेल पर जो कन्द लगते हैं, वे बहुत जहरीले होते हैं। उन कन्दों को तीन चार बार पानी में उबालकर तब व्यवहार करना चाहिये। यह दवा बड़ी तेज है। इसकी तेजी दूर करने के लिये घी पिलाना चाहिये।

१२६–बाँदा।

संस्कृत–बन्दा, वृत्तरुहा, बन्दाक, वृत्तादनी। हिन्दी–बांदा। बंगला–परगाछा, बांदरी। मराठी–बांदांगुल। गुजराती-गुन्दी। तैलगू–बमनिके। लाटिन–लोरेन्थस, लौशी पोलियम।

यह एक प्रकार का पौधा है जो वृत्तों की डालियों पर उगता है। इसके पत्ते जैतून के पत्तों की तरह गोल होते हैं और फूल तथा बीज लाल होते हैं। यह जिस पेड़ पर उगता है उसी पेड़ के गुण के समान गुणकारी हो जाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यह शीतल, कड़वा, कषैला और मीठा होता है। कफ, विष, पित्त, दाह और श्रम का नाशक है। बलकारक और रसायन है। जिसके मुख से खून गिरता हो वह इसको अंजीर के साथ औंटा कर पीये तो खून बंद हो जाता है। इसी प्रकार खूनी दस्त और बवासीर वाले रोगी यदि रविवार के दिन सूर्य्य निकलने के पहले इसे कमर में बाँध लेवें तो बड़ा लाभ होता है। इसके पत्तों को जला कर दाद पर छिड़कने से दाद नष्ट हो जाती है।

यदि स्त्री गर्भवती न होती हो तो जो बांदा अनार या बेल के पेड़ पर उगा हो उसे लाकर और दूध के साथ औंटा कर मासिक धर्म से निपटने के पश्चात् तेरह दिन तक बराबर पिलाने से गर्भ धारण की आशा है।

१२७–बोल = बीजाबोल।

संस्कृत–हीरावोल, बीजाबोल। गुजराती–हीराबोलई। फारसी–मुर। बंगला–बीजाबोल। मराठी। बीजाबोल।

बोल = बीजाबोल।

यह एक प्रकार का गोंद है जो गूगल की तरह होता है और अरब में पैदा होता है। इसका सबसे बड़ा गुण यह है कि जिस स्त्री को मासिक धर्म न होता हो उसका

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इसके सेवन से ऋतु धर्म जारी हो जाता है। सूँघने से सिर का दर्द जाता रहता है। दो मासे खा लेने पर पेट के कीड़े मर जाते हैं। गुलाब जल के साथ सेवन करने से दस्तों की बीमारी में फायदा पहुँचाता है।

१२८—बेर।

संस्कृत—कर्कंधु, कोल, फेनिल, कुवल, घोटा, सौबोर। हिन्दी—बेर। बंगला—कुलाम। मराठी—बोर। उड़िया—कुडि। गुजराती—बोरडी। कर्नाटी—येरनु। तैलङ्गी—रेगुचेट्टा। तामिली—रेयति। अरबी—जुजब। लाटिन झिझिफस जुजबा। फारसी—सिदर, कुनार।

बेर का वृत्त भी बड़ा और काँटेदार होता है। पत्तियाँ छोटीं छोटी और गोल होती हैं। फूल पीले रङ्ग के गुच्छेदार होते हैं। उन्हीं गुच्छों में फल का गुच्छा होता है।

बेर गर्मी को शान्त करती, खट्टी, गरम और तृषा को शान्त करने वाली है। यह आतों और मेदे के कीड़ों को मारती और इसका पानी हृद् रोग को सुखकर है। इसकी लकड़ी का बुरादा रक्त प्रवाह को रोकने वाला है। इसके पत्ते का लेप गरमी की सूजन को पचाता और पकाता है। इसके पत्तों का काढ़ा पीने से दिमाग तर रहता है। बेर की जड़ कई प्रकार के काढ़ा में ली जाती है, जो ज्वर रोगों को शान्त करती है।

१२९—बेल।

संस्कृत—विल्व। हिन्दी—बेल। बंगला—बेल, विल्व। मराठी—बेल, बेलफल। गुजराती—बिलोबिलू। अंगरेजी—बंगाल क्विंस।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बेल ।

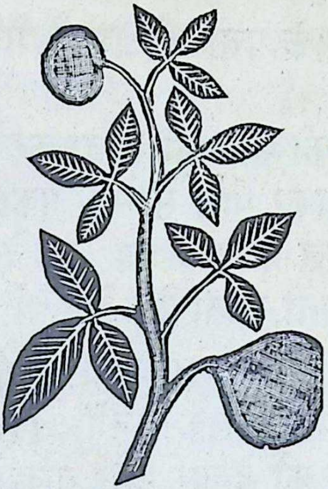

बेल के वृक्ष बड़े-बड़े होते हैं। इसकी डालियों में काँटे होते हैं। पत्ते तीन-तीन एक डाली में होते हैं। फूल-सफेद और सुगन्धदार होते हैं। ग्रीष्म ऋतु के आरंभ में इसके पुराने पत्ते झड़ कर नये पत्ते निकल आते हैं। इसकी लकड़ी चंदनकी तरह सफेद रंग की होती है। इसकी जड़ दशमूल की प्रथम औषधियों में से एक है।

बेल के पत्तों का ताजा रस शहद में देने से ज्वर जाता रहता है और दस्त भी साफ आते हैं। बेल की जड़ का काढ़ा पिलाने से ज्वर जाता रहता है और हृदय की धड़कन दूर होती है। इसके पत्तों की लुगदी दुखती आँख पर बाँधने से दर्द और सूजन भी दूर होता है। बेल के कच्चे और सूखे हुये चूर्ण को खाँड़ के साथ फाँकने से दस्त और संग्रहणी दूर होती है। लू लगने पर बेल का शर्बत पिलाना चाहिये। बेल का मुरब्बा, अतिसार और बहुत पुरानी संग्रहणी तथा रुधिर विकार को दूर करता है। कच्चा बेल और गिलोय का निरन्तर सेवन करने से बात-गुल्म का रोग दूर हो जाता है। बेल की जड़ और कैथकी जड़ को पीसकर पिलाने से सर्प का विष उत्तर जाता है। बेल-फल को गोमूत्र में पीसकर और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तेल में पकाकर उस तेल की बूँद कान में टपकाने से बहरापन जाता रहता है। बेल के पत्तों का अर्क पीने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

बेल की छाल और आक की छाल का काढ़ा करके देने से शहद और मिश्री मिलाकर पीने से सब प्रकार के अतिसार दूर होजाते हैं। बेल के पत्तों का रस देह पर मलने से देहकी दुर्गन्धि जाती रहती है। बेल और सोंठ का काढ़ा देने से उबकाई और बिशूचिका जाती रहती है। बेलकी कच्ची गिरी को तिलके तेलमें ७ दिन तक पड़ी रहने दें फिर इस तेल को देहपर और तलुओं पर मर्दन करके स्नान करें तो जलन मिट जाती है। इस प्रकार बेल अनेक रोगों में लाभदायक है।

१३०—भाँग।

संस्कृत—भंगा, गंजा, मातुलानी, विजया, जया, मादिनी। हिन्दी—भाँग, भंग। बँगला—सिद्धि। मराठी, गुजराती—भांग। फारसी—कनव, जुजवआजम। ला०—केनेविस इंडिका। अंगरेजी—इंडियन हैम्प।

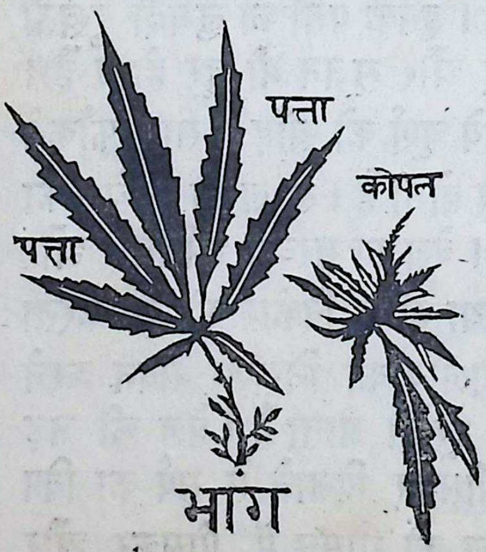

यह एक क्षुप जाति का पौधा है। इसके पत्ते लम्बे, कँगूरेदार और नीम के पत्ते के समान पर इससे छोटे होते हैं। भाँग, गाँजा और चरस का रस इसी वृक्षमें से निकलता है। यह बादी को साफ करती, कोढ़

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नाश करती, मेदा उत्पन्न करती, बल और बीर्य को बढ़ाती, अग्निकारक, कफ नाशक और रसायन होती है साथ ही यह रुचि उत्पन्न करती, मल को रोकती, अन्न को पचाती, निद्रा अधिक लाती, कामदेव को बढ़ाती और बात को नाश करती है।

भाँग, दूध के साथ बवासीर पर लेप करने से बवासीर को आराम करती है। भुनी हुई भाँग का चूर्ण शहत के साथ खाने से अतिसार संग्रहणी और मंदाग्नि दूर होती है। इसके पत्ते घोंटकर पीने से गालों पर लाली छा जाती है। भाँग का पूरा किन्तु छोटा पेड़ पीसकर घाव पर लगाने से घाव आराम होता है। चोट की पीड़ा दूर करने में इसका लेप बहुत ही लाभदायक है।

भाँग सेवन से स्तंभन शक्ति बढ़ती है। बवासीर में जब रोगी व्याकुल हो तब इसका धुआँ देने से तत्काल शान्ति मिलती है। इसके पत्ता को सूँघने से छींक आती है। भाँग के पत्तों का रस सिर पर मलने से जूँ मर जाती है। कान में डालने से कान का दर्द और कीड़े मर जाते हैं। खाँड़ के साथ खाने से बीर्य गाढ़ा होता है। इसके पत्ते पीस कर अंडकोष पर बाँधने से सूजन दूर होती है।

इसका बीज पेशाब अधिक लाता, बीर्य को सुखाता, धातु को फाड़ता, आँखों की रोशनी कम करता और स्तभंन करता है।

१३१—भिलावा।

संस्कृत-भल्लातक, अरुष्कर, अग्निक, अग्निमुखो, भल्ली, वीरवृक्ष। हिन्दी-भिलाए, भिलावा। बँगला-भेला। उड़िया-भल्लिय। तैलगू-शगकोद्दह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मराठी-बिबवा। कर्नाटी-गौडवी, केरबीज। को०-बिबा, बिवे। गुजराती-भीलामूँ। फारसी-बिलादर। अरबी-हबुलकल्ब। अंगरेजी-मार्किंगनट।

भिलावे के पेड़ बड़े बड़े तथा इसके पत्ते गूमा के समान होते हैं। यह कषैला, गर्म, हल्का, बात, कफ, उदर रोग, कोढ़, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, ज्वर, मंदाग्नि, प्रमेह, क्रिमि तथा व्रण रोगों को नाश करता है। इसका फल स्निग्ध, मीठा और कृमि रोगों को दूर कर, दाँतों को स्थिर करने वाला है। इसके फल में जो गुण हैं, वे ही छाल में भी हैं। पका भिलावा पानी में छोड़ने पर जो डूब जाये वही उत्तम होती है। इसकी मज्जा मधुर होती है। यह वृंहण, वीर्यको उत्पन्न करनेवाली, जठराग्नि को प्रदीप्त करनेवाली, शोष, अरुचि, दाह और पित्त को भी नाश करनेवाली है। भिलावा की डंठल मधुर कषैली बातको कुपित करने वाली, स्वादिष्ट, पित्तको नाश करने वाली, जठराग्नि दीपक तथा बालों को हितकारी है।

१३२-भिंडी।

संस्कृत-भेंडा। हिन्दी-भिंडी, रामतरोई। बंगला-भिंडा शाक। गुजराती-भींडी, रामभंडी। लाटिन-हिबिस्कस एस्क्यूलेन्टस।

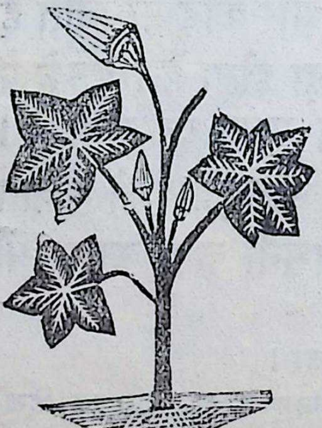

इसका पेड़ हाथ डेढ़ हाथ का होता है। पत्ते कटे हुए हथेली के समान होते हैं। यह हिन्दुस्तान के हर हिस्से में पैदा होती है। इसकी भाजी स्वादिष्ट होती है।

यह ग्राही, पौष्टिक, बल-बर्धक, शुक्रोत्पादक और कफ-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कारक है । खाँसी और मंदाग्नि में बड़ा लाभदायक है । जिस पुरुष का चाहे जिस कारण से पुंसत्व खो गया हो, यदि वह पाव भर भिंडी की जड़ का चूर्ण गाय के दूध के साथ सेवन करे तो फिर पुरुषत्व प्राप्त करलेवे ।

प्रमेह के रोगियों को चाहिये कि भिंडी की जड़को दूध में औटा कर उसमें घी और खाँड़ मिलाकर सेवन करे तो सब प्रकार के वीर्यदोष नष्ट हो जावेंगे ।

किसी प्रकार का मूत्र और बीर्य्य में दाह होता हो तो भिंडी का सर्बत सेवन करने से दाह नष्ट हो जाता है । भिंडी की जड़ के साथ काली मिर्च और इलायची मिलाकर पीनेसे कठिन सूजाक को लाभ होता है ।

१३३-भुइँआँवला (भद्रआँवला)

संस्कृत-शिवा, बहुपुत्रा, बहु वीर्य्या, बहुफला, तामलकी । हिन्दी-भुईं आँवला जरआँवला । बंगला-भुईं आँमला । मराठी-भूयआँवली । गुजराती-भोंआमली । का०-आरूनेल्ली । तैलगू-नेलाऊसीरके ।

भुइँआँवला ।

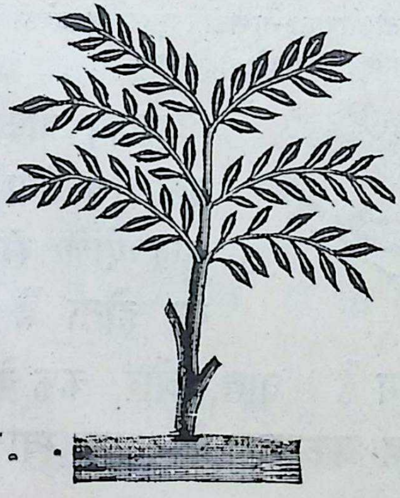

यह कड़वा कषैला, मधुर और शीतल होता है । कफ, खुजली, रक्त-पित्त. खाँसी, प्यास और घाव को लाभदायक है । इसका केवल फल लिया जाता है जिसकी मात्रा दो मासे की होती है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यह गर्म मुल्कों में होता है, इसके पत्ते लजाधुर के पत्तों की तरह होते हैं और वर्षा में उत्पन्न होता है। इसका फल खट्टा और कड़वापन लिये होता है।

कैसा ही पुराना बुखार क्यों न हो इसका पञ्चांग पिलाने से जाता रहता है यदि कहीं खुजली हो तो इसके हरे पत्तों को पीसकर उसमें नमक मिलाकर लगाने से खुजली दूर हो जाती है।

जलोदर के रोगियों को इसका पंचाङ्ग पिलाना चाहिये। इससे खूब पेसाब आता है। जाड़ा बुखार वाले को यदि इसकी नई पत्तियाँ और मिर्च को एक साथ पीसकर पिलाया जावे तो बड़ा लाभ होता है। इसकी जड़ को चावल के पानी के साथ उस स्त्री को देने से जिसका मासिक स्राव बहुत बढ़ गया हो, तुरत घट जाता है। इसके कोपलों को मेथी के दाने के साथ देने से पेचिस दूर हो जाती है।

१३४–महाराष्ट्री।

संस्कृत–महाराष्ट्री। हिन्दी-मरहटी। मराठी–मराठी। गुजराती–मरेठी। फारसी–बाबुनगाउ। अरबी–उकह्वान। अंगरेजी–पेनीरायल।

इसका पौदा एक हाथ लंबा, फूल पीले रंग का होता है।

गुण में चरपरी, तीक्ष्ण गरम है। वात और कफ के रोगों में लाभदायक है। यह अकरकरा के समान स्वाद

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

युक्त तथा गुणकारी भी है। इसकी ढोंढ़ी पानी में रखकर खाने से खाँसी को कम करता है। इसकी ढोंढ़ी दोनों लवण के साथ रगड़ कर जीभ पर रखे तो जीभ की सूजन दूर होती है।

१३५—मर्याद बेल।

संस्कृत—मर्याद वल्लि। हिन्दी—मर्याद बेल।

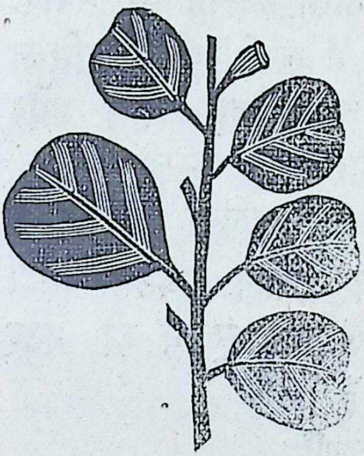

यह बेल धरती पर फैली हुई पाई जाती है और बारहो महीने मिलती है। वर्षा ऋतु में बहुत उत्पन्न होती है। इसके पत्ते कटे हुए फूल लाल पीले रंग के आकार में घंटी की तरह होते हैं। फल गोल अनीदार होते हैं।

गुणमें—भारी, ग्राहक, तीक्ष्ण, शीतल, रेचक और बात कर्ता है। इसका जड़ वा फल को पीसकर गाँठों पर बाँधने से गाँठ बैठ जाती है। जड़ वा पत्ते को अगर के साथ पीसकर मस्तक पर लेप करने से मस्तक की पीड़ा दूर होती है। इसका काढ़ा खाँसी को दूर करता है। इसके पत्तों पर रेंड़ी का तेल लगाकर सेंक कर पेट पर बाँधने से उदर शूल अच्छा हो जाता है। जलोदर रोग में इसके पत्तों का रस पिलाते और पेटपर बाँधते हैं। इसे पीस छान कर खांड़ के साथ देने से प्रमेह अच्छा होता है। किसी किसी के मत से इसका प्रयोग स्त्रियों में गर्भ धारण के लिये करना लाभदायक है। इसके

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फलों की पुल्टिस फोड़ों को बैठाने और पकाने के लिये लगाते हैं।

१३६–मटर।

संस्कृत–कलाय, वर्तुल, हरेणुक। हिन्दी–मटर। मराठी–बटाणे। गुजराती–बटाण। तैलगू–पेद्दहर्व। ला०–पाइसम सेटीवियम। अंगरेजी–फील्डपी।

यह छोटी बड़ी दो प्रकार की होती है। यह मधुर, स्वादु, पाक में रूखी और शीतल है। बात पैदा करती और विकार उत्पन्न करती है।

जिसके मुखपर झाँई आदि हो वे इसका उबटन करें। उँगलियों के सूजन को मटर के काढ़े से धोना लाभदायक है।

१३७–मूसाकर्णी।

संस्कृत–आखुकर्णी, पर्णिका। हिन्दी–मूसाकर्णी। बंगला–इंदूरकाणिपाना। मराठी–लघु उन्दिरकानी। कर्नाटी–बल्लिहरुहे। गुजराती–उन्दरकनी।

मूसाकर्णी।

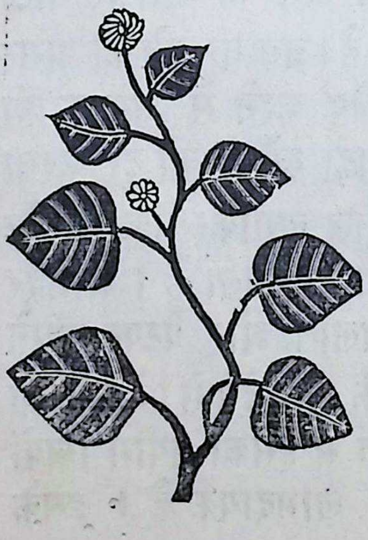

यह बेल तीन चार फीट लम्बी होती है, चौमासे में बहुत होती है। बारहो महीने मिलती है। इसके पत्त चूहे के कान की तरह होते हैं इसी कारण इसका नाम मूसाकर्णी है। इसका सर्वाङ्ग दवा के काम में आता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण में कटु तिक्त कषाय, शीतल और हलकी । मूत्ररोग, कफरोग कृमिरोग में लाभदायक है । शूल ज्वर, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, अफरा, कोढ़, कामला, भगन्दर में लाभदायक है । चूहे के काटने पर इसका रस लगाने से विष दूर हो जाता है । इसकी पुल्टिस फोड़ों पर बाँधते हैं ।

पेसाब न उतरता हो तो इसे काली मिर्च के साथ पीस छान कर देवें । बच्चों के पेट में कीड़े हों तो इसका रस उन्हें दें कीड़े मर जायँगे । नाकड़े (पीनस) के रोग में इसके पत्तों का रस भाँगरे के रस में मिलाकर नास लेवें । सर्पदंश में इसका रस पिलाते हैं । कान के दर्द में रसको गरम कर तेल मिला कर कान में छोड़ते हैं । मस्तक पीड़ा में इसके पत्ते मस्तक पर बाँधते हैं । इसके रस को शहत में मिला कर कुल्ली करने से दाँतों के कीड़े मर जाते हैं ।

१३८–मालकाँगनी ।

संस्कृत–ज्योतिष्मती, कटभी, कंगुनी, ककुन्दनी । हिन्दी–मालकांगनी । बंगला–लताफटकी । मराठी–माल-कांगोणी । का०–कौगुएरडू । तैलङ्गी–वावजी । गुजराती–मालकाँगणी । लाटिन–सिलास्टसपेनीक्यूलेटा ।

इसकी बेल होती है । पत्ते गोल अनी-दार कुछ कँगूरेदार होते हैं । फूल छोटे जिनमें पाँच पँखड़ियाँ होती हैं । फल झुमकेदार होते हैं । फल के भीतर लाल रंग के छ बीज होते हैं ।

इसकी लता कटु तिक्त, उष्ण, तीक्ष्ण, अग्निकारक, कफ वायु नाशक, वमनकारक, रक्त और बुद्धिबर्धक तथा तेज है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मन्दाग्नि को मिटाता है, अजीर्णता का नाश करता है, पक्षाघात और मृगी रोग दूर होते हैं। इसके तेल के व्यवहार से सन्धिवात और बादी के रोग मिट जाते हैं। इसका तेल बुद्धि को बढ़ाने वाला है और हाथ पर मलने से आँखों को बड़ा लाभ पहुँचाता है।

१३९–मूँगा।

संस्कृत–प्रवाल। हिन्दी–मूँगा। मराठी–प्रवाल। गुजराती–परवाला। अरबी–बुसुरअहमर। फारसी–मिरज। ला०—कोरेलमरूब्रम। अंगरेजी—रेड कोरेल।

मूँगा।

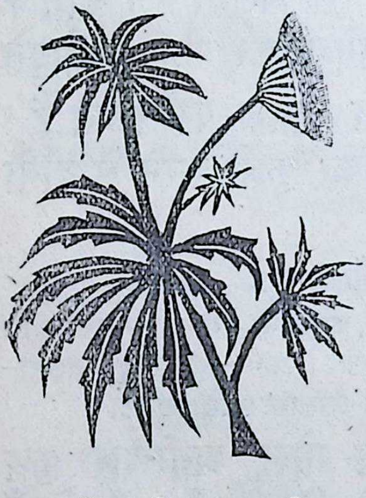

मूँगा समुद्र में होता है, और भोर के सूर्य की भाँति लाल चमकता है।

मूँगे का भस्म दमा वाले रोगी को बड़ा लाभ पहुँचाता है। इसको रोगनबलसाँ में मिला कर कान में छोड़ने पर बहरा सुनने लगता है।

गोंद के साथ खिलाने से बवासीर, मुख द्वारा खून का आना, मेदे का घाव आदि दूर हो जाते हैं।

१४०–मकोय।

संस्कृत—काकमाची, वायसी, ध्वांक्षमाची। हिन्दी—मकोय, कवैया। बंगला—काकमाची, गुडकामाई। मराठी–लघुकावली। का०–काके कामोणी। गुजराती–पीलुडी। अरबी–एनबुस्सालव। फारसी–रोवातरीख। अंगरेजी–नाइट सेड्। ला०–सोलेनमनाइग्रम।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यह क्षुप जाति का पौधा है। इसके पत्ते गोल, लम्बे नोकदार होते हैं। फल छोटी मटर के बराबर गुच्छेदार। फूल-सफेद, छोटा पाँच पँखड़ी का होता है। फल आरम्भ में हरा तथा पक जाने पर लाल रङ्ग का होता है।

गुण में मकोय त्रिदोष नाशक है, स्निग्ध, उष्ण, वीर्यबर्धक, स्वरशोधक, कटू, चरपरा, और आँखों को सुखदायक है।

कुष्ठ, बवासीर, शोथ, ज्वर, प्रमेह, हिचकी के और दिल की बीमारियों में इसका व्यवहार लाभदायक है। इसकी जड़ और पत्तों का स्वरस दो मासे की मात्रा, में बना कर लेना उचित है।

सूजन पर इसका रस सोंठ डाल कर गरम करके लगावे। जिसकी तिल्ली बढ़ी हो वह इसका साग खावे। जुकाम में जब आँख नाक से जल ज्यादा गिरने लगे तो इसके सूखे पत्तों का धूआँ सूँघे। आँख दुखने पर इसके हरे पत्तों को पीस कर उसमें फिटकिरी डाल कर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आँखों पर बाँधे। इसके पञ्चाङ्ग की कुल्ली करने से मुख और कंठ की सूजन तथा दर्द दूर हो जाता है।

यदि गुदा सूज गई हो, पेट में मरोड़ हो, मुख से रुधिर गिरता हो तो इसका साग खिलावें। जलोदर के लिये इसका शाक वा स्वरस बड़ा लाभकारी है।

१४१–मैनफल = मदन।

संस्कृत–मदन, पिंडो, विषपुष्पक, शल्यक, राठ। हिन्दी–मैनफल। बंगला–मयनाफल। तामिली–मडुकक्कुय। तैलङ्गी–बसन्त कडिमोचेट्टू। मराठी–गेलफल। गुजराती–मींढल। फारसी–अजौजुल्क। ला०–रेंडिया ड्यूमे–टोरम्।

मैनफल।

यह पहाड़ी देशों में होता है। इसका आकार मझोला होता है। पत्ते लम्बे, गोल, खुरदरे, और आमने सामने होते हैं। फूल-सफेद कुछ पीलापन लिये पाँच पँखड़ी वाला होता है। फल-आखरोट की तरह पकने पर पीले होते हैं। गुण में–मधुर, कड़ु, उष्ण, लेखन, लघु, कै लाने वाला, मुख, नाक, आँख आदि से जल उत्पन्न करने वाला, घातक, रूखा, कफकारक है। सूजन बायगोला, कोढ़, फोड़ा और मांसवृद्धि को मिटाने वाला है।

कै लाने के लिये मैनफल के गिरी का चूर्ण फँकाते

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हैं। मरोड़ में भी लाभदायक बताते हैं, मरोड़ में अफीम के साथ देवे।

कहते हैं कि प्रसव काल में मैनफल की धूनी प्रसूता को देने से सद्यः प्रसव होता है। आधी शीशी के दर्द में सूर्य निकलने के पहिले मैनफल को गाय के दूध में रगड़ कर सुँघा देवें।

फोड़े को पकाना हो तो रेवंद चीनी के साथ मैनफल को पीस कर फोड़े पर बाँध दें। अनाज को चौमासे में कीड़े से बचाना हो तो इसका फल ढेरों में गाड़ दें, कीड़े न लगेंगे।

१४२–मोरशिखा।

संस्कृत–सहस्राहि, मधुच्छदा, मयूरशिखा। हिन्दी–मोरशिखा। फारसी–असनाने, असलान।

मोरशिखा के छोटे-छोटे पौधे होते हैं जो प्रायः पक्की दीवारों की दरारों अथवा सूखी भूमि पर पाये जाते हैं। इसके पत्ते कटीले तथा सिरे पर मोर की कलँगी के समान चोटी होती है।

यह हल्की तथा पित्त कफ और आतिसार को नष्ट करती है। ६ माशा मोरशिखा और पाँच मिर्चों का कल्क नित्य लेप करने से सब प्रकार के बवासीर को लाभ होता है। इसके बीज की मींगी और लौंग को बराबर ले घिस कर आँच पर गरम करे और मस्तक पर लगावे तो शिर दर्द और माथे की ठनक अच्छी होती है। मोरशिखा का फल या इसका अतर सूँघने

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

से भी शिर का दर्द दूर होता है। इसका सर्वाङ्ग ग्रहण करना चाहिये।

१४३–महाशतावरी।

संस्कृत–शतावरी, बहुसुता, भीरु, इन्दीवर्त, वरी, नारायणी, शतपदी, शतवीर्या, पीवरी, महाशतावरी। हिन्दी–छोटी शतावर, शतमूली, सहस्रमूली। फारसी–बूजीदा। अरबी–शक़ाकुल मिश्री।

महाशतावरी।

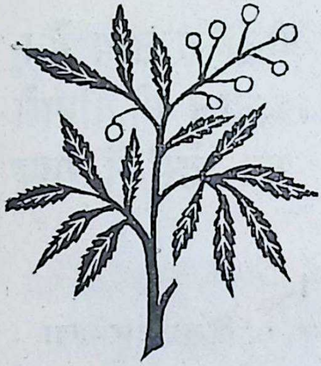

इसकी बेल होती है। इसके पत्ते सोयेके साग से मिलते हुये बारीक होते हैं। फूल सफेद होता है। इसकी जड़ दवाके काम में बर्ती जाती है। महाशतावरी, छोटी से कुछ मोटी तथा सफेद उत्तम होती है।

यह भारी, शीतल, कड़वी, स्वादिष्ट, रसायन, मेधा को बढ़ाने वाली, अग्निकारक, पुष्टिकर, स्निग्ध, नेत्रों को हितकारी, वीर्यकर्ता, स्तनों में दूध कर्त्ता, बलकारक और बातनाशक होती है। यह गोला, अतिसार, रक्त पित्त और प्रमेह को शान्त करती है। इसका दर्प नाशक बड़हर और शहद है। इसकी मात्रा ७ माशेकी है। इसकी प्रतिनिधि सफेद बहमन है।

१४४–महुआ।

संस्कृत–मधूक, गुड़पुष्प, मधुपुष्प, मधुश्रव, वानप्रस्थ, मधुष्ठील। हिन्दी–महुआ। बंगला–मोल महुया, जलमोल। मराठी–मोहाचा वृक्ष, मोहोवृक्ष। गुजराती–महुड़ो। तैलगू–ईपा। तामिलो–कठईल्लुपि। अंगरेजी–इलूपाट्री। फारसी–सफर्ज़ल, आबीविही।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यह गुण में मीठा, शीतल, भारी, बल और शुक्र-कर्त्ता तथा बात पित्त नाशक है। तृषा, रुधिर विकार दाह, श्वास क्षत और क्षयको भी दूर करता है।

१४५–राई।

संस्कृत–राई, राजिका, तीक्ष्णगंधा, आसुरी। हिन्दी–राई। बंगला–सरिषा। मराठी–महुरी। का०लासि राई। तैलगू–वर्णालु। अरबी–खरदल। अंगरेजी–मस्टर्ड सीड्स।

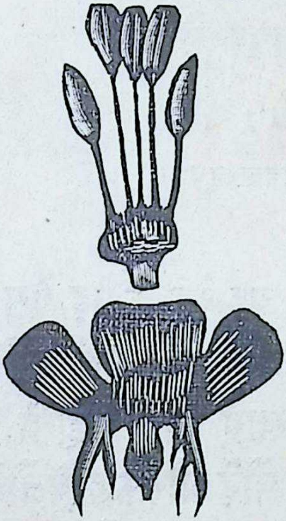

राई।

राई कफ पित्त का नाश करने वाली, रक्त पित्त को मिटानेवाली, तेज, सूखी, अग्निवर्धक है। कोढ़, खाज और कीड़ों के रोगी को लाभदायक है। राई मशाले के काम में आती है। शरीर के विविध स्थानों पर का दर्द दूर करने के लिये राई का चूर्ण गरम जल में फेटकर पलस्तरकी तरह लगाते हैं।

१४६–रामफल।

इसे महाराष्ट्र में राम फल। हिन्दी–लबलो या लोना कहते हैं। इसका पेड़ ऊँचा और पत्ते असोक की तरह। फल ताँबे के रंग का, बीज शरीफे के समान होता है।

रामफल।

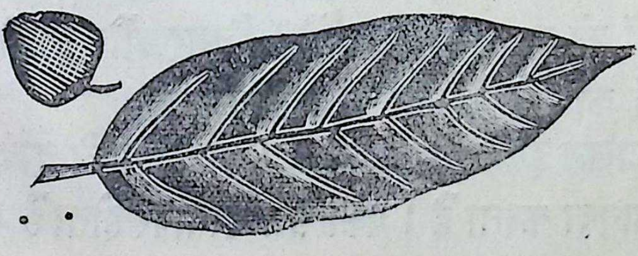

यह स्वादिष्ट, मीठा बात और कफ पैदा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

करने वाला खट्टा होता है। इसके सेवन से दाह, प्यास, थकावट, और भूख जाती रहती है। इसकी छाल ग्राही और बलकारक है। फल पेटकी कीड़ियों का नाशक है।

पके हुए रामफल को छील कूटकर रस निचोडले पावभर रसमें मुलहटी, इलायची, सत, गिलोय, बंशलोचन और मिश्री मिलाकर पीने से गर्म बादी, धात गिरना, सुजाक आदि को लाभदायक है।

१४७-रेंड़ खरबूजा।

अंगरेजी-पपीता। हिन्दी-रेड़ खरबूजा, अंडखरबूजा।

रेंड़ खरबूजा।

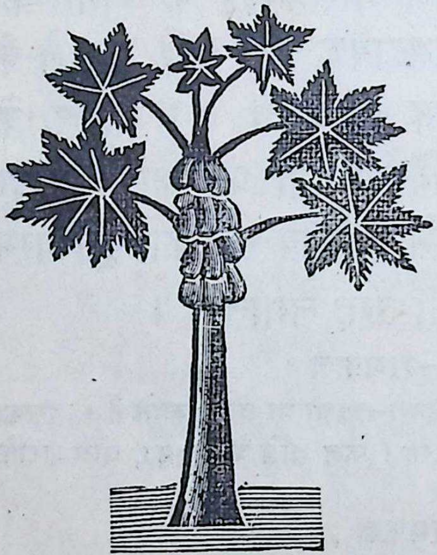

यह रेड़ के पेड़ ऐसा बड़ा होता है पर इसमें शाखाएँ नहीं होतीं। पत्ते चौड़े और फल बिजौरे के समान होते हैं।

कच्चा फल हाजमें के लिये बड़ा उत्तम है। इसके दूध को सुखाकर चूर्ण करके खिलाने से मेदे और आँतों को बड़ा लाभ होता है। जिगर और तिल्ली के रोगियों को देने से बड़ा फायदा होता है। हृदय की जलन इससे मिट जाती है। इसका पानी दाद को बड़ा फायदा करता है। पक्का फल दस्तावर होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१४८-लाल मिरचा।

संस्कृत-कटुवीरा। हिन्दी-लाल मिरचा, मिर्चा। बंगला-लंका। मराठी-मिरची। अरबी-फिलर अहमर। फारसी-फिलर शुर्ख। ला०-केप्सिकम। अंगरेजी-ड पेयर।

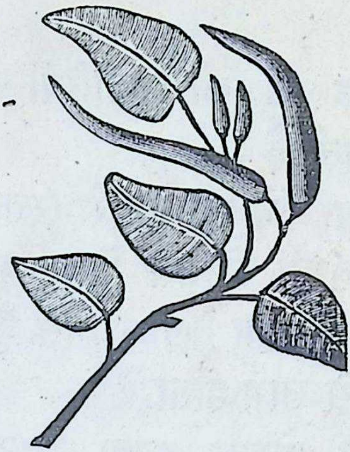

लाल मिरचा।

इसका पौधा मकोय की भाँति और फूल सफेद होते हैं। शुरू में फल का रंग हरा पकने पर लाल हो जाता है। यह सारे हिन्दुस्तान में उत्पन्न होता है और बहुत खर्च में आता है।

इससे पित्त और दाह उत्पन्न होता है। यह जठराग्नि को बढ़ाता है। लाल मिरचे से कफ, आँव और शूल उत्पन्न होता है। इसके बीजों का तेल गँठिया में बहुत लाभदायक है।

यदि किसी को पागल कुत्ता या स्यार काटे हो तो उसके घाव में पिसी हुई लाल मिरच भर देने से विष दूर हो जाता है।

काटे हुए सर्पविष से मनुष्य यदि अचेत हो गया हो तो पिसी हुई लाल मिर्च रोगी के मुखमें छिड़क देवें इससे रोगी सचेत हो जायगा।

जहाँ पर बिच्छू ने डंक मारा हो उस स्थान पर लाल मिरचे को पानी में पीसकर लेप करने से आराम होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लाल मिरचा कपूर और हींग की गोली बनाकर हैजे में देते हैं, रेंवनचीनी, सोंठ और मिरचा इन तीनों को बराबर २ लेकर गोली बनाकर सेवन करने से कब्ज जाता रहता है।

लाल मिरच के बीज के तेल को अम्हौरियों पर लगाने से अम्हौरियाँ मर जाती हैं।

जिनको मल द्वारा खून जाने की बीमारी (रक्तातिसार) हो गई हो, इसके बीजों को तेल में डालकर जला डालें और उसे छान लेवें, इस तेल की दस बूँद खाँड में मिला कर खिलाने से लाभ होता है।

जिसको तिजारी का बोखार आता हो उसे चाहिये कि इस लाल मिरच को पानी में भिंगो कर मसल डाले और छान कर दो बूँद आधी छटाँक जल में डाल कर सेवन करे तो लाभ होगा।

१४८—सतावर।

सं०—सतावरी, बहुसुता, सतवीर्य्या, नारायणी, पीवरी, महासतावरी। हिं०—छोटी सतावरी, सतमूली सहस्रमूली। मराठी—सानी कांटेसेरु। गुजराती—सत्तावलि। अंग्रेजी—शकाकुलमिश्री। फारसी—बूजीदा। लाटिन—ऐस्पेड सरेशिमोसस।

सोवे के साग के समान महीन पत्ते होते हैं। इसमें सफेद फूल लगते हैं।

१४९—सह्मालू।

हिं०—सह्मालू, निगुंडी, मेउड़ी, सेदुआरि। बं०—निसिन्दा। मं०—निगुंडी, निगड़ी, वनय। को०—निगूड़। का० करियल्लौक्कि। गु०—नगोड़ा, नगड़। तै०—तेलावा बीली। ता०—नोकची। द्रा०—सान्वालि। ला०—वाइटेक्स निगंडी।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१४६-सह्मालू।

सह्मालू के पत्ते नीम के पत्ते के आकार से कुछ बड़े तथा अनीदार होते हैं। काले रंग वाले सह्मालू को निर्गुंराडी भी कहते हैं। इस के पत्ते अरहर के पत्ते के आकार के बहुत मुलायम और गुलगुले होते हैं। इसके पत्तोंको पुस्तक में रखने से पुस्तक में कीड़े नहीं लगते। पेड़ तीन चार हाथ बड़ा होता है।

गुण—स्मरणशक्तिको बढ़ाने वाला, कड़वा कषेला चरपरा, हलका, बालों को लाभदायक, नेत्र को हित-कारी। आम बात, शूल, कृमि, कोढ़, स्वांस, अरुचि तथा कफ ज्वर को दोनों प्रकार का सह्मालू लाभ पहुँ-चाता है। इसकी जड़ दवा के काम में आती है। दो मासे की एक खुराक होती है। इसके पत्ते भी क्रिमि आदि कीड़े और बात कफ को हरण करते हैं।

(१) सँभालू, और करफस अनार की कली तीन तीन माशे घोंटकर पिलाने से कुत्ता काटे का विष उतर जाता है।

(२) जिस घर में साँप और बिच्छुओं के रहने की आशंका हो उस घर वालों को चाहिये कि घर में

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सम्हालू की पत्ती की धूनी देवें। दो चार दिन लगातार धूनी देने से साँप बिच्छू घर छोड़कर आपसे आप भाग जावेंगे।

(३) यदि किसी को अधिक स्वप्नदोष होता हो तो रात में सोते समय बिस्तरे के नीचे सम्हालू के पत्तों को रखकर सोवे स्वप्नदोष नहीं होगा।

(४) सँभालू का बीज खाने वाला मनुष्य नपुंसक हो जाता है। बीजों को घिसकर लगाने से सरसाम और दिमाग की सूजन दूर होती है।

(५) गठिया के रोगपर सँह्मालू के पत्तों का काढ़ा पीने से बड़ा लाभ होता है। सूजन और क्सूति का रोग भी जाता रहता है। सूजन और गाँठ पर गरम गरम पत्तों को बाँधने से गाँठ की सूजन को तत्काल लाभ पहुँचता है।

१५१-सिंघाड़ा।

संस्कृत-शृङ्गाटक। हिन्दी--सिंघाड़ा। बंगला-पानीफल। मराठी-शिंगाड़ा। लाटिन-ट्रेपालिस पीनोसा। अंगरेजी-वाटरकेल्ट्राप।

सिंघाड़ा।

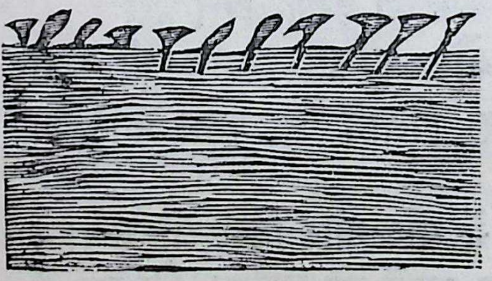

सिंहाड़ा बड़े २ गढ्ढों वा पोखरों में बहुतायत से पैदा होता है इसके छिलके पर इधर उधर बड़े

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बड़े काँटे होते हैं यही कारण है कि संस्कृत में इसका नाम शृंगाटक है।

इसका फल एक काले मोटे छिलके से ढका रहता है, जिसको छील कर निकाल देने से भीतर से सफेद रंग का सिंघाड़ा निकल आता है, परन्तु जब यह अच्छी तरह पक जाने पर छीला जाता है तो इसके गरी का ऊपरी भाग कुछ लालिमा लिये सफेद रहता है परन्तु भीतर की गरी का रंग चाहे कच्चा हो वा पक्का सदा सफेद निकलता है। इसकी गरी कच्चा वा पका कर दोनों ही प्रकार से खाने के काम में आती है। इसको सुखाकर पीस लेने पर आँटा बन जाता है, जिससे पूड़ी वा हलुवा बनाया जाता है।

सिंघाड़ा, पुष्ट, ग्राहक और हल्का, वीर्यवर्धक, बात-कारक, कफवर्धक, दाहनाशक और मीठा होता है।

सिंघाड़े की बेल को पीस कर दाद पर लगाने से दाद रोग नष्ट हो जाता है। सिंघाड़े का हलवा खाने से वीर्य की वृद्धि होती है। सिंघाड़े का हल्वा दूध के साथ सेवन कराने से गर्भवती स्त्रियों का रक्तस्राव बन्द हो जाता है।

१५२–हल्दी।

संस्कृत-हरिद्रा, कांचनी, वरवर्णिनी, कृमिघ्ना, हल्दी, योषितिप्रया, हट्टविलासिनी और जितने रात्रि के ये संस्कृत नाम हैं सब हल्दी का नाम जानना। हिन्दी–हलदी, हरदी। बंगला-हरिद्रा। मराठी–हलद। का०–अरसिन। तैलगू-पासुपु। गुजराती–हलदर। फारसी–अरूकुलसवागैन, जर्दचोब। इंगलिश–टारमेरीक। लाटिन--करक्यूमालागा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हल्दी ।

यह एक तरह की कंद है और मसाले के काम में आती है ।

गुण—कटु, रूक्ष, तिक्त, गरम और वर्णकर्तृ है । इसके सेवन से कफ पित्त, त्वचादोष, रक्तदोष, प्रमेह, सूजन पांडुरोग और व्रण ये नष्ट हो जाते हैं । दो माशे की एक मात्रा होती है ।

बनहरिद्रा बनहरदी ।

हिन्दी—वन हल्दी का कंद, जंगली हल्दी । मराठी—रान हलद । गुजराती-बनहलद्र । यह बात रक्त और कोढ़ को नष्ट करने की दवा है । इसकी मात्रा दो माशे की है ।

कपूर हल्दी ।

संस्कृत-दार्वीभेदा, आम्रगन्धा, दारुकर्पूरा, सुरीमत्, पद्मपत्रा, सुरतारका । हिन्दी—आंवाहल्दी । बंगला—आम आँदा । मराठी—आंबेहलद । कर्नाटी—हलो अरसोन । तैलङ्गी—कारुपासुपु । अंग्रेजी—मेगोजिंजरा । लाटिन—कर्क्यूमा एरोमेटिका ।

कर्पूर हल्दी शीतल, पित्त हरण करने वाली, बातकर्त्ता, कड़वी मीठी और सब प्रकार की खुजली को नष्ट कर देती है । इसके जड़ को लेकर दो माशे की एक खुराक बना कर दवा के काम में लावें ।

दारुहल्दी ।

संस्कृत—पर्जन्या, दार्वी, पर्जनी, दारुहरिद्रा, कटकटेरी, पचपञ्चा, पीता, कालेय, पीवद्रु, हरिद्रु, कपोतक, पीतदारु । हिन्दी-दारुहल्दी । बंगला—दारुहरिद्रा । गुजराती-दारुहलद्दर । का०-मरनरिसिन । तैलङ्गी-पासुपु । अंगरेजी-पीकाक । लाटिन—बेबेंरिस ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इसका तासीर गरम होता है, कटु, तिक्त स्वेद पैदा करने वाली, विषघ्न तथा कफ पित्त नाशक है। प्रमेह खुजली, त्वचा के दोष, घाव वा सूजन, कर्ण विकार, मुखरोग, तथा नेत्र रोग को नाश करती है, इसकी लकड़ी दवा के काम में लायी जाती है, मात्रा दो माशे की होती है।

(१) हल्दी, चूना तथा शहद, इनको मिला कर लेप करने से चोट चपेट से उत्पन्न सूजन जाती रहती है।

(२) हल्दी को गरमा कर यानी भून कर दाँत के तले दाबने से दाँत का दर्द छूमन्तर हो जाता है।

(३) हल्दी को घिस कर आँख पर लगाने से आँख की ज्योति बढ़ती है।

(४) हल्दी को पानी के साथ खूब महीन पीस कर उसमें थोड़ा पानी मिला आग पर चुरा कर चोट पर लेप करने से चोट की सूजन और दर्द घट जाता है।

(५) हल्दी को पीस कर उसमें घी नमक मिला कर आग पर चुरा लेवे फिर बासी मुँह गरम गरम चाटे तो खाँसी जाती रहे।

(६) भूनी हुई हल्दी में सोंठ और खाँड़ मिला कर फाकने से जोड़ों का दर्द अच्छा होता है।

(७) हल्दी का लड्डू खाने से गठिया की बीमारी अच्छी होती है।

१५३–हर्रं।

हर्रं के संकृत में १५ नाम हैं। हरड, हड, हर्र।

हरड शाखी अथवा वनस्पति जाति का एक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वृक्ष है। इसकी उत्पत्ति प्रायः ठंडे और पर्वती देशों में होता है। इसके दो-दो पत्ते आमने सामने और मोटे तथा अमरूद के पत्तों के समान और कोमल तथा लाल रंग के होते हैं। इसका फूल बारीक और मौर के समान होता है। फल १ या १॥ इंच का लम्बा- होता है। इसको सुखाने से इसके ऊपर की छाल सूख कर खड़ी पाँच रेखा हो जाती है।

बड़ी हरण तोल में २ से ५ तोले तक की होती है और बीज का तौल आधे से लेकर १ तोले तक की होती है। हर्र जितनी ही नवीन होगी उतनी ही लाभ- दायक होती है। प्रयोग में हर्र की छाल ली जाती है। धिजया, रोहिनी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन्ती और चेतकी ये हरण की सात जातियाँ हैं। समस्त रोगों में विजया हरड ही उत्तम लाभ देती है। हर्र-अग्नि वर्द्धक, त्रिदोष नाशक, बल बुद्धि बर्द्धक, मल शोधक, कडवी, कषैली, और रक्त पित्त नाशक है। हर्र आँवला और बहेरा को रात भर भीगने दे फिर प्रातः उसी जल से नेत्र धोने से नेत्र के सब प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं। इसका अर्क, पीने से कफ और खाँसी भी दूर होती है।

एक-एक माशा हर्र की छाल, नागरमोथा और मुलहठी का क्वाथ बराबर ७ दिन तक पिलाने से बालक का ज्वर नष्ट होता है।

हर्र की छाल, अजवायन, जवाखार, किरवारे का

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गूदा. गोखरू, पाषाणभेद छ माशा और अडूसे के ५ टंक चूर्ण का क्वाथ मधु के साथ नित्य पीने से दाह वाला मूत्र कृच्छ्र नष्ट होता है।

बड़ी हर्र का छाल, सोंठ और नागरमोथा इनका दो टंक चूर्ण प्रति दिन ७ दिन तक खिलाने से सन्निपात ज्वर और अतिसार नष्ट होता है।

१५४-हंसराज।

संस्कृत-मराठी-हिन्दी-में हंसपदी। बंगला-गोयालेलता। फारसी-परस्योश्राशां मेडिनहेअर। अरबी-शारुल जिवाल। लाटिन एडोऐंटम लून्यूलेटम बोलते हैं।

हंसराज।

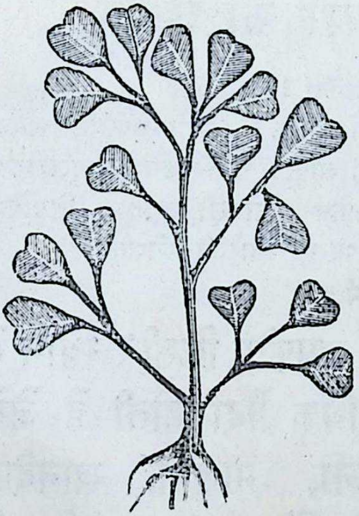

इसके पत्तों का आकार हंस के पैर के आकार का सा होता है। इसका पौधा छोटा और डंठल स्त्री के बालों के समान काले रंग के होते हैं।

गुण-जिसकी आँख में नासूर हो उसे चाहिये कि इसके पत्तों को गार कर उससे निकले हुए रसको आँखों की कोवों में डाल देवे। क्रमसः दो चार दिन ऐसा करते रहने से आँखों का नासूर जाता रहता है, इसको उबाल कर अंडकोष पर बाँधने से अंडकोष की सूजन जाती रहती है। इसकी पत्ती को पीस लेवे फिर घी में मिलाकर लेप करे

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तो शिर का गंज जाता रहे। यदि किसी के सिर पर बाल न जमता हो तो चाहिये कि सोसन का तेल शराब और हंसराज को पीसकर इन तीनों को एक में मिला लेवे और फिर उस स्थान पर लगावे और कुछ दिन इसी तरह लगाता रहे तो बाल उग आवें। ताजी यानी हरी हंसपदी को पीस कर लेप करे तो बावले कुत्ते का काटा घाव, पुराना घाव तथा सिर की गंज ये सब अच्छे हो जाते हैं।

परिशिष्ट औषधियों की सूची।

१५५-अफीम।

संस्कृत-खसफलक्षीर, आफूक, अहिफेनक। हिन्दी-अफीम, अमल, आफू। बंगला-अहिफेन। मराठी-अफू, आफू। दे०-कडवी। गुजराती-अफीण। तैलगू-नाल्लामंदु। कर्नाटी-अफेन। फारसी-अफ्यून, तिर्याक। अरबी-लबनुलक्खसखाश। लाटिन-ओप्यसं। अंगरेजी-ओप्यम।

अफीम।

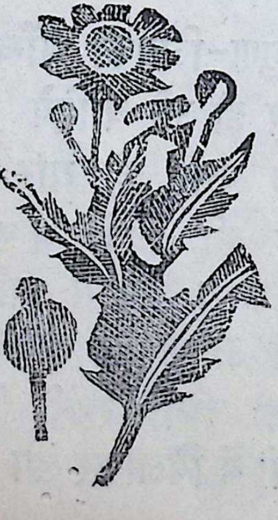

अफीम किसी२ स्थान में अधिक पैदा होती है जैसे पटना, मालवा, खानदेश और सिंध। यह वनस्पति भी क्षुप जाति की है। इसके डंठल में जब फूल फूलकर झर जाता है तो उसकी जगह में एक छोटीसी बोड़ी निकल

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आती है फिर कुछ और बड़ी हो जानेपर इसको किसान लोग बहुत बारीक छूरी से अगल बगल दो, तीन चीरा लगा देते हैं। इस चीरे से बोंड़ी से जो रस निकलता है उसी को अफीम कहते हैं।

गुण–ग्राही, अहिफेनशोषक, कफनाशक, पित्त जनक बात पित्त को बढ़ाने वाली, निद्रा कर्त्री, आक्षेप बात हरण कर्त्री, निद्रा लाने वाली, स्वेदजनक, मादक और वेदना को नष्ट करने वाली है।

प्रयोग–श्वास, खासी, मूत्रातिसार, अतिसार और रक्तस्राव को रोकती है।

अफीम चार प्रकार की होती है, जारण, मारण, धारण तथा सारण, जिनका लक्षण क्रम से दिखलाया जाता है। सफेद रंगवाली अफीम को जारण कहते हैं और जिस अफीम का रङ्ग काला होवे उसको मारण कहते हैं। पीले रङ्ग वाली को धारण और जिसका रङ्ग रङ्गविरङ्ग का हो उसको सारण कहते हैं।

(१) मेथी और गुलाब जल के साथ अफीम की बोंडी का जोश देकर आँखों को धोवे तो आँख में आई हुई लाली जाती रहे दर्द भी रफा होवे।

(२) अफीम के बोंडी के भीतर की सफेद झिल्ली को भिंगाकर पीने से सूखी खाँसी का आना, पुराना ज्वर तथा थूक के साथ रुधिर आना आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

(३) अफीम के फल का ऊपरी छिलका पीस

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लेवे और मस्तक पर उसका लेप करे तो सिर का दर्द जाता रहे।

(४) यदि निद्रा न आती हो तो चाहिये कि इसकी बोंडी को तोड़ कर सूँघे वा इसका बीज लगभग डेढ़ तोला के खा जावे तो कुछ २ नशा हो कर नींद आ जाती है।

(५) अफीम केसर फिटकरी और गिलेइरमनी इनको एक साथ पीस कर लगावे तो ढलका तथा आँख की ललाई का दर्द जाता रहे।

(६) अफीम के बीज को पोस्ता का दाना कहते हैं। इससे तेल निकाला जाता है। इसके तेल में अफीम मिलाकर लेप करे तो सिर का दर्द जाता रहे।

(७) बोंड़ी की टोपी और पोस्ता के दाने को बराबर २ लेकर टिकिया बना लेवे फिर उसको खावे तो पेट का दर्द जाता रहे।

१५६—अमरूद।

संस्कृत, हिन्दी—अमरूद। बंगला, अंगरेजी—ग्वाबा।

अमरूद।

इसकी लंबी लंबी पत्तियाँ होती हैं, जो आम के पत्तियों से छोटी और उसीसे मिलती जुलती जान पड़ती हैं। इसके छोटे २ गोल सफेद रंग फूल होते हैं। अमरूद दो

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रकार का होता है। एक सफेद गूदा और दूसरा लाल गूदा वाला। दोनों ही खाने में स्वादिष्ट होते हैं। इसका पेड़ बहुत बड़ा नहीं होता। साखाएँ जड़ से फूट कर तने के चारों तरफ फैल कर पेड़ को छतनार बना देती हैं।

अमरूद का तासीर ठंडा, पाचक, कफकारी और कषैला होता है। अमरूद का बीज अधिक कफकारी होता है।

इसका फल खाने के पहले उसके ऊपरी छिलके को छील लेना चाहिये, फिर चाकू से काट कर भीतर से बीज निकाल कर फेंक देवे और बाकी गूदा काट२ कर खावे। सुबह और सायंकाल में इसका खाना अहित कर होता है। दोपहर वा तीसरे पहर में भोजनोपरान्त खाना गुणकारी है।

(१) अमरूद खाने से दस्त खुलासा होने लगता है। भोजन में रुचि बढ़ती है।

(२) इसके टहनियों की दतून करने से दाँत का दर्द घटता है और उकसे हुए दाँत बैठ जाते हैं।

(३) अमरूद के टूसे को काला नमक और सौंफ के साथ पीसकर थोड़ा पानी मिला लेवे और आम वाले रोगी को सुबह साम पिलावे तो आम का गिरना बन्द हो जाता है।

१५७-आम्रातक।

संस्कृत—आम्रातक। हिन्दी—अम्बाडा। गुजराती—अमेडा। बंगला—आमडा। तैलंगी—अंबालम। अंग्रेजी—होगाप्ज़म वाइल्ड मैंगो।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

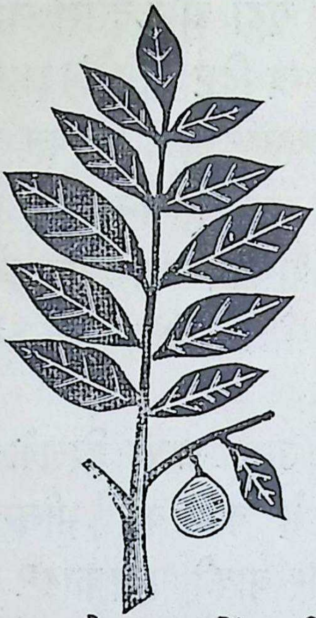

आम्रातक।

आम्रातक का वृक्ष प्रायः हिन्दुस्तान के सभी भागों में पाया जाता है परन्तु कहीं कहीं पर इसकी अधिक उपज होती है जैसे कर्नाटक और कोकन। इसका पेड़ अधिक से अधिक पच्चीस तीस फीट तक ऊँचा होता है। तना भी अधिक मोटा होता है; परन्तु टिकाऊ न होने के कारण इसे इमारत के काम में नहीं लगाया जाता। पत्ते राम-फल के ऐसे होते हैं और आम की तरह इसमें भी बौर लगता है। फल छोटे और खटमिट्ठे होते हैं।

गुण—तीखा, भारी, गरम, रुचिवर्द्धक, कंठ को हितकारी-दस्तावर, आमवात नाशक और पित्त तथा कफकारक होता है। इसके पके फल का तासीर ठंडा, तृप्तिकारक, मधुर और बलकारक होता है। इसके सेवन से धातु की वृद्धि, बात का नाश और मल स्तंभन भी हो जाता है। नये २ निकले पत्तों के सेवन से अग्नि बढ़ती है, ये रुचिकर और ग्राहक होते हैं।

(१) आम्रातक का कच्चा फल तोड़ लावे और उसे कुचकुचा कर उसका रस-चार रत्ती काली मिरच और पाँच तोला खाँड़ इन तीनों चीजों को एक में मिलाकर एक हफ्ता लगातार दोनों समय पीता जावे तो अम्लपित्त की बीमारी को लाभ पहुँचता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(२) आम्रातक के पत्तों का रस निकाल लेवे फिर उस रसको दो बूँद कानमें डाले और बाकी रस को कान के बाहर चारो तरफ चुपड़ दे तो कर्णशूल जाता रहे ।

(३) अंबाडे की छाल का काढ़ा बना डावे फिर उस काढ़े में अम्बाड़े के पत्तों का चूर्ण मिलाकर पीवे तो आमातिसार का नाश होवे ।

(४) इसके वृक्ष से काफी गोंद निकलता है। उस गोंद को पेड़ से छुड़ा लावे और उसे पीस कर यदि किसी दवा में अधिक चरपराहट हो तो थोड़ा सा मिला देवे तो दवा की चरपराहट घट जाती है।

(५) इसका मुलायम २ फल बाजार से खरीद लावे और उसमें अन्दाज से नमक धनिया, मिरच आदि चटनी के मशालों को मिला कर चटनी बना लेवे । यह चटनी अति रुचिकर होती है ।

१५८–आकाश बेल (अमर बेल)।

संस्कृत—अमरवल्ली, खवल्ली, आकाशवल्ली। हिन्दी—आकाशवौं, अमरबेल, आकाश बवरी। कानड़ी—नेदमुदवल्ली। मराठी—आकाशवेल। कौं०—अन्तवेल। अंग्रेजी—अफतोमून। तैलगू—इन्द्रजाल।

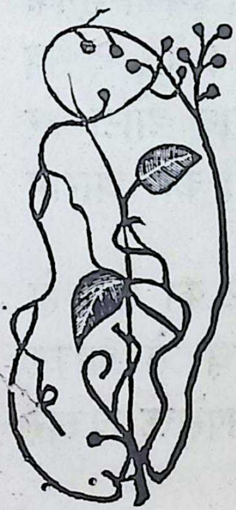

यह एक प्रकार की लता है। जो वृक्षों पर पीले रंगकी लटकती रहती है। यह मोटे सूत सी मोटी होती है। परन्तु इतनी अधिक बढ़कर हो जाती है कि इसकी गणना करना कठिन हो जाता है । इसी को आकाश वेल वा अमरबेल कहते हैं ।

जहाँ कहीं किसी प्रकार से इसकी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

एक भी डंठी हाथ दो हाथ वा इससे अधिक किसी पेड़ पर पड़ जाती है कि बस वह आपसे आप उस पर बढ़ने और फैलने लगती है। साल दो साल में यहाँ तक बढ़कर पेड़ को घेर लेती है कि उस पेड़ का सत्यानाश ही कर डालती है।

गुण—ग्राही, पिच्छिल, कषैली और तीती होती है, अग्नि को बढ़ाती है।

यह आम, कफ और पित्त को नाश करती है, नेत्र रोगके लिये भी लाभकारी है। इसका सर्वांश दवा के काम में लिया जाता है। दवा की मात्रा चार रत्ती से लगायत डेढ़ तोले तक है। सेब, बादामरोगन और कतीरा इसके दर्पनाशक हैं। और काली निसोथ अथवा विशफायज प्रतिनिधि है।

[१] आकाश बेल का क्वाथ पीने से दस्त आती है। इसका क्वाथ मृगी के रोगी को भी लाभदायक है।

[२] जब पेट में कीड़े पड़ जावें तो इसको मुनक्के के साथ औंटा कर रोगी को पिला देवे। धीरे २ सब कीड़े निकल जाते हैं। गुलकन्द के साथ औंटा कर पीने से मस्तक में उत्पन्न हुए विकारों को आराम पहुँचता है।

[३] किसी के हाथ पाँव में वायटे का रोग हो गया हो वा सुन्न हो गये हों तो इसे वृक्ष से लाकर फटे दूध के साथ औटा कर पिला देवे उपरोक्त विकार जाते रहेंगे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दवा के प्रयोग में ध्यान देने की सबसे बड़ी बात यह है कि आकाश बेल को कूटना नहीं चाहिये क्योंकि कूटने से इसका प्रभाव जाता रहता है। जब दवा के काम में लाना हो तो इसके टुकड़े टुकड़े करके एक साफ कपड़े में बाँध कर पोटली बना लेवे, फिर पोटली को औटा कर दवा के काम में लावे।

१५६-कनेर।

संस्कृत-करवीर, श्वेतपुष्प, शतकुम्भ, अश्वमारक ये नाम श्वेत करवीर के हैं। हिन्दी-सफेद कनेर । बंगला-श्वेत करबी । का०-वाकर्णालिगे। मराठी-श्वेत कणेर। गुजराती-धोली कणेर । अंग्रेजी-ओलीआंडर। रक्त कर्णवीर के संस्कृत नाम चंडात, रक्तपुष्प, लगुड हैं। हिन्दी-लाल कनेर। बंगला। रक्त करवी। मराठी-तांबडीकणेर। गुजराती-रांती कणेर। का०-केंगणलिंगे। तैलङ्गी-कानेर चेट्टु । अरबी-सुमुल । फारसी-खरजेहरा। अंग्रेजी—अलियंडर।

कनेर।

कनेर चार प्रकार की होती है। एक का फूल सफेद होता है और दूसरे प्रकार के कनेर का फूल लाल होता है। तीसरी का फूल पीला और चौथी का गुलाबी रंग का होता है। यह कनेर भी सात उपविषों में एक उपविष कही गई है।

गुण—लाल और गुलाबी ये दोनों कनेर कड़ुवी, कषैली और कटु होती हैं। प्रयोग व्रण, कोढ़, उष्णवीर्य,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नेत्र पीड़ा, कृमि, घाव, खुजली आदि रोगों को हरण करती है। खाने पर विष का काम करती है।

१६०–पीली तथा काली कनेर।

पीली कनेर को सुगन्धित कुसुम भी कहते हैं। इसका फूल पीले रंग का बड़ा सुहावना और सुगन्धित होता है। इसी प्रकार काले रंग की कनेर भी होती है परन्तु वह बाग बगीचों में इधर कहीं देखने में नहीं आती, गुलाबी रंग की कहीं कहीं अवश्य दिखलाई पड़ती है।

कनेर के खिलाने से घोड़ा मर जाता है। प्लेग की गिल्टी पर कनेर की छाल को पीस कर लेप करने से गिल्टी बैठ जाती है। कनेर के पत्तों को सुखा कर जला लेवे और फिर उसकी राख को पुराने घावों पर बुरक देवे। कई दिन बराबर बुरकने से घाव सूख कर अच्छे हो जाते हैं।

कनेर के पत्तों को औंटा कर तरेड़ा करे तो जाँघ की दर्द जाती रहे। यह काढ़ा आँख की लालिमा और खुजली को भी दूर करता है। चाहिये कि इससे आँख धोवे। अफीम और उशुक के साथ कनेर की छाल पीस कर शिर पर लेप करे तो सिर का दर्द जाता रहे और पुराना घाव भी अच्छा हो जावें। कनेर के पत्तों और छाल को एक में मिला कर औंटा लेवे फिर उस औंटे हुए पानी को घर में छिड़क दे तो घरमें के दीमक, साँप, बिच्छू और पिस्सू उस घर को छोड़ कर भाग जाते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ताजे २ कनेर के फूल को उतार लावे और उसको मीठे तेल में डाल कर ४० दिनों तक उसी में पड़ा रहने दे, जब फूल गल जावें तब उसमें उतना ही जैतून का तेल भी मिला देवे फिर उस तेल को दवा के काम में लावे। इस तेल के लगाने से शरीर के सफेद दाग, पट्ठों का दर्द, कोढ़ तथा पीठ का दर्द दूर हो जाता है, पुरुषेन्द्रिय पर मालिश करने से सुस्ती जाती रहती है।

दस सेर दूध में बीस तोले सफेद कनेर की जड़ मिला कर भली प्रकार औंटा डाले, फिर आग से उतार कपड़े से छान कर दही जमा देवे। जब दही जम जाय तो उसको मथानी से मथ कर उसमें से घी निकाल लेवे। यह घी बड़ा गुणकारी होगा।

जिसकी नसें कमजोर हो गई हों उसे उपरोक्त घी को एक रत्ती मक्खन में मिलाकर खिला देवे, फिर उसी घी का नसों पर मर्दन करे और ऊपर से पान बाँध देवे, अवश्य लाभ होगा। इस लेप की गरमी से यदि फुंसियाँ निकल आवें तो सौ बार धोवे हुए घी को उन पर चुपड़ दे और गुड़ तेल खटाई का सेवन न करे, जिसको सुस्ती हो गई हो उसको पान पर लगा कर खिलावे तो उस मर्द की सुस्ती जाती रहे।

१६१–कमल।

कमल को संस्कृत, हिन्दी, अरबी, मराठी आदि सभी भाषाओं में कमल ही कहते हैं केवल अंगरेजी में इसका नाम लोटस और लाटिन में नीलमबिम्रम स्पेसियोसम कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कमल ।

कमल का नाम इतना विख्यात है कि छोटे २ बच्चे तक जिनको की कभी कमल देखने का अवसर नहीं मिला है वे भी कमल का नाम जानते हैं। इसका खास कारण यह है कि इसको लोग बड़े आदर की दृष्टि से देखते हैं। यह बड़े बड़े सरोवरों में अधिक तर पाया जाता है और कभी २ छोटे सरोवरों में भी दीख पड़ता है जिसे कि मनुष्य लोग बड़ी सावधानी से लगा कर रखते हैं। इसके बड़े २ गोलाकार पत्ते होते हैं जो कि पानीपर फैले रहते हैं। ईश्वर दत्त इन पत्तों पर ऐसी चिकनाहट होती है कि पानी की बूँदें इनपर नहीं टिक सकतीं। इसकी जड़ तालाब के सतह में जमीन से लगी रहती है, जो बहुत पतली और पानी के अन्दर छिपी रहने के कारण दिखलाई नहीं पड़ती।

कमल की कई जातियाँ होती हैं जिनमें खास कर सफेद लाल और नीले की उपज अधिक मिलती है। सफेद फूल वाले कमल को पुंडरीक, लाल फूल वाले कमल को कोक नद और नीले फूल वाले कमल को इन्दीवर के नाम से पुकारते हैं। इसे सब अंगों सहित पद्मिनी के नाम से पुकारते हैं। जिसमें इसका बीज

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उत्पन्न होता है उसको कर्णिका बोलते हैं, फूलों के भीतर बीच में एक बहुत बारीक रंग होता है जिसपर हाथ धरने से अति मुलायम लेप सा मालूम होता है जिसको मकरंद, और केसर को कमल केसर,उसकी नाल यानी डंठल को मृणाल कहा जाता है । जड़को भसीड़ वा कन्द, और बीज को कमलगट्टा कहते हैं।

कमल का सभी भाग बड़े काम का होता है, यहाँ तक कि इसकी जड़ भी गरीबों को रोटी बना कर खाने के काम में आती है। जब गरीबों के खाने भरको काफी अन्न नहीं प्राप्त होता तो इसकी जड़को तालाबों से खन कर निकाल लाते हैं और पीस कर रोटी बनाते हैं। कमलगट्टा का तो कुछ कहना ही नहीं, कच्चा रहने पर इसे लोग छील कर इसके भीतर को गरी को खाते हैं और पकी यानी सूखी हुई गरी को पीसकर हलुवा बनाया जाता है जो कि अति स्वादिष्ट और बड़ा पौष्टिक होता है।

प्रदर की दवा—नीले कमल की केशर, जीरा, मुलहठी और संचलनमक इन तीनों का चूर्ण बना कर शहत और दही के साथ सेवन करने से प्रदर रोग का नाश होता है।

रक्तार्श की दवा—कमल की केशर, ताजा मक्खन, शहद और सफेद मिश्री इनको एक में मिलाकर सेवन करने से खूनी बवासीर वाले रोगी को लाभ पहुँचता है।

दाहनाश की दवा—भसींडाशालुक, कमलनील

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कमल केशर और चन्दन इन सब चीजों को शीतल जल में पीसकर जिस स्थान पर दाह होता हो। पतला लेप करे तो मस्तकादि अँगों का दाह शान्त होता है। इसकी दूसरी दवा यह है कि कमल केसर और आँवले को एक में मिला और पीस कर लेप करे तो दाह का नाश हो जाता है। तीसरी दवा—केले के चौड़े २ पत्तों को सोनेके विस्तरे पर बिछा देवे और उसपर कमल का फूल बिछा कर उसके ऊपर रोगी को सुला देवे फिर चन्दन के जलसे तरकर ताड़के पंखेसे मंद २ हवा करे तो दाह ज्वर शान्त होता है।

वमन रोकने की दवा—भूने हुए कमलगट्टे की मींगी निकाल कर उस मींगी के भीतर का हरा टुकड़ा निकाल देवे और बाकी सफेद भाग को पीसकर शहद के साथ चाटे तो वमन होना बन्द हो जाता है।

कमल के बीज को पीसकर उसमें खाँड़ मिलाकर सेवन करने से स्त्रियों का स्तन कड़ा हो जाता है। इस दवा को लगातार एक महीने तक सेवन करना चाहिये।

कमल केसर पीस लेवे और उसमें मिश्री और मक्खन मिलाकर सेवन करे तो खूनी बवासीर का नाश होता है।

यदि लड़कों वा बड़े बूढ़ों की काँच निकलती होवे तो उन्हें चाहिये कि कमल के पत्तों को पीस कर खाँड़ के साथ खावें। काँच का निकलना बन्द हो जायगा।

सिर और आँखों पर तरी लाने वाला तैल—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कमल की जड़ को तिल के तेल में औटाकर छान लेवे और फिर उसे बोतल वा शीशी में रख छोड़े। सुबह शायम जब इच्छा हो मस्तक पर लगावे। इस तेल के लगाने से आँख और मस्तक पर तरी आती है।

१६२–करेला।

संस्कृत–कारवेल्ल, कठिल्ल। हिन्दी–करेला। बंगला–करोला। गुजराती–करेला। मराठी–कघुकारली। तैलङ्गी–करिला। का०–हागल। उड़िया–कालरा। फारसी–कारेलाह। अंग्रेजी–हरो मोडिका।

करेली।

संस्कृत–कारवेल्ला। हिन्दी–करेली।

करेला का तासीर हल्का, दस्तावर, शीतल कड़वा, बादी रहित है। करेला कफ, रुधिर, ज्वर, पित्त, पांडुरोग, रुधिर विकार, कृमी रोग और प्रमेह को हरण करता है। करेली का गुण भी करेले के समान ही है।

करेले की बेल खेतों में वा छोटे २ पेड़ों तथा झमरों पर देखने में आती है। यह बेलि बहुत पतली पतली टहनियोंदार होती है जो अनेक साखाओं से अपने अगल बगल की जमीन को दो तीन हाथ के दायरे में घेरती है।

करेला दो तरह का होता है, एक को तो करेला और दूसरे को बन करेला बोलते हैं। करेला छोटा बड़ा सब प्रकार का होता है। बड़ा करेला ज्यादा से ज्यादा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

एक फुट लम्बा होता है। यह खाने में बड़ा कड़वा होता है। इसके ऊपर जो मोटा छिलका होता है उस पर दाना दाना निकला रहता है, भीतर गुद्दा के मध्य में बड़े बड़े बीज रहते हैं, करेला भाँजी वा साग बनाने के काम में आता है। इसका अचार भी खाने में बड़ा स्वादिष्ट होता है। जब करेला पक जाता है तो इसका भीतरी रंग लाल हो जाता है, और तब बीज भी लाल हो जाते हैं, कच्चे पर बीज का रंग सफेद होता है।

जिस रोगी को पित्त विकार हो उसे करेले की पत्तियों का रस पिलाने से वमन के साथ पित्त निकल जाता है। काश वमन न होवे तो किसी प्रकार की हानि भी नहीं होती, कुछ देर बाद दो चार दस्त होता है और दस्त के साथ २ पित्त का प्रकोप भी जाता रहता है।

सन्ध्या समय काली मिरच को करले के रस में घिस कर आँख में आते तो रतौंधी का रोग जाता रहता है।

बालक का पेट साफ करने की विधि—करेले की पत्तियों का एक पैसा भर रस निकाल लेवे फिर उस रस में थोड़ी सी हल्दी घिस कर पिला देवे। वमन द्वारा लड़के का पेट साफ हो जावेगा।

यदि कोई पारा खा गया हो तो उस आदमी को करेले की जड़ का रस पानी में घोट कर पिला देवे पारे का दोष जाता रहेगा। तिल का तेल और करेले का रस दोनों को बराबर बराबर मात्रा में लेकर पिलाने से हैजे के रोगी को लाभ पहुँचता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

करेले के पत्तों का रस निचोड़ कर पिलाने से पेट में पड़े कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

करेले के पत्तियों के रस में बड़ी हर्रें को घिस कर कामले के रोगी को पिलाने से कामला रोग जाता रहता है।

सिरके के रस में सूखे करेले को पीस कर आग पर थोड़ा गरमा कर कंठ की सूजन पर लगाने से सूजन जाती रहती है। हरे करेले का रस निकाल और उसे गरमा कर गठिया पर लगाने से गठिया का रोग दूर हो जाता है।

तापतिल्ली वाले रोगी को करेले के रस में नमक और राई भुरभुरा कर पिलाने से तापतिल्ली का रोग घटता है।

जिस प्रसूता स्त्री का रुधिर बिगड़ गया हो उसे करले के पत्तों को पानी के साथ आग पर औटा कर काढ़ा पिला देवे तो प्रसूता स्त्री का रुधिर साफ हो जाता है।

१६३–करौंदा।

संस्कृत–करमर्द, सुषेण, कृष्णपाकफल। बंगला–करमचा। मराठी–करवन्द। गुजराती–करमदा। लाटिन–कोरेसा कोरदास। इसकी एक और जाति इससे भी छोटी होती है जिसको कर्मदिका बोलते हैं।

करौंदा।

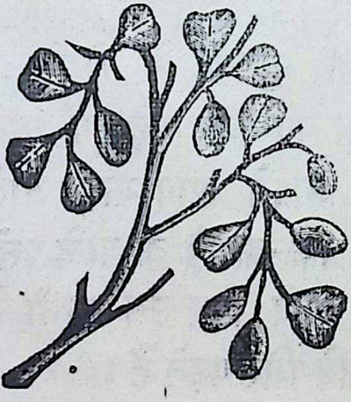

गुण और सकल सूरत में दोनों एक समान ही होते हैं। इसकी झाड़ी कटीली और छतनार होती है, टहनियाँ भी दो तीन या चार हाथ से अधिक बड़ी नहीं देखने में आतीं। यह छोटा रहने पर ही

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फूलने फलने लगता है और बराबर फूलता फलता रहता है। इसकी झाड़ी वा पेड़ में खूब फल आते हैं, यहाँ तक कि जब इसका फल बढ़ कर सफेद से लाल रङ्ग का हो जाता है तो दूर से देखने पर सारा पेड़ लाल हरा मिश्रित बहुत भला मालूम होता है। फूल सफेद रङ्ग के गुच्छेदार और सुगन्धित होते हैं।

गुण—करोंदे जब कच्चे रहते हैं तो खट्टे और भारी होते हैं, उनके खाने से पिपासा की शान्ति होती है, रक्त पित्त का हरण होता है, कफ आना बन्द हो जाता है। ये गरम और रुचिकर होते हैं।

जब करोंदा पक जाता है तो इसका गुण बदल जाता है यानी तब यह मीठा, हलका, रुचिकर और बादी समन करने वाला हो जाता है।

यदि किसी को सर्प काट खाये तो करोंदे की जड़ को पानी में औटा कर पिला देवे। सर्प का विष जाता रहेगा।

करोंदे की जड़ ला कर उसे पानी के साथ पीस डाले। फिर उसे तेल में पका कर जिस स्थान में खुजली होती हो वहाँ पर लेप करे तो खुजली के रोगी को आराम पहुँचता है। इसी तेल को कीड़े पड़े हुए घाव पर लेप करे तो घाव के कीड़े आपसे आप झड़ जाते हैं। इसकी दूसरी विधि यह है कि—करौंदे के ताजे पत्तों को पानी में डाल कर औटा लेवे फिर उस पानी से कीड़े पड़े घाव को धोवे तो कीड़े गिर पड़ते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

करौंदा के कच्चे फलों को पत्थर या सील पर पीस कर उसकी लुगदी में मूँगे को भर कर उपरे की दहकती आग में तोप देवे तो कुछ देर के पश्चात् मूँगे भस्म हो जायँगे ।

करोंदे की जड़ को पीस कर उसकी फंकी लगाने से पेट का दर्द वा सूल नष्ट हो जाता है।

उपरोक्त विधि से करोंदे को पीस कर उसकी लुगदी में चाँदी की बारीक २ पत्तलें भरकर (सराब में डुबो कर) सराब संपुट कर उसमें क्रमशः ११ बार अग्नि देने से चाँदी भस्म हो जाती है ।

करोंदे की जड़ का काढ़ा तय्यार कर वदन पर लेप करने से विषम ज्वर उतर जाता है ।

करोंदे के पत्तों का रस निकाल कर उसमें अन्दाज से शहद मिला कर चाटे तो सूखी खाँसी जाती रहे ।

यदि शरीर का रक्त सूखा जाता हो, पित्त विकार हो गया हो वा लू लग गई हो तो पके करोंदे का शर्बत पिलावे, उपरोक्त बीमारियाँ जाती रहेंगी ।

करौंदे का शर्बत पहले दिन एक तोला दूसरे दिन दो तोला इस तरह प्रति दिन एक २ तोला अधिक बढ़ाता जावे, फिर दशवें दिन दस तोला पिलावे । इस क्रम से दवा करने से जलंधर का रोग दूर हो जाता है।

करोंदे को पेड़ से तोड़ लावे और उसमें हरा मरचा मिलाकर अचार बना लेवे। यह अचार बड़ा रुचिकर होगा

१६४ कालादाना ।

संस्कृत-कृष्ण बीज । हिन्दी-कालादाना । बंगला-नील कलमी ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मराठी—कालेदाने। अंग्रेजी—इन्डुजनील। इंगलिश०—पेअन्ड्यू इपोमिया। लाटिन—फारवाटिसनील।

हिन्दुस्तान के उत्तरी खण्ड की तरफ एक प्रकार की बेलि होती है जिसके बीज को कालादाना कहते हैं। इसकी खुराक छोटे बड़े के अनुपात से एक माशे से चार माशे तक की होती है। यह खास कर जुलाब देने के काम आती है। इसके सेवन से पेट में पड़े कीड़े भी नष्ट हो जाते हैं। यदि इसका सत जुलाब के काम में लाना हो तो उसकी मात्रा पाँच से दस ग्रेन तक की होती है

(१) काले दाने को बादाम के तेल में भून कर खाने से तिल्ली और जिगर के सूजन को आराम पहुँचता है।

(२) कालेदाने को कड़वा तेल में जलाकर लगावे तो पुराने घाव, खुजली और गठिया की बीमारी अच्छी होती हैं।

(३) कालेदाने को अकरकरा के साथ पीसकर कोढ़ पर लेप करने से कोढ़ नष्ट हो जाता।

१६५ गाजर।

संस्कृत-पिंगमूल, सुमूलक, पीतक, स्वादुमूलक, नारंग, सुपीत और पीतमूलक। हिन्दी-गाजर। मराठी-गाजर। बंगला-गाजर। अं०-जजरा फारसी-जर्दक। अंग्रेजी-कैरेटरूट। लाटिन-डांकस केरोटा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गाजर ।

गुण—गाजर खाने में मधुर, थोड़ा चरपरा, रुचिकारी, कफ नाशक, कृमि, अफरा, दाह, शूल तृषा और पित्त नाशक होता है।

गाजर बड़ा पुष्टकारक होता है, इसे पशुवों को खिलाया जाता है। जिससे गाय भैंस का दूध काफी बढ़ता है और बैलों को खिलाने से पुष्ट होते हैं। यह हड्डी को खूब पुष्ट करता है।

यदि देह में किसी स्थान पर रुधिर जम गया हो तो गाजर की हरी २ पत्तियों को औंटाकर जमे रुधिर वाले जगह पर तरेड़ा देने से वहाँ का रुधिर पिघल जाता है। जलन्धर के रोगी तथा पसली में दर्द वाले रोगी को कच्चा गाजर खिलाने से दोनों विकार नष्ट हो जाते हैं। इसके हरे पत्ते खाने वालों की मैथुन शक्ति बढ़ती है।

गाजर को शहद में औंटाकर खाने से मनुष्यों को नशा आ जाता है। सिरके में डालकर इसका अचार खाया जाता है। यह अचार बड़ा स्वादिष्ट और फायदे मन्द होता है। इसके सेवन से तिल्ली वाले रोगियों की तिल्ली नष्ट होती है।

पिंडली में ऐठन होवे तो गाजर को भून लेवे और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उसमें थोड़ी शक्कर मिला कर खिलावे तो पिंडली की ऐंठन जाती रहे।

जिसे दस्त साफ न होता हो उसे करोंदे की जड़ पानी में घिसकर पिलाने से दस्त साफ आने लगता है और कृमिरोग भी जाता रहता है।

१६६–तालीसपत्र।

संस्कृत–तालीस, धात्रीपत्र और पत्राढ्य। हिन्दी–तालीसपत्र। बंगला–तांवट। द्राविण–पनिअल। फारसी–जरनब। अरबी–तालीशफर। इं०–टेकसमवेकटा। ला०–टाक्सस बेकटा।

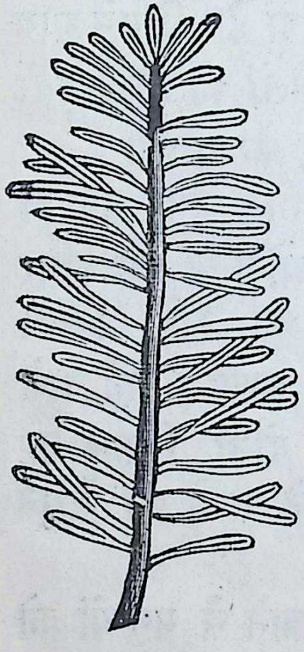

तालीसपत्र की उपज हिमालय पर्वत पर होती है: इसके छोटे २ लम्बे पत्ते होते हैं जो भुयआँवले वा तम्बाखू के समान होते हैं।

गुण–तीक्ष्ण, लघु, उष्ण, कफनाशक तथा वायुनाशक होता है। यह वायुगोला के दर्द को समन करता, रुचिवर्धक, आमनाशक, तथा क्षयरोग और मंदाग्नि को हरण कर्ता है।

(१) तालीसपत्र को इलायची के साथ मिलाकर सेवन करने से अधिक दस्त का होना बंद हो जाता है।

(२) इसे धनियाँ के साथ खाने से खाँसी, हिचकी का आना और स्वाँस फूलना बन्द होकर बोली साफ निकलने लगती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(३) तालीसपत्र को इलायची, कबाबा, दालचीनी और तज के साथ मिलाकर खाने से बालक सानंद उत्पन्न हो जाता है। यह दवा विषनिवारण के लिये भी दी जाती है।

तालीशपत्र का चूर्ण बड़ा उपयोगी होता है, इसका उपयोग स्वाँस, खाँसी और अजीर्ण रोग पर होता है। इसके बनाने की विधि यह है कि तालीस पत्र और इलायची एक एक तोला, सोंठ तज और काली मिरच दो दो तोला, बंशलोचन और पीपल चार-चार तोला, शक्कर सोलह तोला। इन सब चीजों को एक में मिला कर चूर्ण बना लेवे। चूर्ण खूब बारीक होना चाहिये। सेवन विधि—इस चूर्ण को २० ग्रेन से लेकर ४० ग्रेन तक, घी वा मक्खन के साथ खावे।

१६७—दालचीनी।

संस्कृत—स्वादुत्वक्, दारुसिता। हिन्दी—दालचीनी। बंगला—दारुचीनी। तामिली—कारुवाकरु उपट्टाई। तैलगू—डारचीनी। अरबी—सलीखा। ब्र०—मिटख्यावो, लुसाई थवाक, थ्विन। अंग्रेजी—सीनामम।

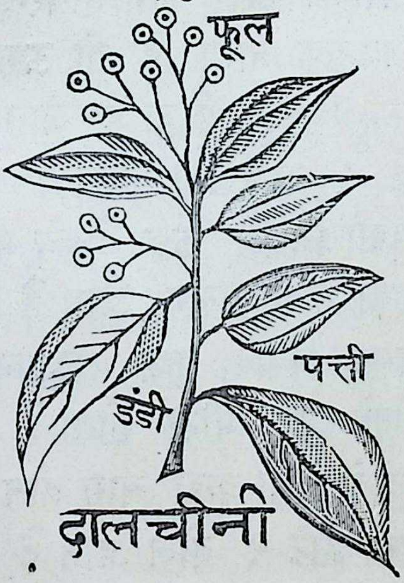

दालचीनी का वृक्ष बहुत बड़ा होता है। इसकी छाल काम में लाई जाती है। इसका पेड़ अधिकतर मलेवार चीन और लंका के शहरों में उत्पन्न होता है। इसकी सूखी पत्तियों की खुशबू लौंग की सी होती है। फूल भी सुगन्धित और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सफेद रंग के होते हैं। छोटे २ फल लगते हैं जो कि दवा के काम में आते हैं। इससे आम दोष, वादी, स्त्रियों का मासिक धर्म बन्द होना, पागलपन आदि रोग दूर होते हैं।

गुण—दालचीनी, सुगंधित, कड़वी और मीठी होती है। यह शरीर के रक्त को साफ कर शुक्र को बढ़ाती है। बात, पित्त, तृषा और मुख शोथ इन रोगों पर इसका प्रयोग करने से लाभ होता है।

इसकी मात्रा छ माशे की होती है। प्रतिनिधि कुलीजन, तालीसपत्र, सुगंधबाला और तज है, दर्प नाशक मिश्री और खाँड़ है।

१६८—नाशपाती।

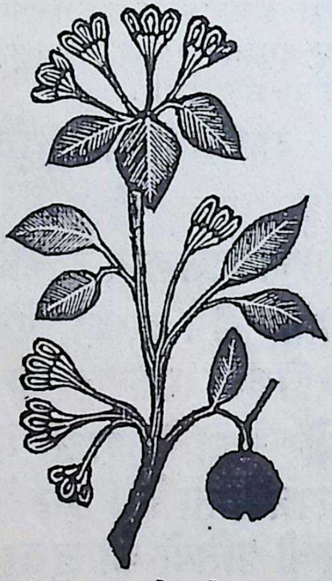

नाशपाती का कच्चा फल ऊपर से हरा रहता है परन्तु जब पक जाता है तो ऊपर का छिलका पीला हो जाता है। नाशपाती का पका हुआ निरोग फल देखने में बड़ा भला मालूम होता है। इसका स्वाद कुछ खट्टापन लिये हुए मीठा होता है। भीतर बीचो बीच एक रीढ़ के जैसा कड़ा भाग होता है, इसीके अन्दर दो चार छोटे २ बीज होते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नाशपाती को खाते समय उसके कड़े भाग और छिलके को छील कर अलग कर देना चाहिये।

इसकी उपज हिन्दुस्तान में नहीं होती। यह खुरासान और काबुल से आती है। हिन्दुस्तान के उत्तरी भाग में थोड़ा बहुत पैदा भी होती है तो वह वैसी अच्छी नहीं होती।

गुण—यह त्रिदोष को हरण करती है, हल्की, वीर्य वर्धक और अरुचि नाशक होती है।

इसका मुरब्बा बनाया जाता है जो धोखे से सेव के मुरब्बे की जगह बेंच दिया जाता है।

(१) नाशपाती का शर्बत निकाल कर उसमें अतीस मिलाकर चाटने से रक्तातिसार नष्ट होता है।

(२) नाशपाती के रस में पीपल पीसकर मिला देवे और फिर उस रस को पीवे तो पित्त के विकार से उत्पन्न हुई मंदाग्नि दूर होवे।

(३) बेर के मींगी को नाशपाती के रसमें बुरक कर पीने से रक्त बमन होना बन्द हो जाता है।

(४) नाशपाती के रस में काली मिरच सेंधा नमक और भुजा हुआ जीरा पीसकर मिला लेवे और फिर उस शर्बत को पीवे तो अरुचि जाती रहे।

(५) पित्त के प्रकोप से उत्पन्न हुए शिर दर्द को दूर करने के लिये वैद्यको चाहिये कि नाशपाती के रस में खाँड़ मिलाकर पिलावें तो शिर दर्द जाता रहेगा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१६६–निसोथ।

संस्कृत–श्वेतत्रिवृत, त्रिभंडी, त्रिपुटा, त्रिवृत्ता, सर्वानुभूति, निशोत्रा, सरला, रेचना। हिन्दी–निसोथ, श्वेतपनिलर। बंगला–श्वेततेउडी। मराठी–निसोतर। दे०–तेड। का०–तिगडे, तियड। गुजराती–नसोतर। तैलगू–तेलातेगड़ा। तामिली–फिवदई। फारसी–तुर्बुद। अंगरेजी–टरवीथरूट। लाटिन–आइपोम्पाटरपोथम।

निसोथ की दो जातियाँ होती हैं। एक काली दूसरी सफेद। केवल सफेद ही को दवा के प्रयोग में लिया जाता है काली का प्रयोग नहीं होता, इसका खास कारण यह है कि काली निसोथ रेचक और अति तीव्र होती है।

इसके बेलि की पतली २ डंठियाँ होती हैं, परन्तु पत्ते मोटे होते हैं। इसका फूल बेलि के लिहाज से बड़ा और सफेद रंग का घंटाकार होता है, इसका कोई कोई फूल तो डेढ़ इंच तक लंबा पाया जाता है। डंठी शाखादार होती है। एक ही जगह से तीन शाखाएँ निकलती हैं। फल सुपारी के शकल का होता है, जिसके अन्दर से चार काले बीज निकलते हैं। फल पकने पर खिल जाता है और बीज बाहर से दिखलाई पड़ने लगते हैं।

काली निसोथ के फूल भंटई रंग के होते हैं। डंठल में तीन रेखाएँ बनी रहती हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—रेचक, गरम, रुक्ष, वात नाशक और स्वादु होती है। इसकी मात्रा अवस्थानुसार दो माशे से लगायत साढ़े चार माशे तक की होती है।

(१) ४ ड्रम निसोथ, एक ड्रम सोंठ, एक ड्रम संचल नमक इन तीनों का चूर्ण बना कर विविध रोगों पर जुलाब के रूप में दिया जाता है। मात्रा बीस से साठ ग्रेन तक की होती है।

(२) निसोथ, दालचीनी, अकरकरा और साँभर नमक, इन दवाओं को एक में मिला कर खूब बारीक पीस लेवे फिर इस चूर्ण को महुवे के तेल में मिलाकर मालिश करे तो अर्धाङ्ग रोग जाता रहे।

(३) निशोथ कफ को पाखाने के साथ निकालती है। सीने की दर्द और पट्ठों के रोग पर फायदा पहुँचाती है। इसकी एक खुराक अवस्था तथा रोग के लिहाज से बीस से लेकर साठ ग्रेन तक की होती है। मात्रा का विचार चिकित्सक महोदय को करना चाहिये।

१७०—पुन्नाग।

सं०—पुन्नाग। हिं०—पुन्नाग, तथा गुजराती और बंगला में भी इसे पुन्नाग ही बोलते हैं। लाटिन में श्रोफ्रोकार्पस लोंजी फोलियम, [illegible]ोफाइलम, इनफो फाइलम। अँगरेजी—एलेग्जेंड्रियन लारेल पुकारते हैं।

इस वृक्ष की उपज अधिकतर कोकण देश में होती है। इसके पत्ते चौड़ाई लिये हुए सुरपुन्नाग के पत्तों से मिलते जुलते होते हैं। फूल का रंग पीला होता है जिससे; मधुर २ सुगन्धि निकलती रहती है। फल बड़ी सुपाड़ीके फलों के समान होते हैं, इन फलों पर भी सुपाड़ी के फलों की तरह छिलका रहता है परन्तु इसके छिलके

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

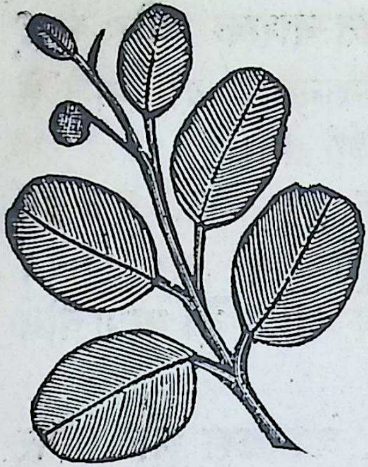

कड़े होते हैं । इसका तेल जलाने के काम में आता है।

पुन्नाग से जो गोंद निकलता है वह देखने में राल के समान होता है। लकड़ी मकान बनाने के काममें लाई जाती है।

गुण—रक्तदोष नाशक,शीतल मधुर, सुगंधित होता है । इससे प्रेत बाधा भी छूटती है ।

(१) जब आँख दुखनी हो जावे तो पुन्नाग के गोंद को पानी में मिला देवे, जिससे पानी के तहपर तैल तैरने लगेगा । उसी तैल को ऊपर से काढ़ कर आँख पर लगावे तो आँख की दुखनी अच्छी होवे ।

(२)पुन्नाग की छालको घिसकर फोड़े पर लगावे तो फोड़े अच्छे होवें । इसके मींगी का तेल लगाने से भी यही लाभ होता है ।

(३) इसके बीजकी छाल को कूटकर गरमा लेवे फिर उसे गरम २ अंडकोश पर लगावे तो बढ़ा हुआ अंड पचक कर पूर्ववत हो जाता है ।

(४) खाज यानी खुजली का रोग दूर करने के लिये पुन्नाग का तेल रामबाण है। इसके तेल को खुजली के स्थानों पर लगा देने से क्रमशः खाज जाती रहती है।

(५) पुन्नाग के पत्तों को भलीभाँति पानी में भिगों कर सूजी हुई आँख पर बाँधने से आँख की सूजन घट जाती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(६) शरीर में कहीं से रुधिर स्राव होता हो तो पुन्नाग के छाल की फंकी देवे तो तत्काल रुधिर स्राव बन्द हो जायगा ।

कवची यंत्र ।

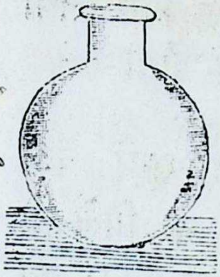

कुप्पी के आकार की एक काँच की शीशी लेकर कपड़े पर चिकनी मिट्टी का लेपकर या कपड़े को मिट्टी में सानकर तह लगा डालें और फिर उस तह को सुखा लेवें । इसी क्रम से कई तह लगाते जावें जब उसका नम्बर ३ तीन वा सात की गिनती में पहुँच जाय तो तह लगाना बन्द कर देवें । शीशी के ऊपर इस तह क लगाने से यह लाभ होता है कि आँचपर चढ़ाने से शीशी के टूटने फूटने का भय नहीं रहता ।

जब इस प्रकार शीशी तय्यार हो जावे तो उसमें औषधि भरकर बालुका यंत्र वा किसी अन्य यंत्र में बैठा देवें । बस इसी मिट्टी सने कपड़े की तह चढ़ी शीशी को कवची यंत्र बोलते हैं । इसका रस बड़े काम का होता है । इसका जारण मारण आदि सभी कामों में प्रयोग करते हैं ।

लवण यंत्र ।

एक शीशी जिसको आतिशी कहते हैं बाजार से खरीद कर उसपर करीब एक अंगुल मोटा कपड़मिट्टी करे और फिर उसे धूप में भलीभाँति सुखाकर इस शीशी को एक बड़े

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बर्तन के मध्य में रख उसके चारो तरफ नमक भर देवे, फिर बालुका यंत्र की तरह आँच देना शुरू करे क्रमशः रस तैयार हो जायगा। इसी यंत्र को लवण यंत्र के नाम से पुकारते हैं। इससे रस बनाने का काम लिया जाता है जो बहुत से रोगों पर गुणकारी होता है।

दौला यंत्र।

देख कर एक मिट्टी का घड़ा बड़ी गर्दन का खरीद लावे वा न मिले तो आर्डर देकर किसी कुहार से बनवा लेवे और उस घड़े को स्वच्छ जल से आधा भर दे फिर औषधि को पारे में मिला कर उसके ऊपर भोजपत्र का तीन तह कस कर लपेट देवै और उस पोटली के ऊपर कच्चा डोरा लपेट कर बाँध दे ताकि भोजपत्र की तह खुल न सकें। तब ऊपर से तीन तह वाला कपड़ा लपेट कर पोटली बना डाले। इस पोटली को ठर्रे के एक सिरे से बाँधकर उसके दूसरे सिरे में एक इतनी बड़ी मजबूत लकड़ी बाँध देवै की वह घड़े के मुँहपर दोनों तरफ कुछ बढ़ी रहे यानी लकड़ी घड़े के भीतर न जा सके। फिर पोटली को इस रीति से लटका देवै कि वह पानी में अच्छी तरह डूबी रहे परन्तु घड़े की पेंदी न छू सके। बस मिट्टी के घड़े को एक बड़े चूल्हे पर चढ़ा कर नीचे से आँच देना प्रारम्भ करे। चूँकि पोटली उपरोक्त यंत्र में झूलती रहती है इसी कारण इसका नाम दौला यंत्र पड़ा है। इसका एक और नाम है जिसको स्वेदन यंत्र कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बालुका यंत्र।

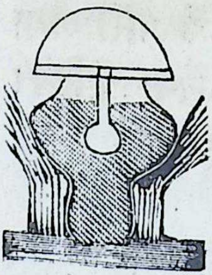

एक मिट्टी के मोटे नाँद में बालू भर कर उसमें दवा भरी शीशी का मुख बंद कर इस प्रकार गाड़ दे ताकि उसकी गर्दन रेत के बाहर निकली रहे; तब उस नाँद को चूल्हे पर चढ़ा कर नीचे से आँच देकर रस तैयार करे। बस इसीको बालुका यंत्र कहते हैं।

विद्याधर यंत्र।

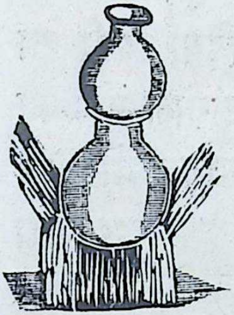

एक हाँड़ी में ग्वारपाठा के रस में घोंटे हुए पारा को छोड़ देवे फिर उस हाँड़ी के ऊपर एक दूसरी हाँड़ी लेकर इस सफाई से रक्खे कि कहीं से छिद्र न रहे बल्कि सन्धि के स्थान पर कपड़ मिट्टी करके दो तीन तह चढ़ा देवे। जब यंत्र तैयार हो जावे तो पारेवाली हाँड़ी को आग जला कर चूल्हे पर चढ़ा देवे। ध्यान रहे कि ऊपर वाली हाँड़ी में बराबर पानी भरा रहे। समय समय पर देखता जावे कि ऊपर की हाँड़ी का पानी ज्यादा गरम तो नहीं हो गया, यदि पानी गरम हो गया हो तो उसे कल्छुल आदि किसी बर्तन से निकाल कर बाहर फेंक देवे और हाँड़ी में फिर दूसरा ठंढा पानी भर दे। अभिप्राय यह कि ऊपर वाली हाँड़ी गरमाने न पावे। इस क्रम से पाँच पहर तक आँच देकर फिर आँच देना बन्द कर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दे । जब आग बुझ कर शीतल हो जाय तो चूल्हे से उतार लेवे । ऊपर की हाँड़ी की पेंदी में पारा लगा मिलेगा । उस पारे को होशियारी से काढ़ लेना चाहिये। यही यन्त्र विद्याधर यन्त्र के नाम से विख्यात है ।

गर्भ यन्त्र ।

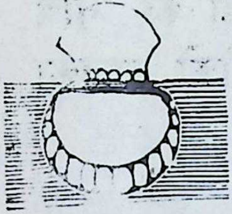

यह गर्भ यन्त्र का दूसरा प्रकार है । इस यन्त्र का एक प्रकार और होता है परन्तु इसको सरल और साध्य समझ कर इसे ही बर्णन करता हूँ । इस यन्त्र से पारे की पिष्टि भस्म की जाती है। खड़िया मिट्टी का एक चार अंगुल का लम्बा चौड़ा मजबूत गोल मुख का मूष बना कर उस मूस के ऊपर एक भाग गूगल और २० भाग नमक पीस कर लेप करे फिर मूष के अन्दर पारा रख कर मूष का मुख बन्द कर देवे । तब जमीन के अन्दर एक गड्ढा खोद कर कंडे की आग में मूष को रख देवै । इस तरह पारा आसानी से भस्म हो जावेगा ।

गौरी यन्त्र ।

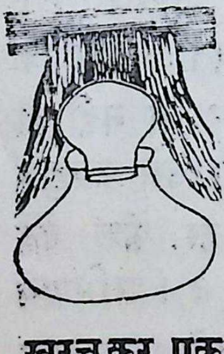

एक अच्छी सुडौल ईंट लगभग आठ अंगुल लम्बी हो तथा उसी के अनुपात से चौड़ाई और उँचाई की तय्यार करा लेवे फिर ईंट को लेकर उसके मध्य में एक गड्ढा बनावे और उस गड्ढे को काँच से खुरच कर एकदम यानी अच्छी तरह साफ कर लेवे फिर चूना पोत दे तत्पश्चात् सोने चाँदी वा अभ्रक के सत्त

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

में घोंटा हुआ पारा उस ईंट के बनाये हुए गड्ढे में भर कर उसके नीचे गन्धक बिछा देवे । तब गढ़े के ऊपर खपड़ा रख कर उसका मुख कपड़मिट्टी से बन्द कर उसमें आरने 'ऊपलों की अग्नि देवे । लो गौरी यन्त्र तय्यार हो गया । इसी यन्त्र का नाम लोगों के मुख से सुन कर आपको आश्चर्य होता रहा होगा ।

ऊर्ध्वनालिका यन्त्र ।

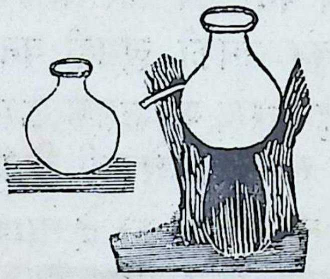

एक अच्छा सा सुदृढ़ घड़ा लेकर उसके मुख से नाप कर आठ अंगुल नीचे एक छेद बना ले और उस छेद में बाँस की एक पोली नली लगा कर नली का दूसरा सिरा उसके पास में रक्खे हुए एक दूसरे बर्तन में रख देवे । पहले वाले घड़े के छेद पर जिसमें बाँस की नली लगाई है; अगल बगल से मिट्टी लेह दे ताकि कोई सन्धि न रहने पावे । बस अर्क खींचने का खासा यन्त्र तय्यार हो गया । जिस चीज का अर्क खींचना हो उस चीज को घड़े में भर कर ऊपर से घड़े में पानी भर देवे फिर उस घड़े का मुख भलीभाँति बन्द करके घड़े के नीचे आग लगाना शुरू करै अग्नि की गर्मी से पहले घड़े का जल बाँस की लगी नली से दूसरे घड़े में भाफ द्वारा जायगा, यही जल उस चीज का अर्क होगा । इस अर्क के ऊपर तेल की तरह कुछ चीज तैरती रहती है, इसको सावधानी से ऊपर से काछ कर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

किसी दूसरे पात्र में रख छोड़ो। बस यही अंतर है। इस प्रकार अर्क दो तीन बार खींचा जाता है परन्तु पहिली बार के अर्क के समान दूसरी वा तीसरी बार का अर्क नहीं होता। क्रमसः अव्वल, दोयम और तेयम दर्जे का हो जाता है। इस यन्त्र को कुछ लोग भबका भी कहते हैं।

संखिया का फूल उड़ाना।

एक ईंट जो कि बहुत बड़ी और मोटी हो लेकर उसके बीच में एक गोल गड्ढा बना लेवे फिर संखिया को ग्वारपाठे के रस में घोंट कर उसकी लुगदी बना ले। इस लुगदी को ईंट के गढ़े में रख कर उसके ऊपर से ताँबे की एक कटोरी औंधी रख कर चिकनी मिट्टी और कपड़े के योग से उसकी सन्धि बन्द कर दे ताकि धुवाँ बाहर निकने न पावे। इसके धुवें से आँख को हर समय सावधानी से बचाता रहे। ऊपर बतलाई ईंट को चूल्हे पर रख कर नीचे से आग जला दे। औंधी हुई कटोरी के ऊपर भाँगरे वा मूली के पत्तों के रस में कपड़ा भिंगो कर फेरता रहे ताकि कटोरी गरमाने न पावे। इस तरह कुछ देर के बाद संखिया का फूल उड़ कर कटोरी में आ लगेगा। इस फूल को कटोरी से निकाल कर दवा के काम में लावे। यह फूल तिजारी वाले रोगी के लिये बड़ा गुणकारी होता है। तिजारी आने से पहले आधी रत्ती पान में धर कर सेवन करने से बुखार नहीं आता।

मृगांक का प्याला बनाना।

सिंगरफ, मैनसिल, हरताल, आमलासार गन्धक, नौसादर और पारा इनमें हर एक चीजों को बराबर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बराबर लेकर पहले गन्धक और पारा को खरल में रख कर धीरे धीरे भली प्रकार रगड़ लेवे जब उसमें कजली बन जाय तो उस कजली में उपरोक्त वस्तुओं को एक एक कर के डालता और घोंटता जावे जब सब घुट कर एक दिल हो जावें तो एक आतिशी शीशी पर तीन चार तह कपड़मिट्टी चढ़ा कर सुखा लेवे। पश्चात् इन्हें बालुका यंत्र में रख अग्नि पर चढ़ाकर दो प्रहर तक खूब आँच देता जाय। जब धुवाँ का निकलना एकदम बन्द हो जाय तो शीशी को आँच से उतार कर अलग रख दे और एकदम ठंढी हो जाने पर दवा को शीशी से बाहर निकाल लेवे। अब आपकी जितना बड़ा प्याला बनाने की मंशा हो उतनी चाँदी लेकर उसमें चाँदी का चतुर्थांश दवा मिला लीजिये और फिर इन सबको आग पर चढ़ाकर पिघलावैं। जब अच्छी तरह पिघल जाय तो साँचे में ढाल कर प्याला बना लें। बस प्याला तय्यार हो गया। इस प्याले में प्रतिदिन दूध में मिश्री मिलाकर पीने से पुरुसत्व और बलकी वृद्धि होती है। यहाँ तक देखने में आया है कि वृद्ध आदमी भी जवान का सा आचरण करने लगता है।

कनेर का घृत।

बीस सेर सच्चा दूध में आध सेर सफेद फूल वाली कनेर की जड़ भलीभाँति कूटकर मिला देवै और चूल्हे में अग्नि जलाके औटाना शुरू करे। जब दूध भली भाँति औंट जाय और कनेर की जड़ का सत्त उसमें उतर जाय तो दूध को छानकर जमा देवै। दही तय्यार

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

होने पर उसे मथानी से मथकर उसमें से घी निकाल लेवे, यही कनेर का घृत है।

सेवन विधि।

इसमें से सींक भर घी निकाल कर पान में लगाकर लगातार २१ दिनों तक सेवन करे तो स्त्री-प्रसंग में अनिच्छा, स्वाँस, खाँसी, निर्बलता, रग पट्ठों की शिथिलता आदि का विकार जाता रहे। इस घी के सेवन करने से अफीम खाने की आदत भी छूट जाती है। ध्यान रहे कि इस दवा का सेवन करते समय घी, दूध आदि पुष्ट पदार्थों का सेवन करना अति आवश्यक है, पथ्य बिगड़ने न पावे।

एकाहिकादि ज्वर की दवा।

इक अतरा, दुतरा, तिजारी, चौथिया, संतत ज्वर, धातु गतज्वर, द्वन्द्वज वा त्रिदोषज चाहे कैसा ही ज्वर क्यों न हो उपरोक्त चूर्ण के सेवन करने से अवश्य लाभ होगा।

त्रिफला और त्रिकुटा ६, ६ माशे, नीम कोंपल डेढ़ तोले, अजवायन नौ माशे, तीनों नमक ६, ६ माशे, जवाखार ६ माशे। इन सबको एक में मिलाकर चूर्ण तय्यार कर लेवे और सबेरे शौचादि से निवृत्त हो ३ माशे, नित्य सेवन करे तो उपरोक्त बीमारियाँ जाती रहें।

प्रदर की दवा।

मनासिल और शीशा इन दोनों चीजों को आग पर चढ़ा देवै और उसमें अडूस का रस रह २ कर छोड़ता जावे, अडूसे की लकड़ी से घोंटता भी रहे पश्चात् गज-पुट में रख कर फूँकना चाहिये। इस प्रकार तय्यार हुए इस भस्म के सेवन से प्रमेह का रोग नष्ट होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बिरोजे का तेल निकालना।

जिस औसत में बिरोजे का तेल निकालने का विचार हो उतनाही बिरोजा लेकर आग पर कराही चढ़ा कर उसमें छोड़ देवे। जब बिरोजा कराही में आँच से अच्छी तरह पिघल जाय तो उसमें ईंट के नन्हें२ टुकड़ों को छोड़ देवे। ये टुकड़े बिरोजे को सोखलेंगे। फिर इन्हीं ईंट के टुकड़ों को हाँड़ी में भरकर ऊपर से दूसरी हाँड़ी औंधा कर भली भाँति कपड़ मिट्टी कर दे ताकि सन्धि न रहने पावे। तब इस हाँड़ी को चूल्हे पर चढ़ा दे परन्तु ध्यान रहे की हाँड़ी तिरछी रहे ताकी ऊपर वाली हाँड़ी टेढ़ी रहे। फिर ऊपर वाली टेढ़ी हाँड़ी में एक छेद करके उसमें बाँस की एक नली लगादे और नली के नीचे एक चीनी का प्याला रखदे। इस प्रकार सब चीज तय्यार कर चूल्हे में आग लगा देवे। आग की गरमी से नीचे वाली हाँड़ी से तेल उड़२ कर ऊपर वाली हाँड़ी में जायगा और नली द्वारा टपक २ कर प्याले में गिरेगा। ऊपर वाली हाँड़ी पर पानी का पोंचारा देता जाय। यह तेल-सुजाक के रोगियों के लिये बड़ा उपयुक्त होता है। इसका दो तीन बूँद बताशे वा पानी में मिलाकर सेवन करना चाहिये।

खूनी बवासीर की दवा।

साम को ईसब गोल को पानी में भिगो दे और सबेरे उठकर हाथ से मसल कर छान ले फिर उसमें अन्दाज से थोड़ी सी खाँड़ मिला कर खूनी बवासीर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वाले रोगी को पिलावे। इस दवा के सेवन करने से चाहे कैसा ही खून जाता हो रुक जायगा, दाह और ज्वर भी घट जायगा वा पिसे हुए नागकेसर में मिश्री और नौनी घी मिलाकर सेवन करे तो रुधिर आना बंद होवे।

भस्मक रोग की दवा।

ओंगा के बीज का छिलका उतार दूध में डालकर खीर पकाले और फिर खीरको खावे तो भस्मक रोग दूर हो।

ज्वर नाशक दवा।

तिजारी, चौथिया और इकतरा आने वाले रोगी को पारी वाले दिन ज्वर आने से पहलेही अगस्त के पत्तों का रस सुँघा दें, ज्वर निश्चयपूर्वक छोड़ भागेगा।

तिमिरादि रोग की दवा।

सेंधानमक, कसीस, हीरा, मनसिल, शंख, सोंठ, पीपल, काली मिरच और रसौत इन दवावों को खूब बारीक पीस कर शहद के साथ गोली बना ले फिर जरूरत पड़ने पर आँख में गोली को आँजे तो फूली काँच और तिमिर रोग नष्ट हो।

चन्द्रोदय सेवन का नियम।

चन्द्रोदय और लौंग समान भाग लेकर खल में कूट डाले जब खूब घुट जाय तो एक २ रत्ती की पुड़िया बना ले। जब किसी रोगी को देने की आवश्यकता हो तो इसकी एक पुड़िया देवे। इसके सेवन करने से तृषा, वमन, कब्जियत, अजीर्ण, हिचकी, मूर्च्छा और मूत्रस्राव का रोग दूर होता है। क्षुधा और काम शक्ति की वृद्धि होती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चन्द्रोदय, भीमसेनी कपूर, जायफल, काली मिरच और लौंग इन सबको एक २ रत्ती और कस्तूरी तीन चावल भर इन सबको एक में पीसकर एक शीशी में रख लेवे और नित्य दो रत्ती पान में लगा कर बराबर महीने भर सेवन करे तो बालकी सफेदी, अजीर्ण और बुढ़ापे वश देह में उत्पन्न हुआ सलबट तथा दूषित पानी से उत्पन्न हुए रोग नष्ट होते हैं और भूख बढ़ती है।

रस कपूर।

शोधा हुआ पारा, सफेद खाड़िया पुराने ईंट का चूरा, सफेद बिना भुनी फिटकरी, गेरू, बिल की मिट्टी, कुँम्हार के बर्तन रँगने की मिट्टी और खारी नमक इन सब दवावों को अलग २ दो दो पैसे भर खरीद लाकर हर एक को अलग २ पीस और कपड़ छान करके रख छोड़ें। पश्चात् हर दवावों के साथ अलग २ से पारे को दो दो पहर तक घोंटे। जब इस प्रकार दवा तय्यार हो जाय तो सबको डमरू यंत्र में भर कर चार पाँच पर्त कपड़ मिट्टी का चढ़ाकर घाम में तीन दिन सुखावे। सूख जाने पर यंत्रको चूल्हे पर चढ़ाकर ३२ पहर पर्यंत आँच देता रहे। जब आग अपने आप बुझ जाय तो यंत्र को चूल्हे से उतार ले। ऊपर की हाड़ी में सफेद रंग का पारा जमा रहेगा। यही रसकपूर है।

रसकपूर सेवन का नियम।

कस्तूरी २ रत्ती, लौंग २ माशे, सफेद चन्दन २ माशे, केसर ४ रत्ती और आधी रत्ती रसकपूर इनको

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

खरल में घोटकर पान के रस में एक चने बराबर गोली बना ले, बस इन्हीं गोलियों में से एक एक गोली नित्य सेवन करे तो अग्नि बढ़े, शरीर पुष्ट हो, पुरुषत्व की वृद्धि होवै और बिगड़ा हुआ उपदंश जाता रहे।

रस सिंदूर की क्रिया।

शुद्ध किये हुए पारे में उससे दुगनी शोधी हुई गंधक मिलाकर इनको खल में छोड़ कर कजली करे। पश्चात आतिशी शीशी में रखकर सात पर्त कपड़ मिट्टी करके घाम में सूखने दे। जब सूख जाय तो शीशी को बालुका यंत्र में रखकर यंत्र के मुख को ईंट से ढाक दे। फिर आँच देना प्रारम्भ करे, बराबर २८ पहर तक आँच देता जाय। पारा ऊपर आ जायगा। आग बुझने पर उतार कर शीशी फोड़ डाले, और उसके भीतरकी लाल चकत्तीको निकाल ले। बसयही रससिंदूरहै।

रससिंदूर सेवनविधि।

दो रत्ती रससिंदूर को दूध और मिश्री के साथ नित्य सेवन करे तो स्वाँस, नपुंसकत्त्व, खाँसी, प्रमेह, और वीर्य्यक्षीणता ऐसे कठिन रोगों का नाश होकर शरीर पुष्ट हो जावै। इसका दूसरा नाम हरगौरी रस है। इसके सेवन करने वाले के समस्त रोग दूर हो जाते हैं।

❀ इति शुभम् ❀

श्री विश्वेश्वर प्रेस, काशी में मुद्रित।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)